निःशुल्क वितरण हेतु

बाँसुरी

कक्षा 4 के लिए कला की पाठ्यपुस्तक

सत्र 2026-27

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

यह पाठ्यपुस्तक शासकीय सम्पत्ति है। इसका क्रय-विक्रय अवैधानिक है।

प्रकाशन वर्ष - 2026

छत्तीसगढ़ शासन, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली
के सौजन्य से छत्तीसगढ़ राज्य के द्वारा अनुकूलित

आवरण पृष्ठ, चित्रांकन एवं ले आउट डिजाइनिंग
रेखराज चौरागड़े, हिमांशु वर्मा

प्रकाशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक
छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर (छ.ग.)

मुद्रणालय

मुद्रित पुस्तकों की संख्या - ____________________

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नए पाठ्यक्रम के आलोक में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यपुस्तकों में छत्तीसगढ़ की संस्कृति एवं संदर्भों को जोड़कर उन्हें राज्य के परिप्रेक्ष्य में अनुकूलित किया गया है।

यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धन, दक्षता विकास एवं 21वीं सदी के उन्नत कौशलों के विकास में सहायक सिद्ध होगी। पाठ्यपुस्तक के रोचक विषयवस्तु से राज्य के विद्यार्थियों को स्थानीय संस्कृति एवं संदर्भों को समझने के अवसर मिलेंगे। विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास, वैश्विक नागरिक निर्माण एवं शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ति होगी।

हम राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के निदेशक के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने हमें एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा सृजित पाठ्यपुस्तकों को छत्तीसगढ़ राज्य के संदर्भ में अनुकूलित किए जाने हेतु स्वीकृति दी है। इस दिशा में एन.सी.ई.आर.टी. के विषय विशेषज्ञों द्वारा समय-समय पर दिए गए समुचित मार्गदर्शन, सुझाव एवं सहयोग के लिए हृदय से आभारी हैं।

हम 'छत्तीसगढ़ राज्य शिक्षा स्थायी समिति' को पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य में उनके सक्रिय योगदान के लिए तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य से जुड़े समस्त विद्वतजन के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

यद्यपि संवर्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सर्वदा भविष्य के लिए बनी रहती हैं इसलिए पाठ्यपुस्तक के परिमार्जन एवं उपयोगिता के संबंध में राज्य के विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों एवं अन्य जनों से प्राप्त होने वाले प्रत्येक सुझाव राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़ के लिए स्वागत योग्य होगा। हमारा लक्ष्य छत्तीसगढ़ राज्य को शिक्षा के क्षेत्र में अग्र पंक्ति में स्थापित करना है।

संचालक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
छत्तीसगढ़, रायपुर

आमुख

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा संस्तुत शिक्षा का बुनियादी स्तर बच्चों के समग्र विकास के लिए, उन्हें न केवल हमारे देश की संस्कृति और संवैधानिक व्यवस्था से उद्भुत अमूल्य संस्कारों को आत्मसात करने का अपितु बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता अर्जित करने का भी अवलंबन देता है ताकि वे अधिक चुनौतीपूर्ण आरंभिक स्तर के लिए पूर्णरूपेण तैयार हो सकें।

आरंभिक स्तर, जो बुनियादी और मध्य स्तरों के बीच एक सेतु का काम करता है, विद्यालयी शिक्षा की वह तीन वर्षीय अवधि है, जिसमें कक्षा 3 से कक्षा 5 सम्मिलित हैं। यह कहना अनावश्यक होगा कि इस स्तर पर बच्चों को मिलने वाली शिक्षा, आवश्यक रूप से आधारभूत स्तर के शिक्षा उपागम पर आधारित होगी। खेल-आधारित, खोज और गतिविधि प्रेरित सीखने-सिखाने की विधियाँ सतत रहेंगी लेकिन इसी बीच इस स्तर पर बच्चों को पाठ्यपुस्तकों और कक्षाओं से अधिक औपचारिक रूप में परिचित कराया जाएगा। इसका उद्देश्य बच्चों को कठिन स्थिति में डालना नहीं है अपितु उनमें पठन, लेखन एवं वाचन के साथ-साथ चित्रकला और संगीत इत्यादि के माध्यम से समग्र अधिगम और आत्म-अन्वेषण के लिए सभी विषयों के द्वारा आधार तैयार करना है।

अतः इस स्तर पर बच्चे शारीरिक शिक्षा, कला शिक्षा व पर्यावरण शिक्षा के साथ-साथ भाषाओं, गणित, आरंभिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान से भी परिचित होंगे। यहाँ यह सुनिश्चित किया जाएगा कि बच्चों का संज्ञानात्मक-संवेदनात्मक तथा भौतिक-प्राणिक स्तरों पर समग्र विकास हो ताकि वे सहजता से मध्य स्तर में प्रवेश कर सकें।

कक्षा 4 की बाँसुरी नामक इस पाठ्यपुस्तक को इन्हीं उद्देश्यों के अनुरूप सावधानीपूर्वक तैयार किया गया है। पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा-2023 (NCF-SE-2023) की अनुशंसाओ का पालन करती है। यह पाठ्यपुस्तक इस विकासात्मक चरण के लिए आवश्यक वैचारिक समझ, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, मूल्यों और प्रवृत्तियों पर बल देती है।

इसमें समावेशिता, बहुभाषिकता, लैंगिक समानता और सांस्कृति की मूल परम्पराओं जैसे संबद्ध विषयों को सम्मिलित किया गया है, जो उचित सूचना-संचार प्रौद्योगिकी और स्कूल-आधारित आकलन को एकीकृत करता है। पुस्तक में संकलित आकर्षक

सामग्री और गतिविधियाँ विद्यार्थियों को आकर्षित करने और सुरुचिपूर्ण अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिए तैयार की गई हैं, जिससे विद्यार्थियों के साथ-साथ शिक्षकों का शैक्षिक अनुभव भी समृद्ध होता है।

यहाँ पाठ्यपुस्तक के शैक्षणिक लक्ष्य को याद रखना महत्वपूर्ण है, जिसमें समझ, आलोचनात्मक सोच, तर्क और निर्णय लेने की दक्षता पर बल दिया गया है। इस स्तर पर बच्चों की सहज जिज्ञासा, उनके प्रश्नों को संबोधित करके और मूल शिक्षण सिद्धांतों पर आधारित गतिविधियों को तैयार करके पोषित किया जाना चाहिए। इस स्तर पर खेल-विधि के अंतर्गत शैक्षिक खिलौनों और खेलों की प्रकृति केवल आकर्षण उत्पन्न करने के स्थान पर जुड़ाव बढ़ाने के लिए विकसित की गयी है।

यद्यपि यह पाठ्यपुस्तक सामग्री-संपन्न है, तथापि बच्चों को इस विषय पर अतिरिक्त संसाधनों की भी खोज करनी चाहिए। स्कूल पुस्तकालयों द्वारा इस विस्तारित शिक्षा को सुविधा-संसाधन संपन्न बनाया जाना चाहिए। साथ ही माता-पिता और शिक्षकों को उनके प्रयासों का समर्थन करना चाहिए।

एक प्रभावी शिक्षण वातावरण विद्यार्थियों को प्रेरित करता है, उन्हें व्यस्त रखता है और सीखने के लिए आवश्यक जिज्ञासा और उत्कण्ठा को बढ़ावा देता है।

इस विश्वास के साथ, मैं यह पुस्तक आरंभिक स्तर के सभी विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए अनुशंसित करता हूँ। मैं इस पाठ्यपुस्तक के विकास में सम्मिलित सभी लोगों का आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने इस उत्कृष्ट प्रयास को साकार किया है और आशा करता हूँ कि यह पुस्तक सभी संबंधित लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करेगी।

व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों को निरंतर परिष्कृत करने के प्रति समर्पित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आपकी टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में सहायता ली जा सकती है।

नई दिल्ली
मार्च, 2025

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

पुस्तक के बारे में

हम फिर से आपको कक्षा चार (4) के लिए कला पर आधारित पाठ्यपुस्तक- **बाँसुरी** सौंप रहे हैं। आप कक्षा तीन (3) के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तक **बाँसुरी** देख चुके हैं। आपको इसमें संकलित बहुत सारी गतिविधियाँ करने में आनंद आया था। इस साल आपको गतिविधियाँ करने में और भी अधिक आनंद आएगा। इस वर्ष पहले से अधिक गतिविधियाँ हैं – जैसे चित्रकारी, पेंटिंग, शिल्प, गायन, वादन, अभिनय, नृत्य और इसी प्रकार बहुत सी अन्य! इस प्रकार कक्षा चार (4) की पाठ्यपुस्तक आपको विभिन्न कला रूपों में कौशल और दक्षता के आगामी स्तर पर ले जाएगी।

जैसा कि आप जानते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक हाल ही में जारी किए गए *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* और *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023* के आधार पर विकसित की गई है। इनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे पाठ्यचर्या लक्ष्यों को प्राप्त करें। इसके साथ-साथ सीखने के परिणामों के आधार पर एक पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.)* ने कक्षा 10 तक कला के अनिवार्य पाठ्यक्रम विषयों में से एक के रूप में अनुशंसा की है और यह भी अनुशंसा की है कि स्कूल कला के लिए शैक्षणिक सत्र में कम से कम 100 घंटे देना सुनिश्चित करें, जिसमें कला के चार घटक या क्षेत्र— दृश्य कला, रंगमंच, संगीत, और नृत्य हैं। इस प्रकार पाठ्यपुस्तक 'बाँसुरी-2' को चार इकाइयों में विभाजित किया गया है, जिसमें कुल 18 अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय में कई गतिविधियाँ हैं जिन्हें इस कक्षा के बच्चे आपके सहयोग से आसानी से कर सकते हैं। खोज और रचनात्मकता की इस प्रक्रिया में आपको महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस प्रक्रिया को प्रत्येक बच्चा पूरे शैक्षिक सत्र में अनुभव करेगा।

क्या आप जानते हैं?

इस पाठ्यपुस्तक में एक ऐसा सूत्र विद्यमान है जो सभी कला रूपों और गतिविधियों को जोड़ता है, जैसे – एक पंचतंत्र कहानी, *खरगोश और शेर*, जिनसे शायद आप पूर्वपरिचित हों। कहानियों के पात्र अलग-अलग संदर्भों में आपके सामने आते रहेंगे।

सीखने की प्रक्रिया इतने रोचक तरीकों से बढ़ाई जाएगी कि आपको पता ही नहीं चलेगा कि साल कब बीत गया और आप अगली कक्षा और उच्चतर स्तर पर जाने के लिए तैयार हो जाएँगे।

पाठ्यपुस्तक की समग्र भावना आपको समूहों में मिलकर काम करने, विचारों, भावनाओं और अनुभूतियों का संचार करने, सभी साथी विद्यार्थियों की कलात्मक यात्रा को आत्मसात करने, समावेशी वातावरण में काम करने, अपनी राष्ट्रीय विरासत की जड़ों के प्रति सचेत होने आदि के लिए प्रोत्साहित करती है।

पाठ्यपुस्तक (बाँसुरी) का प्रयोग कैसे करें।

यह पाठ्यपुस्तक चार इकाइयों में विभाजित की गई है और इसे बच्चे आसानी से समझ सकें, इसलिए प्रत्येक इकाई को एक अलग रंग दिया गया है। बच्चों को आरंभ में ही बताया जा सकता है कि नीचे दिए गए रंग किस कला के लिए हैं —

- ☞ पीला दृश्य कला के लिए है
- ☞ बैंगनी रंगमंच के लिए है
- ☞ नीला संगीत के लिए है
- ☞ गुलाबी नृत्य और अंग संचालन के लिए है

पाठ्यपुस्तक की चारों इकाइयाँ अलग-अलग हैं, लेकिन साथ ही इनमें समानताएँ भी हैं। प्रत्येक इकाई कला के उस रूप के बारे में एक परिचय के साथ शुरू होती है जिसे सीखने वाला अनुभव करेगा। आपके लिए गतिविधियों को व्यवस्थित करने, संसाधनों की खोज करने के लिए प्रत्येक अध्याय के क्यू.आर. कोड विशेष रूप से लगाए गए हैं, जिनको स्कैन करके आप अतिरिक्त संसाधनों तक पहुँच सकते हैं। यदि आपकी पहुँच इंटरनेट तक नहीं है तो ऐसे में आप या तो बच्चों को कला प्रदर्शन स्थलों पर ले जा सकते हैं या स्थानीय कलाकारों, लोक संगीतकारों, नर्तकों एवं अन्य कलाकारों को बच्चों के साथ अंत:क्रिया करने के उद्देश्य से विद्यालय में आमंत्रित कर सकते हैं। कई अभिभावक और समुदाय के अन्य सदस्य जो किसी कला में पारंगत हैं, वे बच्चों के सामने उस कला का प्रदर्शन करने हेतु सहमत हो सकते हैं। विद्यालयों में कलाकारों आदि के साथ वार्ता सत्रों का आयोजन किया जा सकता है, जिनमें बच्चों को प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह बच्चों के लिए प्रेरणाप्रद होगा। बच्चे अपने आस-पास, प्रकृति एवं दैनिक गतिविधियों का अवलोकन करें, इसके लिए आप उन्हें कक्षा से बाहर विद्यालय परिसर में ले जाएँ। नाटक, नृत्य-प्रदर्शन, संगीत समारोह और कला प्रदर्शनी आदि देखने के लिए शैक्षणिक यात्राओं का आयोजन करने से बच्चों को प्रेरित करने में सहायता मिलती है। इस पाठ्यपुस्तक में अनेक गतिविधियाँ सुझाई गई हैं, आप इसमें अन्य गतिविधियों को भी समावेशित कर सकते हैं, जिनमें विषय के अनुरूप उपलब्ध स्थानीय सामग्री और संसाधनों का उपयोग किया जा सकता है।

आपकी समय-सारिणी इस तरह से तैयार की जानी चाहिए कि बच्चों को प्रत्येक सप्ताह आवंटित सभी चार कला रूपों के लिए निर्दिष्ट कालांशों का अवसर प्राप्त हो। जहाँ भी संभव हो बच्चों के लिए गतिविधियाँ करने के लिए एक कालांश या दो संयुक्त

कालांश रखे जा सकते हैं क्योंकि सभी गतिविधियाँ काफी आकर्षक एवं आनंददायक होती हैं। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* सभी विषयों को समान महत्व प्रदान करती है, जिसमें कला भी सम्मिलित है। इसलिए अभिभावकों से अनुरोध है कि वे घर पर बच्चों को कला गतिविधियाँ करने पर हतोत्साहित न करें। शिक्षकों और विद्यालयों को यह सुनिश्चित करना होगा कि समय-सारिणी में कला विषय को प्रदान किए गए समय का उपयोग अन्य विषयों के लिए न किया जाए।

प्रत्येक कला कक्षा की शुरुआत से पहले बच्चे केवल आँख बंद करके पिछली कक्षा में क्या किया गया, उस पर ध्यान दे सकते हैं। कक्षा के अंतिम 10 मिनट चर्चा के लिए रखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए रंगमंच इकाई में सुझाव दिया गया है, शिक्षक सभी बच्चों के साथ बैठकर बातचीत करें, परंतु इस समय यह चर्चा बच्चों के लिए अनौपचारिक होती है। इस समय शिक्षक बच्चों से टिप्पणियाँ ले सकते हैं, जिन्हें वे अगली पाठ्य योजनाओं में सम्मिलित कर सकें।

विभिन्न अवधारणाओं पर बच्चों की समझ विकसित करने के लिए समग्र अधिगम वातावरण प्रदान करने का भाव पाठ्यपुस्तक और शिक्षणशास्त्र में पूर्ण रूप से प्रतिबिंबित होता है। शिक्षक उन्हें समूह में या व्यक्तिगत रूप से कार्य करने में सक्षम बनाने हेतु सहायता करें, जिससे बच्चों को विभिन्न प्रकार के कौशल विकसित करने में सहायता मिल सके। यह प्रक्रिया पुस्तक के सभी चार कला रूपों के लिए लगातार चलती रहे। बच्चों को अपने आस-पास की वस्तुओं का अवलोकन करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही वे कक्षा में जो कुछ करते हैं, उसका अभ्यास व कला कार्य को घर पर भी जारी रखें।

अपने अवलोकन और चर्चाओं के माध्यम से एक बच्चे में योग्यता और कौशल विकास के स्तर की प्रगति को चिह्नित करने के लिए आकलन के उपाय भी सुझाए गए हैं। कला में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण के पैमाने का उपयोग न किया जाए, इस स्तर पर कुछ भी अच्छा या बुरा नही हैं, सुधार की संभावना सदैव बनी रहती है और बच्चों को अवधारणाओं की समझ के साथ गतिविधियों को पूरा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। शिक्षा उनके लिए एक लंबी यात्रा है और हर बच्चा भिन्न है, उनके कौशल और अभिव्यक्ति के तरीके भी भी भिन्न हैं और यह भिन्नता ही उनके बालपन की सुंदरता है। उनके प्रदर्शन की तुलना कक्षा में किसी से नहीं की जानी चाहिए, अपितु सुधार लाने हेतु उनकी प्रतिस्पर्धा स्वयं से होगी।

कला कक्षा के लिए आपको क्या-क्या चाहिए?

सभी कला गतिविधियों के लिए आपको प्रकाशयुक्त स्थान की आवश्यकता होती है जो कक्षा के अंदर या बाहर हो सकता है, जहाँ बच्चे मुक्त रूप से कला संबंधी गतिविधियाँ कर सकें। आपको रंगमंच में आवश्यक वस्तुओं के लिए सुलभ सामग्री, कला सामग्री,

उपकरण और मूलभूत स्टेशनरी, सामग्री को सुरक्षित रूप से संग्रहीत करने के लिए स्थान, साथ ही व्यवस्थित तरीके से विद्यार्थियों की कलाकृति को प्रदर्शित और साझा करने के लिए प्रदर्शन पटल, कंप्यूटर, प्रोजेक्टर, स्पीकर और संगीत वाद्ययंत्रों आदि की आवश्यकता होगी। सुनिश्चित करें कि वस्तुओं का उपयोग उचित प्रकार से किया जा रहा है और ये स्थानीय रूप से उपलब्ध हैं।

हम आशा करते हैं कि यह पाठ्यपुस्तक प्रत्येक शिक्षक और अभिभावक के लिए उपयोगी, रोचक और संसाधनपूर्ण सिद्ध होगी। यह प्रत्येक कला कक्षा को रोमांचक बनाएगी और उसका विस्तार करते हुए उसके अन्य आयामों को खोलेगी। हम इस पुस्तक को अधिक सफल बनाने के लिए आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं, जो पुस्तक की संरचना और सामग्री को बेहतर करने में सहायता प्रदान करेंगे। यह पाठ्यपुस्तक दृश्य कलाओं और प्रदर्शन कलाओं को प्रत्येक बच्चे के विकास की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाने, उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने, उन्हें भावनात्मक रूप से सशक्त बनाने और संतुलित नागरिक बनने के लिए कौशल विकसित करने का एक निरंतर प्रयास है।

ज्योत्स्ना तिवारी
सदस्य-समन्वयक
आचार्य एवं *अध्यक्ष*
कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग,
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम सामग्री समिति (एन.एस.टी.सी.)

1. महेश चंद्र पंत, *कुलाधिपति*, राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन संस्थान (अध्यक्ष)
2. मञ्जुल भार्गव, *प्रोफेसर*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी (सह-अध्यक्ष)
3. सुधा मूर्ति, प्रतिष्ठित लेखिका एवं शिक्षाविद
4. बिबेक देबरॉय, *अध्यक्ष*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
5. शेखर मांडे, *पूर्व महानिदेशक*, सी.एस.आई.आर. एवं प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे
6. सुजाता रामदोरई, *प्रोफेसर*, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, कनाडा
7. शंकर महादेवन, संगीत विशेषज्ञ, मुंबई
8. यू. विमल कुमार, *निदेशक*, प्रकाश पादुकोण बैडमिंटन अकादमी, बेंगलुरू
9. मिशेल डैनिनो, *विज़िटिंग प्रोफेसर*, आई.आई.टी., गांधीनगर
10. सुरीना राजन, *आई.ए.एस.* (सेवानिवृत्त), हरियाणा एवं पूर्व महानिदेशक, एच.पी.ए.
11. चामू कृष्ण शास्त्री, *अध्यक्ष*, भारतीय भाषा समिति, शिक्षा मंत्रालय
12. संजीव सान्याल, *सदस्य*, प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद् (ई.ए.सी.-पी.एम.)
13. एम.डी. श्रीनिवास, *अध्यक्ष*, सेंटर फॉर पॉलिसी स्टडीज, चेन्नई
14. गजानन लोंढे, हेड, प्रोग्राम ऑफिस, एन.एस.टी.सी.
15. रोबिन छेत्री, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम
16. प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रोफेसर*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. दिनेश कुमार, *प्रोफेसर*, योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. रंजना अरोड़ा, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली (सदस्य-सचिव)

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता**

और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पाठ्यपुस्तक निर्माण समूह

अध्यक्ष

संध्या पुरेचा, *अध्यक्ष*, संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली

योगदान

अराधना गुप्ता, *कलाकार, मार्गदर्शक*, *एनएमएम*, और *अध्यक्ष,* ग्लोबल नॉलेज नेटवर्क सोसाइटी (GKNS)

बिदिशा हाजरा, *सहायक प्रोफेसर*, कला शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

बिंदु सुब्रमणियम – *गायिका-संगीतकार* और *सह-संस्थापक*, सुब्रमणियम अकादमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (SaPa)

ज्योति भट, *भरतनाट्यम संकाय*, पूर्ण प्रमति, बेंगलुरु

कपिल शर्मा, *सहायक प्रोफेसर*, नाट्य विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

मानसी प्रसाद, *कर्नाटिक गायिका*, बोर्ड सदस्य (पूर्व निदेशक), इंडियन म्यूजिक एक्सपीरियंस म्यूज़ियम, कला परामर्शदाता

मालविका राजनारायण, *दृश्य कलाकार* और *शिक्षिका* तथा विज़िटिंग फैकल्टी, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रियदर्शिनी घोष, *नृत्यांगना*, *कोरियोग्राफर* और *नृत्य विदुषी*, कलात्मक निदेशक, प्रियदर्शिनी आर्ट्स

राजश्री एस.आर., एनएसटीसी कार्यक्रम कार्यालय, *थिएटर परामर्शदाता*, चाणक्य विश्वविद्यालय, संस्थापक-निदेशक, व्योमा आर्टस्पेस एंड स्टूडियो थिएटर, बेंगलुरु

शिवांगी पुरोहित, उप-*प्रधानाचार्य*, ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली

सिद्धि गुप्ता, *संकाय सदस्य*, सृष्टी मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिज़ाइन एंड टेक्नोलॉजी, बेंगलुरु

सुधन्वा ए.के., *नाट्य संकाय*, श्री विद्या केंद्र; एवं संस्थापक, नवक्षितिज थिएटर, बेंगलुरु

अनुवादक

अनुराग बेहार, *सदस्य*, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति

मंजुल भार्गव, *प्रोफेसर* एवं *सह-अध्यक्ष*, एनएसटीसी

अनुराधा पाल, *तबला वादक*, बहु-संगीत वाद्य कलाकार एवं संगीतकार

सदस्य-संयोजक

ज्योत्स्ना तिवारी, *आचार्य* एवं *अध्यक्ष*, कला और सौंदर्यशास्त्र शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

अनुकूलन समूह

संयोजक कौस्तभ चटर्जी, डॉ.डी.के.बोदले

संपादन सहयोग दानीराम वर्मा (से.नि.प्राचार्य), डॉ.आर.एस.चौहान (से.नि.प्राचार्य), बी.आर.साहू (पूर्व फैकल्टी एस.सी.ई.आर.टी. भाषाविद्)

समन्वयक प्रीति सिंह

सहयोग डॉ.पुरुषोत्तम चंद्राकर, डॉ.पी.सी.लाल यादव, डॉ.सीताराम साहू, मधु दानी, संगीता रंघाती, दिव्या सिंह परिहार, मनीष साहू, रूद्र प्रताप सिंह, लखेश्वर प्रसाद साहू, डॉ.तुषार सिन्हा, द्रोंण कुमार सार्वा

राज्य शिक्षा स्थायी समिति, छत्तीसगढ़

क्रं	नाम व पदनाम	
1.	श्री आलोक चक्रवाल, कुलपति, गुरु घासीदास केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिलासपुर	**अध्यक्ष**
2.	संचालक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर	**सदस्य सचिव**
3.	संचालक, लोक शिक्षण संचालनालय, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
4.	मिशन संचालक, समग्र शिक्षा, रायपुर, छत्तीसगढ़	**सदस्य**
5.	डॉ. वासुदेव साहसी, सहा.प्रा., शा.जे. योगानंदम छ.ग. महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
6.	डॉ. सुभाष चन्द्राकर, प्राध्या., दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर	**सदस्य**
7.	श्री मनीष देवांगन, वि.खं. शिक्षा अधिकारी, कार्या. धरसींवा, जिला-रायपुर	**सदस्य**
8.	श्री नरेन्द्र सिंह राजपूत, सहा. शिक्षक, प्राथ. विद्या. सिवनी खुर्द (बोडला), जिला-कबीरधाम	**सदस्य**
9.	श्री मनोज सिंह, शा. शिक्षा महाविद्यालय, बिलासपुर	**सदस्य**
10.	श्री दिलीप केसरवानी, पूर्व प्राचार्य, कबीर नगर, रायपुर	**सदस्य**

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर्यवेक्षण समिति के सम्मानीय अध्यक्ष और सदस्यों, पाठ्यचर्या क्षेत्र समूह (सी.ए.जी) के अध्यक्ष और सदस्यों को कला एवं अन्य संबंधित सी ए जी के क्रॉस-कटिंग विषयों पर उनके दिशानिर्देशों, मार्गदर्शन और समर्थन के लिए और एनएसएस कार्यक्रम कार्यालय के सदस्यों को इस पाठ्यपुस्तक के विकास में उनकी निरंतर सहायता ,एवं समर्थन के लिए धन्यवाद देता है। हम पाठ्यपुस्तक को उत्तम बनाने के लिए सभी विभागों के प्रमुखों और क्रॉस-कटिंग क्षेत्रों के संकाय सदस्यों द्वारा प्रदत्त बहुमूल्य सुझावों के लिए आभारी हैं।

परिषद् उन संस्थानों, संगठनों, व्यक्तियों का आभार व्यक्त करती हैं, जिन्होंने इस पुस्तक के लिए उपयोगी लिखित सामग्री, चित्र, छायाचित्र, ऑडियो-वीडियो सामग्री आदि संसाधन प्रदान किए। इनमें निम्न लिखित सम्मिलित हैं — संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; कला उत्सव अभिलेखागार, एनसीईआरटी; सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र, नई दिल्ली; व्योमा कला स्पेस और स्टूडियो रंगमंच , बेंगलुरु; सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (एसएपीए), बेंगलुरु; प्रियदर्शिनी आर्ट्स, कोलकाता; ज्योति पब्लिक स्कूल, नई दिल्ली; पुरपरमति पाठशाला, बेंगलुरु; स्मार्ट लर्नर्स अकादमी, कोलकाता; अजीम प्रेमजी फाउंडेशन; तमिल संगम, सीआईईटी, तमिलनाडु; नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न कला , नई दिल्ली; गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल, स्यालीधर, अल्मोड़ा, उत्तराखंड; जवाहर नवोदय विद्यालय, ओंगोल, आंध्र प्रदेश; आर्टिसनप्राइड प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, चन्नपटना, कर्नाटक; चिल्ड्रन लिटिल रंगमंच , कोलकाता; ओडिशा क्राफ्ट्स म्यूजियम, भुवनेश्वर; ग्लोबल नॉलेज नेटवर्क सोसाइटी, देहरादून; पी एंड टी सेकेंडरी स्कूल, नई दिल्ली; नॉलेजग्राम इंटरनेशनल स्कूल, पटना; और संचिता मुंशी साहा, नृत्यभाष, कोलकाता, की आभारी है जिन्होंने हमें लिखित सामग्री, चित्रण, फोटो और श्रव्य-दृश्य सामग्री के रूप में अपने संसाधनों का उपयोग करने की अनुमति दी।

एनसीईआरटी – पद्म विभूषण, डॉ. एल. सुब्रमण्यम, वायलिन वादक और संगीतकार, लक्ष्मीनारायण ग्लोबल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (एलजीसीई) के संस्थापक; अंबी सुब्रमण्यम, वायलिन वादक और संगीतकार, सुब्रमण्यम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (सा प्) के सह-संस्थापक; महेश राघवन, संगीतकार और संगीतकार; अक्षय अनंतपद्मनाभन, संगीतकार; प्रिंसिपल, केंद्रीय विद्यालय, आरके पुरम, नई दिल्ली; किशोर माधवन, किशोर माधवन फोटोग्राफी; सानिका सेनगुप्ता, डिजाइनर और कलाकार;

प्रियंका के मोहन, यक्षा देगुला, बेंगलुरु; श्रेष्ठा सुरेश फोटोग्राफर और कलाकार; सुभाशीष पाणिग्रही, भारतीय पुरालेखपाल और वृत्तचित्र फिल्म निर्माता; निधि एम शास्त्री, एनएसटीसी कार्यक्रम कार्यालय भाषा समीक्षा और संपादन समर्थन के लिए उपर्युक्त सभी के अमूल्य योगदान और समर्थन को भी स्वीकारता और आभार प्रकट करता है।

हम कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग में कार्यरत वरिष्ठ अनुसंधान सहचारि प्रतीक रंजन झा, विवेक कुमार, अजय कुमार तथा कनिष्ठ परियोजना अध्येता शैलेन्द्र कुमार, नेहा सिंह, दीपक कुमार ठाकुर, ऋचा शर्मा के सराहनीय योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं।

परिषद् इस पुस्तक के संपादन के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों दिनेश वशिष्ट, *संपादक* (संविदा); राहुल सेमवाल, *सहायक संपादक* (संविदा); अंशिका, *हिंदी प्रूफ रीडर* (संविदा); पांडुलिपि को आकार देने और पुस्तक का स्वरूप प्रदान करने के लिए पवन कुमार बरियार, *प्रभारी*, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ और पूनम, गीता *डी.टी.पी. ऑपरेटर* (संविदा) के प्रयासों की भी सराहना करती है।

समय आवंटन और आकलन

कला शिक्षा की इस पाठ्यपुस्तक में चार इकाईयाँ हैं, जो कि कला के चार रूपों पर केंद्रित हैं। ऐसी स्थिति में समय सारिणी की योजना इस तरह से बनाना महत्वपूर्ण है कि पूरे वर्ष में सभी कला रूपों की शिक्षा समान रूप से विद्यार्थियों को दी जा सके।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के अनुसार, पूरे शैक्षणिक वर्ष के लिए कला शिक्षा के लिए आवंटित समय 100 घंटे (या 40 मिनट की 150 कालांश) है। यह पुस्तक इसी समय आवंटन को ध्यान में रखकर लिखी गई है।

उचित यह होगा कि सभी चार कला रूपों को पूरे सप्ताह में विभाजित किया जाए जिससे कि सभी इकाईयों में प्रगति संबंधी एकरूपता हो। ऐसी प्रणाली से बचना ही उचित होगा, जहाँ दूसरे कला रूप को पहले के पूरा होने के बाद ही लिया जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के अनुसार समय वितरण					
कला रूप	**दृश्य कला**	**संगीत**	**नृत्य**	**रंगमंच**	**बहुविषयक/अनुभवात्मक कार्य**
समय (घंटों में)	20	20	20	20	20
40 मिनट के कालांशों की संख्या	30	30	30	30	30

समय सारिणी

एनसीएफ-एसई 2023 में उदाहरण स्वरूप दी गई समय सारिणी के अंतर्गत, कला शिक्षा को पूरे सप्ताह में चार कालांश और शनिवार को एक कालांश आवंटित किया जाएगा। एनसीएफ-एसई 2023, कालांश इकाईयों के उपयोग का भी सुझाव देता है, जहाँ 40 मिनट के दो कालांशों को संयोजित कर गतिविधि-आधारित कक्षाओं के लिए पर्याप्त समय की व्यवस्था की जा सकती है।

इससे 80 मिनट (1 घंटा 20 मिनट) का एक विस्तृत कालांश मिलेगा। इन विकल्पों के आधार पर, चार कला रूपों के लिए सप्ताह में चार कालांश आवंटित किया जा सकता है, जबकि शनिवार को अंतःविषय गतिविधियों या कला-आधारित क्षेत्र यात्राओं, जैसे— संगीत कार्यक्रम, प्रदर्शन या कला दीर्घाओं की यात्रा के लिए उपयोग किया जा सकता है।

सप्ताह के अंतर्गत अलग-अलग कालांशों के लिए समय सारिणी (कालांश अवधि 40 मिनट)

सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
	कला शिक्षा (संगीत)		कला शिक्षा (दृश्य कला)		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
कला शिक्षा (रंगमंच)		कला शिक्षा (नृत्य)			

सप्ताह के अंतर्गत कालांश इकाई के लिए समय सारिणी (कालांश अवधि 80 मिनट)

सप्ताह	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सप्ताह 1		कला शिक्षा (संगीत) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (दृश्य कला) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)
सप्ताह 2		कला शिक्षा (रंगमंच) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (नृत्य) कालांश इकाई (2 संयुक्त कालांश) अवधि— 80 मिनट		कला शिक्षा (अभ्यास/क्षेत्र भ्रमण)

40 मिनट के कालांश वाली पहली योजना में प्रत्येक सप्ताह सभी चार कला रूपों के लिए कक्षाएँ होंगी, जबकि दूसरी योजना में प्रति सप्ताह केवल दो कला रूप होंगे। प्रत्येक व्यक्तिगत कला रूप में प्रत्येक दूसरे सप्ताह कक्षाएँ होंगी। यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि सभी कला रूप एक साथ आगे बढ़ें, क्योंकि इससे विद्यार्थियों को उनके बीच के अंत:संबंधों को समझने में सहायता मिलेगी, जिससे उनकी समझ समग्रता में विकसित होगी।

आकलन

कला शिक्षा में आकलन विद्यार्थियों की रचनात्मक दक्षताओं और कलात्मक विकास को समझने और पोषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अन्य विषयों के विपरीत, कला शिक्षा आकलन — रचनात्मकता, आलोचनात्मक सोच, तकनीकी दक्षता और अभिव्यंजक दक्षताओं सहित कौशल की एक विस्तृत शृंखला का आकलन करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये आकलन न केवल प्रगति और कौशल को मापने के लिए संरचित किए गए हैं, बल्कि अन्वेषण, आत्म-अभिव्यक्ति और कला के लिए गहरी प्रशंसा को प्रोत्साहित करने के लिए भी हैं।

आकलन के प्रकार

चूँकि कला शिक्षा में आकलन प्रक्रियाएँ मुख्य रूप से कौशल-आधारित होती हैं, इसलिए वे बच्चे के 'सही' या 'गलत' उत्तर पर निर्भर नहीं होती हैं। अतः यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि आकलन की संरचना, प्रश्न पत्रों और लिखित उत्तरों के साथ न की जाए क्योंकि इससे कला शिक्षा पाठ्यचर्या में प्रयुक्त दृष्टिकोण का उद्देश्य पूर्णतः विफल हो जाएगा। पोर्टफोलियो, प्रदर्शन समीक्षा, परियोजना-आधारित आकलन और चिंतनशील आत्म-आकलन जैसी विभिन्न आकलन विधियाँ प्रत्येक विद्यार्थी की अनूठी कलात्मक यात्रा में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती हैं।

रचनात्मक एवं योगात्मक आकलन

- रचनात्मक आकलन प्रत्येक कक्षा में अवलोकन तथा प्रत्येक गतिविधि में बच्चे के प्रदर्शन पर आधारित होता है। अध्याय के अंत में दिए गए रूब्रिक्स पूरे वर्ष के अंक निर्धारण/दक्षता स्तर की संरचना में सहायता करते हैं।
- योगात्मक आकलन के लिए आकलन का एक अलग दिन आवंटित करने की आवश्यकता होती है। पूरे वर्ष कक्षा में आयोजित होने वाली गतिविधियाँ एवं उनकी विविधताओं का उपयोग बच्चे की समझ और विभिन्न कौशलों में अर्जित योग्यताओं और दक्षताओं का आकलन करने के लिए किया जा सकता है। उत्तम योजना बनाने के लिए प्रत्येक अनुभाग के अंत में उदाहरण दिए गए हैं। विद्यार्थियों को प्रदत्त कार्य को त्वरित रूप से करना होगा।

दक्षता स्तर एवं अंक

विदित है कि कला रचनात्मकता, दृश्यावलोकन, अभिव्यक्ति तथा कल्पना पर केंद्रित है, अतः इसमें सही या गलत उत्तर नहीं होते। अत: इसमें आकलन मानदंडों पर आधारित होता है, जैसे कि अर्जित कौशल का स्तर तथा विद्यार्थी द्वारा प्रदर्शित योग्यताएँ। निष्पक्ष आकलन सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों को प्रत्येक गतिविधि के लिए योग्यताओं एवं अधिगम प्रतिफलों से पूरी तरह परिचित होना चाहिए।

मानदंडों के अंतर्गत आकलन के लिए एक पाँच-बिंदु पैमाने की अनुशंसा की जाती है। इससे शिक्षक, माता-पिता और विद्यार्थी, प्रगति को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे। प्रत्येक अध्याय के बाद दिए गए रूब्रिक में पाँच-बिंदु पैमाने को चिह्नित करने के लिए नीचे दी गई तालिका का संदर्भ के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

इसमें मात्रात्मक आकलन (रूब्रिक के आधार पर अंक या दक्षता स्तर) और गुणात्मक आकलन (बच्चे के व्यवहार, रुचि, प्रगति और अन्य पहलुओं पर शिक्षक के अवलोकन जो रूब्रिक में उल्लेखित नहीं हो सकते हैं) दोनों को संयोजित करना आवश्यक है।

विद्यार्थी का अधिगम स्तर	संख्यात्मक पैमाना	दक्षता स्तर
आरंभिक	1	E
विकासशील	2	D
होनहार	3	C
कुशल	4	B
उत्कृष्ट	5	A

आकलन मानदंड, विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के पाठ्यचर्या लक्ष्यों (CG) और दक्षताओं (C) पर आधारित हैं।

प्रिय बच्चों,

कल्पना कीजिए कि आप एक ऐसे संसार में पहुँच गए हैं, जहाँ रंग — नृत्य करते हैं, संगीत— कहानियाँ सुनाता है, और चित्र व गति के अनुसार आप स्वयं चरित्र रच सकते हैं। यह वही संसार है जिसका अनुभव आप इस पुस्तक में करेंगे! और यह संसार आरंभ होता है पंचतंत्र की एक अद्‌भुत कहानी से, जो बुद्धि, साहस, और आनंद से भरी है। लेकिन यह कोई साधारण कहानी नहीं है — इस पुस्तक के प्रत्येक अध्याय में आप इस कहानी को चार अलग-अलग प्रकार — चित्रकला, रंगमंच, संगीत एवं नृत्य से देखेंगे।

आप इसे जैसे-जैसे पढ़ेंगे, आपको पता चलेगा कि सभी कला रूप परस्पर संबंधित हैं। जैसे, कहानी के जानवर आपस में जुड़ते हैं, वैसे ही आप चित्रकला, रंगमंच, संगीत एवं नृत्य को परस्पर जुड़ते हुए देखेंगे। जिस प्रकार एक पेंटिंग बिना शब्दों के भी कहानी कह सकती है, उसी प्रकार एक नाटक भावनाओं को जीवंत कर सकता है। जिस तरह एक धुन हमें नाचने के लिए प्रेरित कर सकती है, उसी तरह नृत्य उन भावों को व्यक्त कर सकता है जो शब्द नहीं कर सकते। कला हमारे चारों ओर है और इस पुस्तक के माध्यम से आप इसे देखना,अनुभव करना तथा अनेक प्रकार से व्यक्त करना सीखेंगे।

प्रत्येक अध्याय आपको रोमांचक गतिविधियों की ओर ले जाएगा। आप कहानी से एक दृश्य को चित्रित कर सकते हैं, मित्रों के साथ बिताए आनंददायी पलों का अभिनय कर सकते हैं, कहानी के पात्रों से प्रेरित अपनी स्वयं की लय बना सकते हैं या मुद्राओं का उपयोग अलग-अलग भावों की अभिव्यक्ति के लिए कर सकते हैं। इस पुस्तक के माध्यम से आपको समूह में काम करने का अवसर भी मिलेगा, जैसे पंचतंत्र की कहानी के जानवर करते हैं, तथा आप पाएँगे कि समूह कार्य कैसे कला को और सामर्थ्य प्रदान करता है। लेकिन यह यात्रा सिर्फ नई चीजें सीखने के बारे में ही नहीं है अपितु यह आपकी अपनी आवाज़ खोजने के बारे में भी है। चाहे आपको चित्र बनाना पसंद हो, अभिनय करना, गाना, या नृत्य करना, यह पुस्तक आपको इस प्रकार से व्यक्त करने में सहायता करेगी जो आपने कभी सोचा भी नहीं होगा। कला में सही या गलत नहीं होता—बस रचने और साझा करने का सुख होता है। तो, तैयार हो जाइए —अन्वेषण, प्रयोग, और व्यक्त करने के लिए! जब आप इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठ तक पहुँचेंगे, तो आपने मात्र कहानी नहीं पढ़ी होगी, अपितु कला के माध्यम से इसे जिया होगा। आइए इस जादुई साहसिक यात्रा को आरंभ करें!

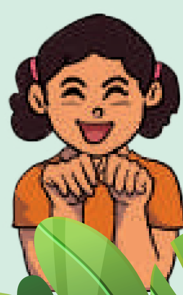

विषय सूची

प्राक्कथन .... *iii*
आमुख .... *iv*
पुस्तक के बारे में .... *vi*
समय आवंटन और आकलन .... *xvii*
प्रिय बच्चों .... *xxii*

पंचतंत्र 1

दृश्य कला 5

1. वस्तुओं की व्यवस्था 8
2. प्रकृति में बनावटें 18
3. जलीय जीवन 26
4. लोगों की गतिविधियाँ 39

रंगमंच 51

5. अन्वेषण! 56
6. कल्पना 63
7. आईए सृजन करें 75
8. आस-पास देखें 84

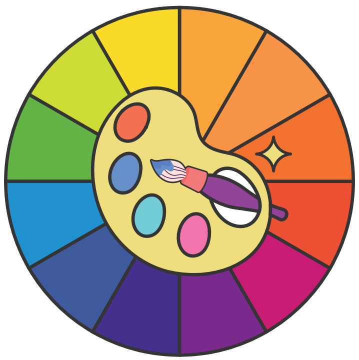

संगीत 94

9. गाओ और बजाओ 96

10.संगीत बनाना..103

11. गीत और कहानियाँ 111

12. सोचें, अनुभव करें तथा सृजन करें 118

13.ध्वनियाँ और वाद्ययंत्र 130

नृत्य 140

14. मेरा शरीर और नृत्य 142

15. कहानियां कहतीं मेरे नृत्य 154

16. मेरी नृत्य रचना 161

17. नृत्य में भाव और अभिव्यक्ति 174

18. आस-पास के नृत्य..179

भारत का संविधान

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके; और

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

पंचतंत्र

पंचतंत्र ऐसी कहानियों का एक संग्रह है जो संस्कृत भाषा में दो हजार वर्ष से भी पहले लिखी गई थीं। इस संग्रह को प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान विष्णु शर्मा ने रचा था। उन्होंने इसकी रचना सभी व्यक्तियों के लिए, विशेष रूप से बच्चों को बड़े ही मित्रवत तरीके से नैतिकता व मूल्यों का पाठ पढ़ाने के उद्‌देश्य से की थी। शब्द 'पंच' का अर्थ है— पाँच और 'तंत्र' का अर्थ है— संहिता या सिद्धांत।

पंचतंत्र की सभी कहानियाँ पाँच समूहों में विभाजित हैं। ये कहानियाँ इतनी लोकप्रिय हैं कि सदियों से दुनियाभर के बच्चे इन्हें पढ़ते आए हैं। इन कहानियों का अनुवाद सभी भारतीय भाषाओं एवं कई विदेशी भाषाओं, जैसे— अंग्रेजी, जर्मन, इटालियन, अरबी, जापानी, स्पेनिश और अन्य भाषाओं में हुआ है।

अगले पृष्ठ पर पंचतंत्र की एक रोचक कहानी दी गई है—

खरगोश और शेर

चित्र में अपने मनपसंद रंग भरिए
जंगल में भासुरका नाम का एक निर्दयी शेर रहता था। वह अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए आवश्यकता से अधिक पशुओं का शिकार करता था।
इस कारण जानवर हमेशा डर में जीते थे। एक दिन उन सभी ने एक योजना बनाई और शेर के पास एक प्रस्ताव लेकर पहुँचे।
हम वचन देते हैं कि आपके पास हर दिन एक जानवर को अवश्य भेजेंगे, आप सभी को क्यों मारना चाहते हैं? क्या आपके लिए एक दिन में एक जानवर पर्याप्त नहीं
ठीक है! लेकिन अगर एक भी दिन ऐसा हुआ कि कोई एक भी मेरे पास नहीं आया, तो मैं तुम सभी को मार डालूँगा!
हर दिन एक जानवर शेर का भोजन बनकर उसके समक्ष प्रस्तुत होता था।
एक दिन खरगोश की बारी थी। वह धीरे-धीरे चलता हुआ अपनी मृत्यु को टालने का प्रयास कर रहा था।
हे तुच्छ प्राणी! तुम देर से आए हो, तुम्हारे कारण मैं कल सभी जानवरों को मार दूँगा!
देर से आने में मेरा कोई दोष नहीं है श्रीमान! एक शक्तिशाली शेर मेरे मार्ग में आ गया था और उसने मुझसे कहा, “वह आपसे पहले मुझे खा जाएगा।”

मुझसे भी शक्तिशाली शेर? मैं उसे तुरंत देखना चाहता हूँ!
देखिए, श्रीमान! वह अपनी गुफा में वापस चला गया है।
वह मेरे जैसा ही दिखता है! क्या वह मुझे चुनौती देने का साहस रखता है?
दहाड़!
एक प्रबल दहाड़ गुफा से वापस आई।
भासुरका अपने शत्रु की शक्ति से आश्वस्त होकर हमला करने के लिए आगे बढ़ा और अंततः अपनी मृत्यु को प्राप्त हुआ।
इस प्रकार खरगोश ने शेर को बड़ी ही चतुराई से हराया और जंगल के सभी जानवरों को बचाया।

इस कहानी के माध्यम से आपने क्या सीखा?

....

....

....

....

....

शाबाश! अब जैसे ही आप दृश्य कला, संगीत, रंगमंच और नृत्य में नई-नई अवधारणाएँ सीखना आरंभ करेंगे, आप उन गतिविधियों के लिए इस कहानी का उल्लेख करेंगे। क्या यह रोमांचक नहीं है कि पंचतंत्र की एक कहानी सभी कला रूपों को जोड़ती है? इसलिए इस कहानी को ध्यान में रखिए और सभी गतिविधियों का आनंद लीजिए!

जब भी आप इसे देखें, इसका अर्थ है कि आपको 'खरगोश और शेर' की कहानी को याद रखना है।

दृश्य कला

एक विद्यार्थी द्वारा बनाई गई कलाकृति

प्रिय शिक्षको,

आइए, हम अपने विद्यार्थियों को एक ऐसे स्थान पर ले जाएँ, जहाँ वे स्वतंत्र रूप से निरीक्षण, कल्पना, अभिव्यक्ति एवं अपनी रचनात्मकता को दृश्य कला के माध्यम से व्यक्त कर सकें। प्रत्येक विद्यार्थी के लिए सर्वोत्तम सीखने के अनुभव को सृजित करने के लिए कुछ बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक है।

कक्षा की आवश्यकताएँ

1. विद्यार्थियों के लिए आरामदायक कार्य करने के लिए पर्याप्त स्थान।
2. पर्याप्त प्रकाश एवं वायु संचालन।
3. कला सामग्रियों के लिए उचित भंडारण तथा उन तक आसान पहुँच; जैसे— उपकरण, मूलभूत स्टेशनरी एवं ऑडियो-विजुअल सुविधाएँ आदि।
4. कला कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए स्थान, जो नियमित रूप से बदला जाए।

दृश्य कला शिक्षण पद्धति

1. अवधारणाओं तथा प्रक्रियाओं का परिचय देते समय कहानियों और दैनिक उदाहरणों का उपयोग कीजिए।
2. विद्यार्थियों को उनके मौलिक विचारों, कल्पनाओं, भावनाओं एवं जिज्ञासाओं को कला के माध्यम से स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
3. विद्यार्थियों को दैनिक जीवन एवं प्रेरणा को ध्यान से देखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए तथा अन्य चित्रों या फोटोग्राफों से नकल करने के लिए हतोत्साहित कीजिए।
4. विद्यार्थियों को निरीक्षण, जाँच, प्रयोग, सहयोग एवं कक्षा में संवाद करने की अनुमति दीजिए।
5. बाहरी गतिविधियों तथा क्षेत्र भ्रमण को सम्मिलित करें, जिससे विद्यार्थी अपने आस-पास के जीवन और संस्कृति को देख सकें।
6. संग्रहालय, स्थानीय मेलों एवं कला कार्यशालाओं के लिए क्षेत्र भ्रमण आयोजित कीजिए।
7. स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को आमंत्रित करें तथा व्यावहारिक सत्रों एवं व्यावहारिक कार्यशालाओं का आयोजन कीजिए।
8. विद्यार्थियों को साफ-सफाई, प्रयुक्त सामग्रियों को व्यवस्थित करने और कला सामग्रियों को सावधानी से सँभालने जैसी आदतों के लिए प्रोत्साहित कीजिए।
9. विद्यार्थियों को कक्षा प्रदर्शनी के लिए कलाकृतियों का चयन करने में भाग लेने और निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित कीजिए।

दृश्य कला आकलन

समय आवंटन एवं आकलन के अनुभाग को कृपया आगे के विवरण के लिए देखिए—

1. आकलन को प्रारंभिक स्तर के लिए अधिगम प्रतिफलों तथा दक्षताओं के साथ संरेखित किया जाना चाहिए।
2. प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी कलाकृतियों का पोर्टफोलियो बनाने और उसका सही से रखरखाव करने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। यह शिक्षक को उनकी प्रगति पर ध्यान रखने में सहायता करेगा।
3. रचनात्मक आकलन को 'परीक्षा दिवस' पर नहीं, बल्कि कक्षा गतिविधियों के भीतर आयोजित किया जाना चाहिए; जैसे—
   - गुणात्मक प्रतिक्रिया देना, जिसमें विद्यार्थियों की शक्तियों एवं सुधार के क्षेत्रों का उल्लेख हो।
   - औपचारिक तथा अनौपचारिक संवादों में विद्यार्थियों की कला चर्चाओं में भागीदारी को संग्रहीत करना।
   - क्षेत्र भ्रमण के समय विद्यार्थियों को सरल कार्य सौंपकर उनकी अवलोकन तथा कला गतिविधियों में रुचि का आकलन करना।
4. **योगात्मक आकलन** प्रत्येक सत्र के अंत में परियोजना कार्य या व्यावहारिक कार्यों के माध्यम से किया जाना चाहिए। आकलन के लिए सुझाए गए उदाहरण 'दृश्य कला' खंड के अंत में दिए गए हैं।

प्रारंभिक स्तर के लिए दक्षताएँ

C-1.1 विभिन्न प्रकार की छवियाँ बनाने के लिए उत्साह व्यक्त करता है जो उनके दैनिक जीवन की भावनाओं तथा कल्पना को दर्शाते हैं।

C-1.2 दृश्य कला में सहयोगात्मक रूप से काम करते हुए विभिन्न विचारों और प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करते हैं।

C-2.1 अपने दैनिक अवलोकनों, व्यक्तिगत अनुभवों एवं भावनाओं को चित्रित करते हुए, रचनात्मक रूप से दृश्य तत्वों (रेखा, रूप, रंग, स्थान, बनावट) के विभिन्न संयोजनों का उपयोग करते हैं।

C-2.2 कक्षा में साझा किए गए कला कार्यों के दृश्य तत्वों, विषयों और अभिव्यक्तियों की तुलना करते हैं।

C-3.1 सामग्रियों, उपकरणों और दृश्य कला में प्रयुक्त तकनीकों के साथ कार्य करते समय निर्णय लेते हैं।

C-3.2 व्यक्तिगत और सहयोग से कलाकृति बनाते हुए, योजना, निष्पादन और प्रस्तुतीकरण के चरणों का अभ्यास करते हैं।

C-4.1 प्रकृति में दृश्य तत्वों की पहचान करता है तथा उनकी कलात्मक विशेषताओं का वर्णन करते हैं।

C-4.2 स्थानीय कला रूपों एवं संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करते हैं।

अध्यायों में आकलन योग्य सीखने के प्रतिफल

पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	C-1.2	सहयोग से कार्य करना एवं सहपाठियों के साथ विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।		
2	C-2.2	कला कार्यों में देखे गए आकार, रंग, पैटर्न, बनावट, सामग्रियों तथा विषयों में समानताएँ एवं भेद पहचानते हैं।		
3	C-3.1	चित्रण, रंगाई, मुद्रण, कोलाज, फ्रोटाज, ऑरिगामी, रंगोली डिजाइन और त्रि-आयामी कलाकृति के लिए उपयुक्त सामग्रियों तथा उपकरणों का चयन एवं उपयोग करते हैं।		
4	C-4.1	प्रकृति में देखे गए स्वरूप (पैटर्न), बनावट तथा समरूपता को पहचानते और वर्णन करते हैं।		
4	C-4.2	कला कार्य को देखते समय प्रश्न पूछते हैं एवं विचारों को साझा करते हैं।		

जो गतिविधियाँ तारे के चिह्न ★ से चिह्नित हैं, उन्हें किसी भी शिक्षक द्वारा, यहाँ तक कि सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी सुगम बनाया जा सकता है।

अध्याय 1

वस्तुओं की व्यवस्था

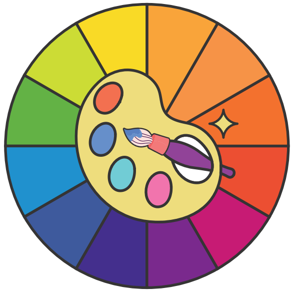

ध्यान दीजिए कि जब फर्नीचर और अन्य वस्तुओं को कलात्मक ढंग से कमरे या दुकान में रखा जाता है तो वे कितने अच्छे लगते हैं। साथ ही उनकी पृष्ठभूमि में कपड़े जोड़ने से हमारा ध्यान आकर्षित होता है।

इस अध्याय में आप अपने आस-पास मिलने वाली विभिन्न वस्तुओं को व्यवस्थित करेंगे। चित्रण करते समय, आप वस्तुओं के चारों ओर के स्थान को देखिए तथा विभिन्न आकार, रूप और रंगों की तुलना कीजिए।

क्या आपने कभी कागज पर लुका-छिपी का खेल खेला है? जल्द ही आप अपनी दृश्यात्मक लुका-छिपी चित्रों के माध्यम से बना सकेंगे। अपनी सामग्री व उपकरणों को एकत्रित कीजिए, क्योंकि उनका उपयोग भी चित्र बनाने में किया जाएगा।

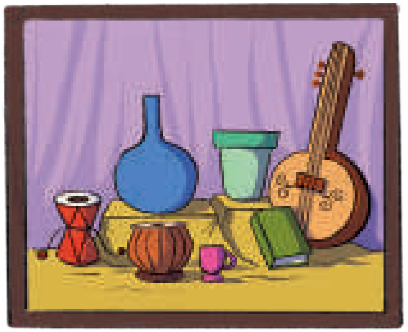

0438CH01

★ गतिविधि 1.1 चित्र को पूरा कीजिए

कुछ पशुओं ने मिलकर एक संगीत मंडली बनाई।

- दिए गए चित्र में अनुपस्थित संगीत वाद्ययंत्र और वस्तुओं को चित्रित कीजिए।
- चित्र में रंग भरकर उसे रोचक बनाइए।
- इस चित्र के लिए अपनी भाषा में एक कविता लिखिए।
- आप इस मंडली में अन्य पशु भी जोड़ सकते हैं।

★ गतिविधि 1.2 चित्रशाला

नंदलाल बोस

शिक्षक संकेत

चित्रों में वस्तुओं और संगीत वाद्ययंत्रों को ढूँढ़ने में विद्यार्थियों की सहायता कीजिए।

दिए गए चित्रों को देखिए। ये चित्र प्रसिद्ध चित्रकार नंदलाल बोस द्वारा बनाए गए हैं। इन चित्रों में उन्होंने विभिन्न व्यवसायों में लगे व्यक्तियों को चित्रित किया है।

निम्नलिखित संगीत वाद्ययंत्रों को आप किस-किस चित्र में देखते हैं? चित्र संख्या लिखिए—

तानपूरा .... ढाक ....

घटम .... सिंगा ....

नीचे उन अन्य वस्तुओं की सूची बनाइए, जिन्हें आप चित्र में देखते हैं (जैसे— उपकरण और आभूषण)।

....

....

....

....

....

(उत्तर— तानपूरा– 4, ढाक– 6, घटम– 5, सिंगा– 1)

★ गतिविधि 1.3 वस्तुओं को व्यवस्थित कीजिए तथा उनके चित्र बनाइए

- नीचे दिए गए विषयों में से किसी एक का चयन कीजिए—
  - प्रकृति भ्रमण के लिए आवश्यक वस्तुएँ (*हमारा अद्भुत संसार* की पाठ्यपुस्तक का अध्याय 4 देखिए)।
  - स्टेशनरी— पेंसिल, रबर, पुस्तकें, बैग, कैंची, गोंद आदि।
  - खेती, बढ़ईगिरी, नलसाजी, सिलाई आदि में प्रयुक्त उपकरण।
  - वस्त्र और जूते।
  - बर्तन और उपयोगी वस्तुएँ।
  - प्रसाधन के लिए प्रयुक्त वस्तुएँ— टूथब्रश, टूथपेस्ट, कंघी, नेल कटर, साबुन, तेल की बोतलें, बाल्टी, मग आदि।
- वस्तुओं को आकर्षक ढंग से व्यवस्थित कीजिए और चित्र बनाइए।
- कागज पर वस्तुओं के बड़े आकार के चित्र बनाइए।
- आप पहले वस्तुओं में रंग भरें, उसके बाद वस्तुओं के आस-पास के खाली स्थान में भी रंग भरें।

आप अपने विद्यालय में उपलब्ध किन्हीं भी तीन **संगीत वाद्ययंत्रों** को भी व्यवस्थित कर सकते हैं और उनका चित्र भी बना सकते हैं।

क्षेत्र भ्रमण— बाजार का भ्रमण कीजिए और ध्यान दीजिए कि विक्रेताओं ने वस्तुओं को कैसे व्यवस्थित और प्रदर्शित किया है। वहाँ का चित्र भी बनाइए।

चित्र बनाने का स्थान

गतिविधि 1.4 वस्तुओं के साथ दृश्य लुका-छिपी

दैनिक जीवन की वस्तुओं का उपयोग करके लुका-छिपी का खेल बनाइए—

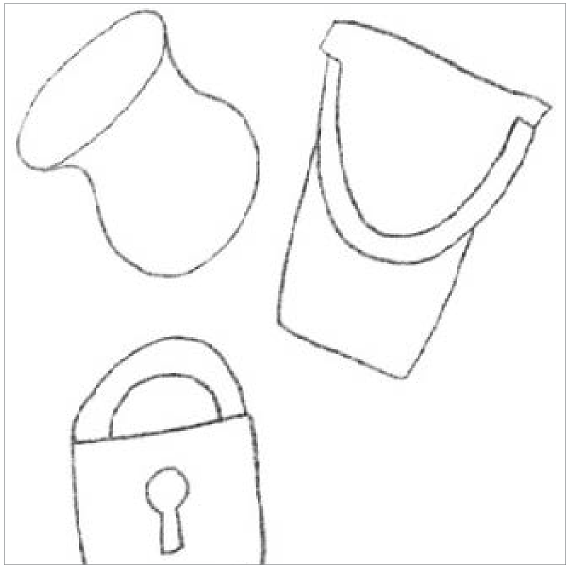

चरण 1— एक कागज पर दो या तीन वस्तुओं के चित्र बनाइए। सुनिश्चित कीजिए कि वे एक-दूसरे को न ढकें।

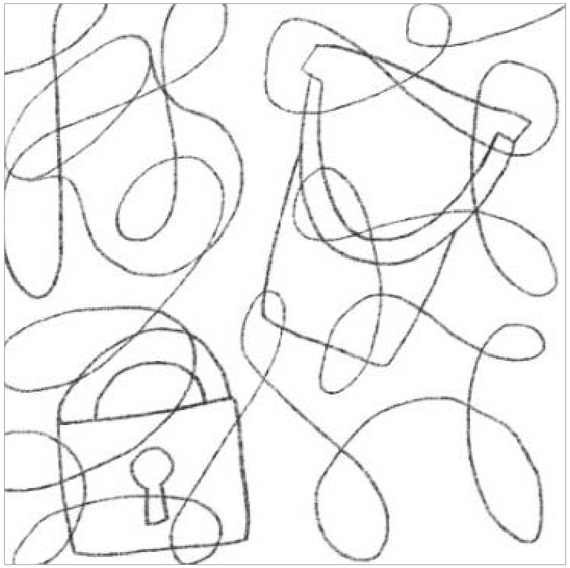

चरण 2— एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा खींचिए, जो पूरे पृष्ठ पर वस्तुओं के ऊपर इधर से उधर गुजरे। यह रेखा प्रत्येक वस्तु को छोटी-छोटी आकृतियों में विभाजित कर देगी।

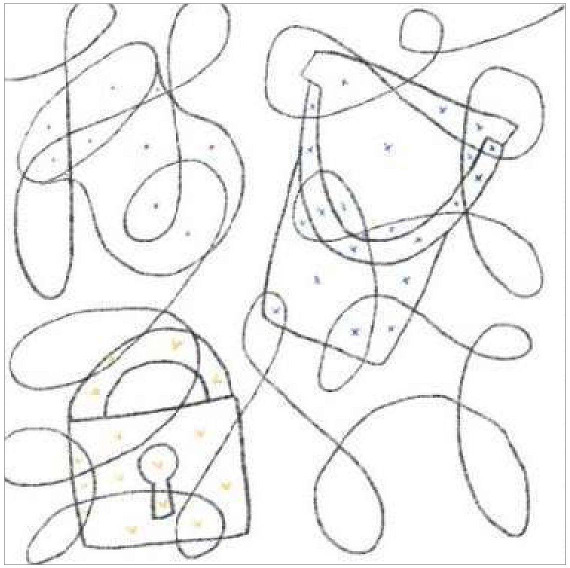

चरण 3— प्रत्येक वस्तु के लिए एक विशिष्ट चिह्न और रंग चुनिए। उदाहरण के लिए, मटके के लिए लाल बिंदु (●), बाल्टी के लिए नीले रंग में गलत (×) का चिह्न और ताले के लिए पीले रंग में जमा (+) के चिह्न का उपयोग कीजिए।

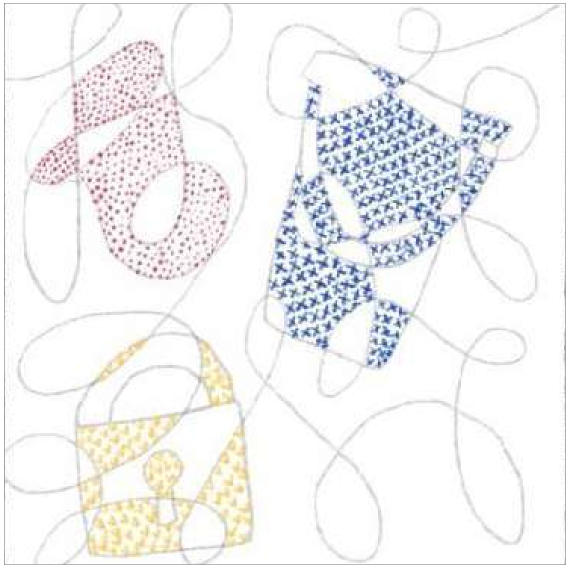

चरण 4— उन सभी आकृतियों को चिह्नित कीजिए, जो वस्तुओं को चुने गए चिह्नों तथा रंगों के साथ विभाजित करती हैं। आप प्रत्येक वस्तु के लिए एक ही रंग के हल्के और गहरे रंग की टोन (रंग छटा) को चुन सकते हैं।

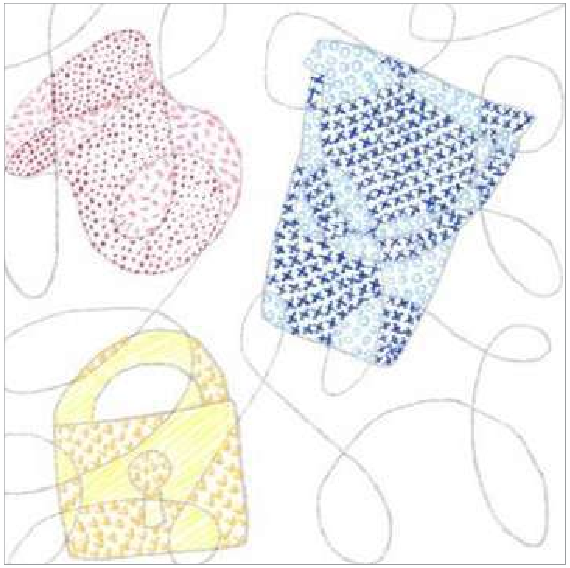

चरण 5— प्रत्येक वस्तु में चुने गए रंग में दो विभिन्न पैटर्नों के साथ आकृतियों को भरिए।

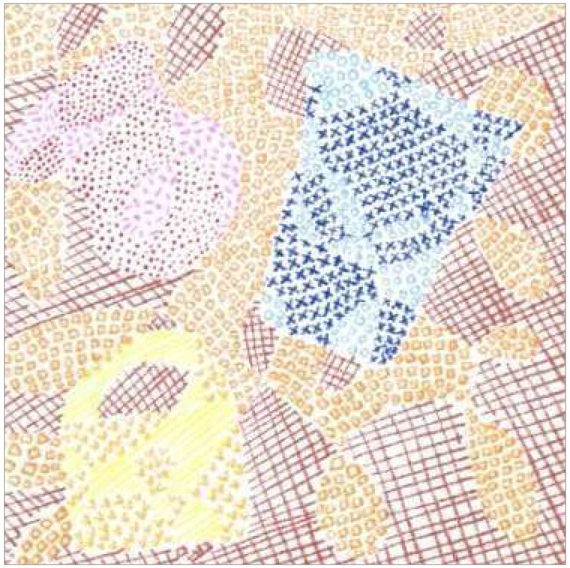

चरण 6— इसी तरह पृष्ठभूमि के लिए एक रंग चुनिए और दो विभिन्न पैटर्नों के साथ पृष्ठभूमि को भरिए।

चित्र बनाने का स्थान

क्या आपके मित्र आपके द्वारा बनाए गए चित्र में प्रदर्शित वस्तुओं को पहचान सकते हैं?

गतिविधि 1.5 डायोरामा (Diorama) बनाइए

डायोरामा एक त्रि-आयामी (3डी) कलाकृति होती है, जिसमें वस्तुओं को इस तरह व्यवस्थित किया जाता है कि एक दृश्य बन जाए।

एक पुराने डिब्बे या जूते के डिब्बे का उपयोग करके आप आसानी से डायोरामा बना सकते हैं।

- कल्पना से एक कमरे की रूपरेखा बनाइए और उसे दिए गए स्थान में चित्रित कीजिए।
- बने हुए चित्र के आधार पर कमरे में रखी जाने वाली वस्तुएँ बनाइए। उदाहरण के लिए— माचिस की खाली डिब्बियों से फर्नीचर बनाइए, पुराने कपड़ों से परदे बनाइए, अपनी कल्पना से अन्य वस्तुएँ भी बनाइए।
- अपने कमरे को सुंदर ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

माटीकला (छत्तीसगढ़)

आकलन— अध्याय 1— वस्तुओं की व्यवस्था				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	C-1.1	विभिन्न वस्तुओं के समूहों को देखकर उन्हें व्यवस्थित और चित्रित करते हैं।		
2	C-2.1	वस्तुओं को उनके स्थान, आकार, रेखाओं, आकृतियों, रंग और पैटर्नों के साथ कल्पनाशील तरीके से व्यवस्थित करके चित्रित करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 2

प्रकृति में बनावटें

पंचतंत्र, हितोपदेश और जातक कथाओं की कई कहानियाँ जंगलों में घटित होती हैं। प्रकृति में अद्भुत आकृतियाँ, रंग, रूप, पैटर्न और बनावटें होती हैं।

बनावटों को हम स्पर्श करके अनुभव कर सकते हैं, जैसे— खुरदरी, चिकनी, उभरी, मुलायम या कुछ और बनावटें।

इस अध्याय में आप अपने आस-पास प्रकृति में विभिन्न बनावटों की खोज करेंगे।

इसके बाद आप अपना कल्पवृक्ष यानी काल्पनिक वृक्ष बनाएँगे और कुछ नई तकनीकें सीखेंगे, जैसे—

- **फ्रोटाज (Frottage)**— बनावट वाली सतह पर रगड़कर उसका पैटर्न बनाना।
- **कोलाज (Collage)**— पत्तियाँ, कागज आदि को काटकर सतह पर चिपकाना।
- **लीफ प्रिंटिंग (Leaf Printing)**— पत्ती की सतह पर रंग लगाकर उसे कागज पर दबाना।

0438CH02

गतिविधि 2.1 कल्पवृक्ष की कल्पना कीजिए

अपने आस-पास के पेड़ों को देखिए या पेड़ों के चित्रों को देखिए और निम्नलिखित बातों पर चर्चा कीजिए—

- उनके आकार— क्या वे लंबे हैं, बड़े हैं या छोटे?
- उनके अंग— तना, शाखाएँ, पत्तियाँ, फूल, फल, काँटे, जड़ें आदि।
- आपको किस प्रकार की रेखाएँ, आकृतियाँ, रंग और बनावटें दिखाई देती हैं?

कल्पना कीजिए कि आप एक जादुई जंगल में हैं, जहाँ आप अपना **कल्पवृक्ष** या **इच्छा पूरी करने वाला पेड़** बना सकते हैं!

पेड़ हमें बहुत कुछ देते हैं, जैसे— साँस लेने के लिए ऑक्सीजन, फल, छाया और भी बहुत कुछ।

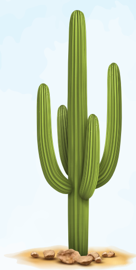

- आप किस प्रकार का पेड़ बनाना चाहेंगे?
- आपके द्वारा बनाए जाने वाला यह पेड़ किसी भी आकार, रूप या रंग का हो सकता है।
- अपने पेड़ के लिए दो-तीन तरह के स्केच बनाइए।

क्या आप जानते हैं?

प्राचीन ग्रंथों में कल्पवृक्ष को एक ऐसा वृक्ष बताया गया है जो इच्छाएँ पूरी करता है।

दिए गए स्थान पर आप अपने वृक्ष का स्केच बनाइए।

★ गतिविधि 2.2 फ्रोटाज

किसी सतह पर रगड़कर उसकी बनावट को उभारने की प्रक्रिया को **फ्रोटाज** कहा जाता है।

इस कार्य के लिए आप पेंसिल, रंगीन पेंसिल या मोम रंग (*क्रेयॉन*) का उपयोग कर सकते हैं।

इस गतिविधि के लिए सामग्री एकत्रित कीजिए।

अलग-अलग बनावटों का स्पर्श करें और जानें—

- बाहर जाकर अलग-अलग प्रकार की सतहों को स्पर्श करें, जैसे— मिट्टी, कंकड़, पत्थर, पत्तियाँ, फूल, पेड़ों की छाल आदि।
- क्या पेड़ की छाल की बनावट पत्ते जैसी लगती है?
- विभिन्न बनावटों की रेखाओं, आकृतियों और रंगों को ध्यान से देखिए।
- हर बनावट से बनने वाले रेखाचित्रों की तुलना कीजिए।
- पत्तियों की रेखाओं को ध्यान से देखिए, जैसा कि *हमारा अद्भुत संसार* पुस्तक के अध्याय 4 में दिखाया गया है।

फ्रोटाज बनाने के लिए अगले पृष्ठ पर दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए।

फ्रोटाज बनाने की प्रक्रिया

1. चुनी हुई सतह पर कागज का पन्ना रखिए।
2. पन्ने को सतह पर पकड़े रहें और उस पर रंगीन पेंसिल या मोम रंग घिसें।
3. जो कलाकृति है, उसे ध्यान से देखिए।
4. और स्पष्टता से प्राप्त करने के लिए बलपूर्वक घिसें।
5. पन्ने को अलग-अलग सतहों पर रखिए और इन्हीं चरणों को दोहराइए।

अपनी सभी फ्रोटाज कलाकृतियाँ एकत्रित कीजिए, जिससे अगली गतिविधि में उनका उपयोग किया जा सके।

★ गतिविधि 2.3 तने व शाखाओं का कोलाज

किसी भी सतह पर विभिन्न सामग्रियों को चिपकाकर कलाकृति बनाने की प्रक्रिया को **कोलाज** कहा जाता है।

कोलाज बनाने की प्रक्रिया

1. कागज के पन्नों को जोड़कर एक बड़ी सतह तैयार कीजिए। आप पुराने समाचार-पत्रों या बड़े आकार के बेकार कपड़ों का भी उपयोग कर सकते हैं।
2. प्रारंभिक रेखाचित्रों (स्केच) के आधार पर तना और शाखाएँ बनाकर अपने कल्पवृक्ष की रूपरेखा बनाइए।
3. फ्रोटाज कलाकृतियों को लीजिए (आप विभिन्न बनावटों वाली सामग्री भी इसमें सम्मिलित कर सकते हैं)।
4. अपने मित्रों के साथ साझा कर और आदान-प्रदान करके अपने फ्रोटाज कार्य से बनी बनावटों का चयन कीजिए।
5. तने और शाखाओं की रूपरेखा में फ्रोटाज कार्य को व्यवस्थित कीजिए और चिपकाइए।

शिक्षक-संकेत

यह गतिविधि 4 से 5 विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूहों में भी करवाई जा सकती है।

गतिविधि 2.4 पत्तों की छाप

कोलाज कलाकृति पूर्ण हो जाने के पश्चात, पत्तों से वृक्ष की डाल को सजाइए।

पत्तों की छाप लेने की प्रक्रिया

1. विभिन्न प्रकार की आकृतियों, आकार और खुदरेपन वाले यानी जिन पर संरचना (टेक्स्टचर) होती है, उन पत्तों को एकत्र कर लीजिए।
2. रंग और पानी को मिलाकर एक मिश्रण तैयार कर लीजिए।
3. अपनी उँगली, स्पंज अथवा ब्रश से रंग के मिश्रण को पत्ते की सतह पर लगाइए।
4. रंग से लिपे पत्ते को अपने पृष्ठ पर उचित जगह पर रखिए और बलपूर्वक दबाइए।
5. सावधानी से पत्ते को पृष्ठ से अलग कर लीजिए।
6. इसी प्रक्रिया को भिन्न पत्तों और रंगों का उपयोग करते हुए दोहराइए।
7. पत्तों की छाप लेते हुए विभिन्न आकृतियों और पैटर्नों का निर्माण कीजिए।

अपने वृक्ष को पूरा कीजिए और अपने साथियों को वरदान माँगने के लिए आमंत्रित कीजिए।

शिक्षक-संकेत

यह प्रक्रिया 4 से 5 विद्यार्थियों के छोटे-छोटे समूहों में भी की जा सकती है।

आकलन— अध्याय 2— प्रकृति में बनावटें				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	C-1.1	वृक्षों में पाए जाने वाली आकृतियों एवं बनावटों को दर्शाते हैं।		
2	C-2.1	कार्य को पूरा कर प्रदर्शित करने से पूर्व प्रारंभिक चित्र बनाते हैं एवं उसमें सुधार करते हैं।		
3	C-3.2	कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 3

जलीय जीवन

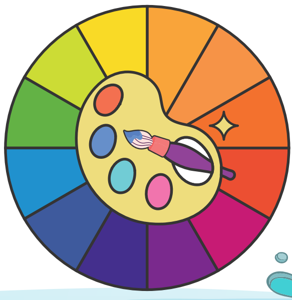

जल को अंग्रेजी में एक्वा कहा जाता है। इसी कारण मछलीघर को 'अक्वेरियम' कहते हैं। 'एक्वा' का उपयोग कुछ विशेष रंगों के नामांकन में भी किया गया है; जैसे कि एक्वा ब्लू या एक्वा ग्रीन।

इस अध्याय को पढ़कर अपनी कल्पना को उड़ान दीजिए।

विभिन्न जलीय जीवों को चित्रित करते हुए उनकी विशेष आकृतियों और रंगों को देखिए।

रेखाओं को घुमाकर या मोड़कर जीव-जंतुओं की आकृतियाँ बनाइए और डिजाइन तैयार कीजिए।

जलीय जीवों से मोबाइल कही जाने वाली लटकती कलाकृतियाँ बनाइए, जो हिलती-डुलती हों।

अब देर किस बात की? अपनी रचनात्मकता को दर्शाते हुए कला के गहरे समुद्र में छपाक से गोता लगाइए।

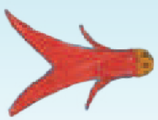

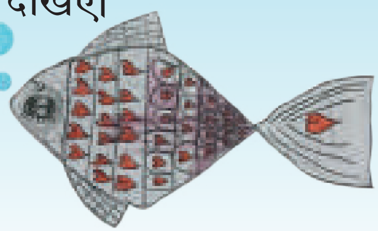

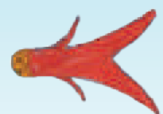

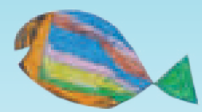

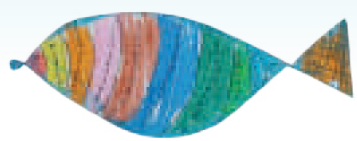

0438CH03

गतिविधि 3.1 बूँदें, तरंगें और लहरें

आप किसी सागर, समुद्र, नदी या तालाब के किनारे बैठकर कैसा अनुभव करते हैं?

....

....

....

....

जल की बूँदें, तरंगें और लहरें किस प्रकार की रेखाएँ और पैटर्न बनाती हैं?

....

....

....

....

इन पैटर्न को नीचे दिए गए स्थान में चित्रित कीजिए।

गतिविधि 3.2 शंख एवं शल्क

किन्हीं तीन या अधिक जलीय जंतुओं के चित्र बनाइए।

उन जंतुओं पर दिखाई देने वाली कलाकृतियों या पैटर्न को अपने चित्र में सम्मिलित कीजिए।

इन पैटर्नों की आपस में तुलना कर उनके बीच समानताओं और असमानताओं पर चर्चा कीजिए।

★ गतिविधि 3.3 जलीय प्रतिबिंब

जब आप दर्पण में देखते हैं तो क्या आपका प्रतिबिंब बिल्कुल आपके जैसा नहीं दिखाई देता?

नीचे दाईं ओर दिए गए चित्र को देखिए—

- पानी में आपको किसका प्रतिबिंब दिखाई दे रहा है?
- प्रतिबिंब का रेखांकन करते हुए उस जंतु का चित्रण कीजिए।
- अपने चित्र में रंग भरिए।

एक अन्य कागज पर एक और चित्र बनाइए, जिसमें पंचतंत्र का शेर कुएँ में झाँक रहा हो।

- कुएँ में इस शेर का प्रतिबिंब भी बनाइए।

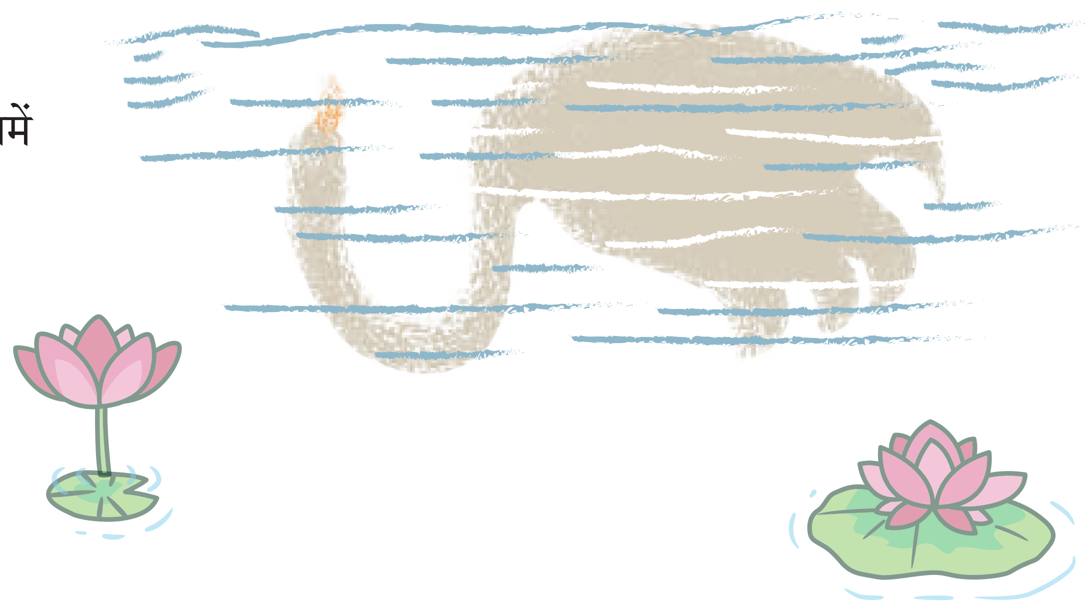

पंचतंत्र की कथा के उस दृश्य का चित्र बनाइए, जिसमें शेर कुएँ में अपना प्रतिबिंब देखता है।

गतिविधि 3.4 जलगत व्यवसाय

कल्पना कीजिए कि जलीय संसार में भी अलग-अलग प्रकार के व्यवसाय होते, जैसे— बस चालक, शिक्षक, वकील, बढ़ई, रसोइया, चिकित्सक, अभिनेता आदि।

कुछ इस तरह से आप आरंभ कर सकते हैं—

शिक्षक केकड़ा

चिकित्सक मछली

रसोइया कछुआ

अभिनेता मगरमच्छ

फैशन मॉडल ऑक्टोपस

वकील शार्क

अन्य व्यवसाय या जलीय जीव-जंतुओं को चुनिए और उनके चित्र बनाइए।

इस स्थान पर आप जलगत व्यवसायों को चित्रित कीजिए।

गतिविधि 3.5 कोलम

तमिलनाडु के घरों में भूमि पर बनाए जाने वाले रेखाचित्र को 'कोलम' कहा जाता है। आपके क्षेत्र अथवा भाषा में भूमि पर बनाए जाने वाले रेखाचित्र को किस नाम से जाना जाता है?

कोलम को पत्थर के चूर्ण अथवा चावल के आटे या चॉक की सहायता से बनाया जाता है।

- बिंदुओं और रेखाओं को जोड़कर मछली का कोलम बनाने का अभ्यास कीजिए।
- बिंदुओं और रेखाओं की सहायता से अन्य जलीय जंतुओं के चित्र बनाइए।

कागज पर कोलम बनाने का अभ्यास करने के पश्चात उन्हें भूमि पर बनाइए।

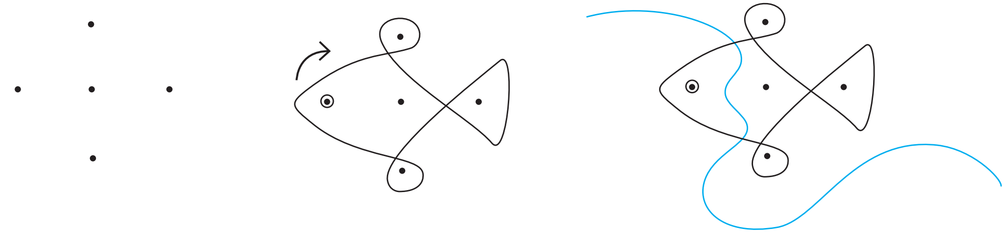

दाईं ओर दिए गए खाली स्थान में एक साँप का कोलम बनाइए।

- दिए गए निर्देशों का पालन कीजिए।
- **एक-दूसरे पर आने वाली रेखाओं** को ध्यान से देखिए।
- इसके शरीर पर कोई सुंदर **पैटर्न** बनाइए और उसमें **रंग** भरिए।

एक मोटी रस्सी अथवा धागे का उपयोग करके कोलम बनाइए।

- दिए गए चित्र को देखिए।
- अपने कार्य को आकर्षक बनाने के लिए रंगीन धागों और रस्सियों का उपयोग कीजिए।
- आप अपने उन मित्रों की सहायता कीजिए, जिन्हें कोलम में कलाकृति बनाने में कठिनाई आ रही हो।

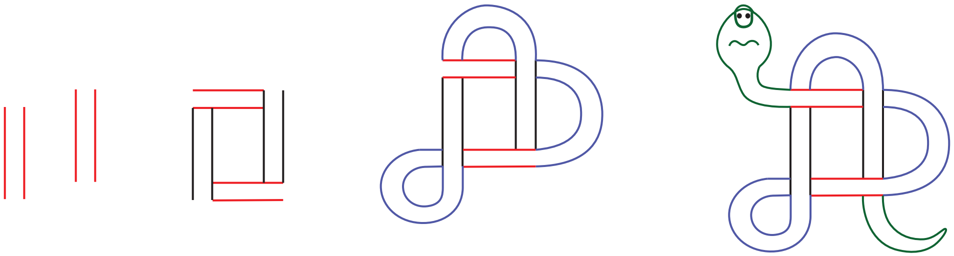

गतिविधि 3.6 मोबाइल— एक हिलती-डुलती कलाकृति

क्या आपको ऐसा लग रहा है कि इस गतिविधि का संबंध मोबाइल फोन से है? नहीं! ऐसा नहीं है।

मोबाइल एक प्रकार की लटकाए जाने वाली सजावटी कलाकृति है जो कि हिल-डुल सकती है।

दिए गए चित्रों को देखकर पशुओं के रूपों, की हिलती-डुलती आकृतियाँ बनाइए।

अपने मोबाइल को अनोखा बनाने के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग कर सकते हैं।

आप ऑरिगामी कछुए भी बना सकते हैं। इसे बनाने के निर्देश आपकी पाठ्यपुस्तक हमारा अद्भुत संसार के अध्याय चार में दिए गए हैं। आप मछली, मेंढक अथवा अन्य जीव-जंतुओं को भी बनाकर अपनी मोबाइल कलाकृति में जोड़ सकते हैं।

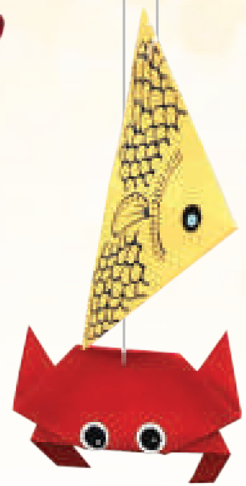

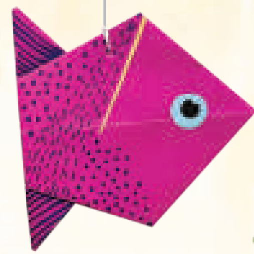

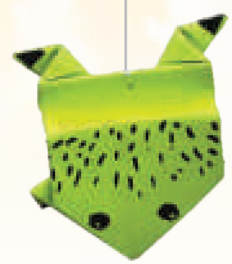

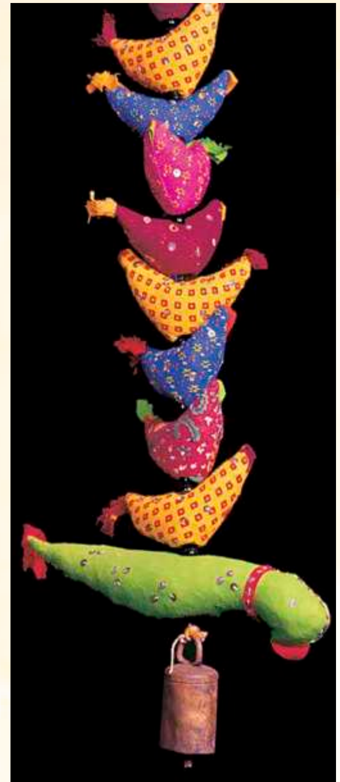

धान झालर

धान की बालियों से निर्मित झालर नामक कलाकृति जिसको चिरई-चुगनी (फाता)कहते हैं, यह सजावट के साथ-साथ ग्रीष्म ऋतु में चिड़ियों के भोजन के काम भी आता है।

छिंद कलाकृतियां

बच्चों एवं बड़ों के द्वारा छींद की पत्तियों से विभिन्न कलाकृति बनाई जाती है। छत्तीसगढ़ में विवाह के अवसर पर दूल्हा - दुल्हन को जो मऊर (मुकुट) पहनाया जाता है, वह छींद की पत्तियों से ही बनी होती है।

आकलन— अध्याय 3— जलीय जीवन				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	**दक्षताएँ**	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
1	C-1.1	जल एवं जीव-जंतुओं में पाए जाने वाले पैटर्न तथा समरूपता को दर्शाते हैं।		
2	C-2.1	भिन्न आकार, रूप एवं पैटर्नों का उपयोग कर जीव-जंतु या काल्पनिक कृतियाँ बनाते हैं।		
3	C-3.2	ऑरिगामी गतिविधि में कागज को मोड़ने के सभी चरणों का पालन करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 4 व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ

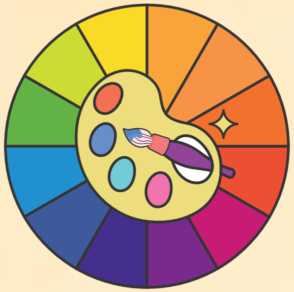

वह समय याद कीजिए जब आप किसी भीड़ वाले स्थान पर थे और आपके आस-पास सभी लोग भिन्न दिशाओं में जा रहे थे। प्रत्येक व्यक्ति की मुद्रा या हाव-भाव और उनका अंग-विन्यास हमें अनूठा लग सकता है।

अध्याय 1 में नंदलाल बोस की दी गई कलाकृतियों में लोगों की विभिन्न मुद्राओं और गतियों को देखा जा सकता है।

इस अध्याय में आप ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग कर लोगों को अलग-अलग गतियों में या काम करते हुए दर्शा पाएँगे।

पारंपरिक भारतीय खिलौनों से प्रेरित होकर आप खेलने के लिए अनेक त्रि-आयामी (3डी) ज्यामितीय खिलौने भी बनाएँगे, जैसे कि एक नृत्य करती गुड़िया।

अब आप कल्पना करने, कुछ नया रचने और आनंद लेने के लिए तैयार हो जाइए।

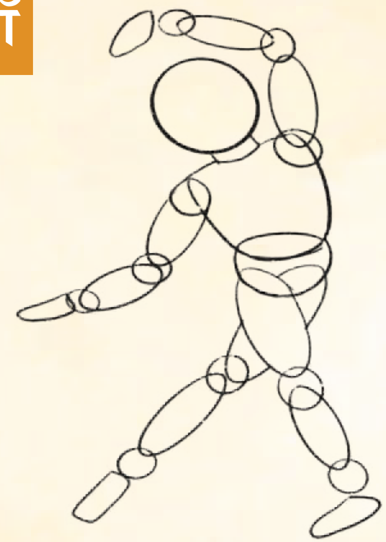

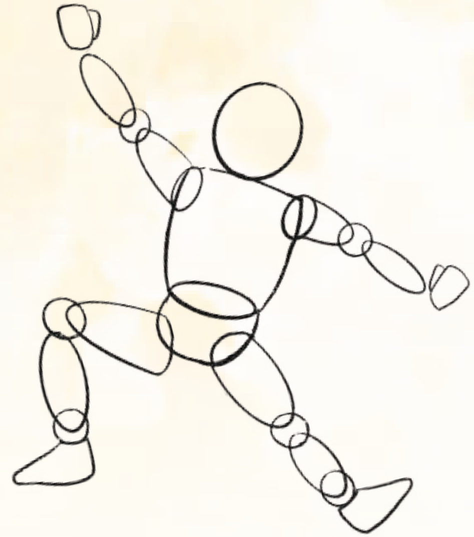

0438CH04

गतिविधि 4.1 दृश्य पत्रिका

पत्रिका अथवा पुस्तिका में आप अपने विचार और टिप्पणियाँ लिख सकते हैं। इसमें आप चित्रण भी कर सकते हैं।

कागज के कुछ पृष्ठ तैयार रखिए।

आइए एक खेल खेलें—

- अपने किसी एक मित्र से कहिए कि वह कक्षा में सामने जाकर खड़ा हो जाए।
- उससे दैनिक क्रियाओं जैसे कि स्नान करना, खेल खेलना, भोजन करना आदि का अभिनय करने के लिए कहिए।
- जब वह यह क्रिया कर रहा हो तो देखिए कि उसका शरीर किस प्रकार से हिलता और मुड़ता है।
- जैसे ही आपको कोई मुद्रा रोचक लगे, आप तभी बोलें— "स्टैचू"!

एक मिनट में रेखाचित्र बनाने का प्रयास कीजिए।

यह आवश्यक नहीं है कि आपका रेखाचित्र पूरी तरह से सही हो। यदि वह अधूरा या असामान्य प्रतीत होता है तो चिंता मत कीजिए।

नीचे दिए गए स्थान पर एक मिनट में कोई रेखाचित्र बनाइए।

गतिविधि 4.2 शारीरिक गतिविधियों का चित्रण

जब लोग चल रहे हों या किसी भी कार्य में लगे होने के कारण गतिमान हों तो आप उनका चित्र कैसे बनाएँगे?

जब आप ध्यानपूर्वक किसी व्यक्ति के शरीर को देखते हैं तो आप पाते हैं कि यह गोलाकार और बेलनाकार आकृतियों से बना हुआ है।

इस पृष्ठ पर दिखाए गए चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए। पूर्ण शरीर को अपूर्ण वृत्तों और अंडाकार आकृतियों का उपयोग करके चित्रित किया गया है।

लोगों की शारीरिक मुद्राओं को ध्यानपूर्वक देखिए और उन्हें बनाइए।

- ऐसी आकृतियों का उपयोग करके उनकी मुद्राओं और गतियों को दर्शाइए।
- नृत्य में आप जिन स्थितियों और मुद्राओं का अभ्यास करते हैं, उन्हें बनाइए।
- जितना संभव हो, उतने कार्यों का रेखाचित्र बनाने का प्रयास कीजिए।

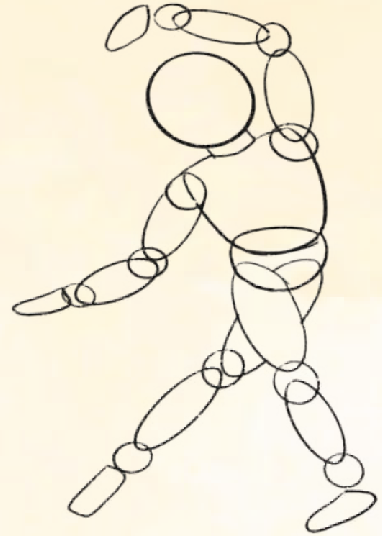

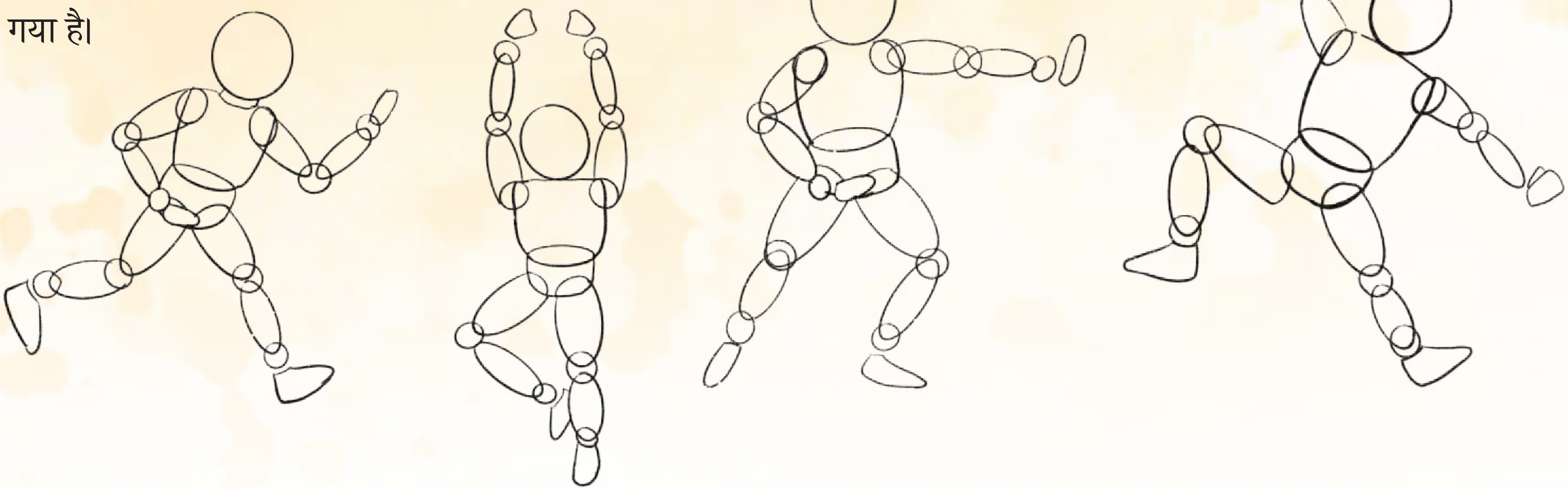

आकृतियाँ बनाने के लिए स्थान

गतिविधि 4.3 खिलौने

भारत के प्रत्येक क्षेत्र में खिलौने बनाने की अपनी अनोखी परंपरा रही है। ये खिलौने मिट्टी, ऊन, कपड़े, जूट, ताड़ के पत्ते, धातु अथवा लकड़ी से बनाए जाते हैं।

उन खिलौनों के विषय में चर्चा कीजिए, जिनके साथ आप खेले हों। यह भी बताइए कि उन्हें निर्मित करने में किस-किस सामग्री का उपयोग किया गया होगा।

क्या आप जानते हैं?

चन्नापटना, कर्नाटक में स्थित एक प्रसिद्ध नगर है जिसे खिलौनों के शहर के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ लकड़ी के रंगीन खिलौने बनाने की परंपरा है। इनमें सामान्यतः बेलनाकार, गोलाकार, घनाकार और घनाभ जैसी सरल आकृतियों के खिलौने होते हैं।

भारत के अलग-अलग भागों में मिलने वाली भिन्न-भिन्न प्रकार की गुड़िया देखिए।

- गुड़िया बनाने की सामग्री को ध्यान से देखिए एवं चर्चा कीजिए।
- खिलौनों की भूमिका पर चर्चा कीजिए।
- उनसे कहानियाँ बनाइए।
- आप उनसे किस प्रकार खेलेंगे?

★ गतिविधि 4.4 नृत्य करती कागजी गुड़िया

सामग्री

- एक पतली लकड़ी अथवा झाड़ू की सींक
- सादा अथवा रंगीन ए5 आकार का कागज लगभग ए4 का आधा
- गोंद
- पेन या स्केच पेन
- मोम रंग (क्रेयॉन)/पानी वाले रंग (वाटर कलर) (यह वैकल्पिक है)

नीचे दिए गए चरणों का पालन करते हुए अपने खेलने के लिए एक नृत्य करने वाली गुड़िया बनाइए।

चरण 1— कागज पर आवश्यक आकार की आकृतियाँ बनाइए। आप चाहें तो इन्हें बड़ा भी बना सकते हैं।

चरण 2— यदि आप सादा कागज उपयोग कर रहे हैं तो आकृतियों में रंग भरिए।

चरण 3— आकृतियों को काट लीजिए। अब प्रत्येक आकृति से शरीर के अंग बनाइए।

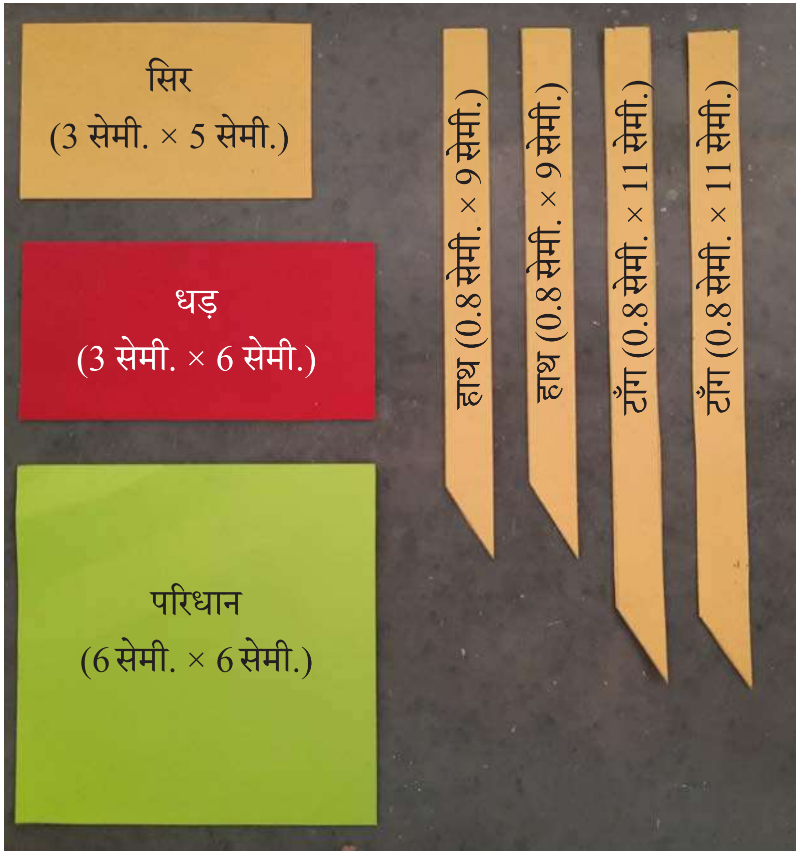

चरण 4— छोटे आयत को शंकु (कोन) के आकार में लपेटकर उसके किनारे को चिपकाइए और गुड़िया का सिर बनाइए। आँखें, नाक, मुँह और शेष चेहरे को भी बनाइए।

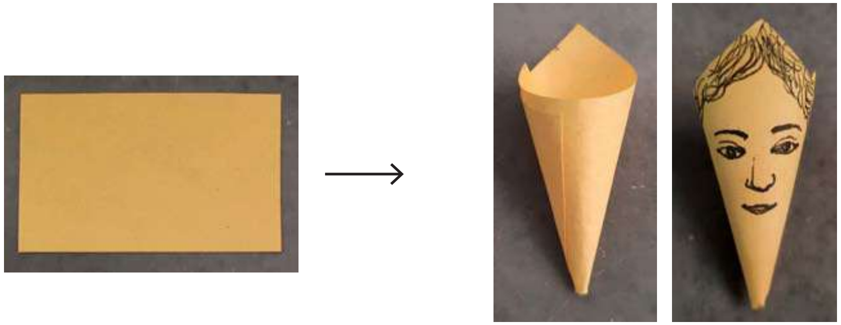

चरण 5— बड़े आयत को बेलनाकार (सिलेंडर) में लपेटकर गुड़िया का धड़ बनाइए। किनारों को गोंद की सहायता से चिपका लीजिए।

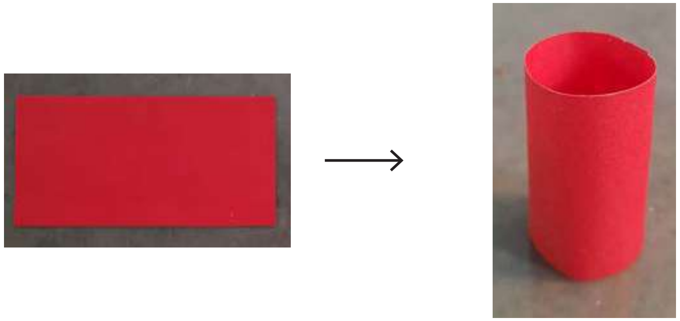

चरण 6— परिधान (कॉस्ट्यूम) बनाने के लिए इन चरणों का पालन कीजिए। परिधान के संग हाथों और पैरों की स्थिति में भी परिवर्तन कीजिए, जिससे कि प्रत्येक गुड़िया अन्य से अलग दिखे।

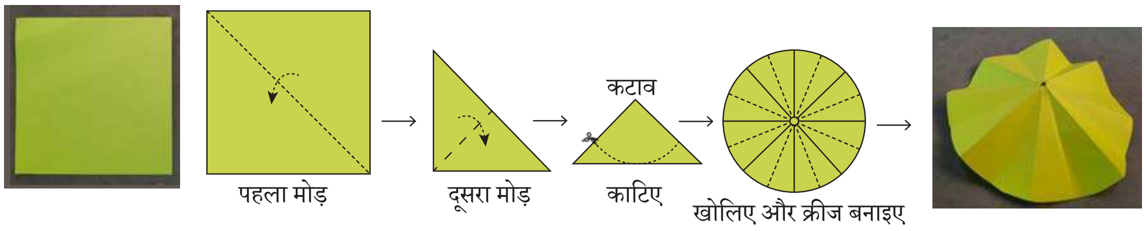

चरण 7— गुड़िया को लकड़ी पर जोड़ लीजिए।

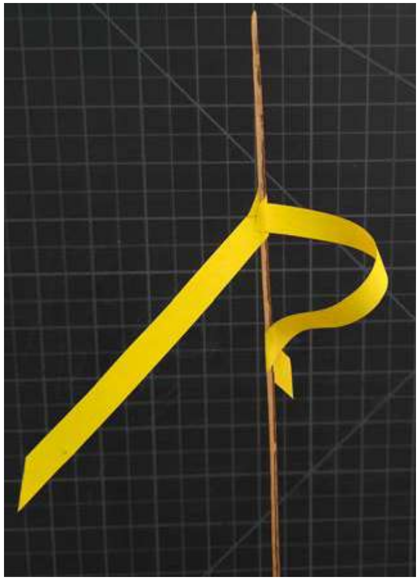

प्रत्येक पैर के एक सिरे को लकड़ी पर लपेटिए तथा चिपका लीजिए। इसके बाद इसे सजाइए।

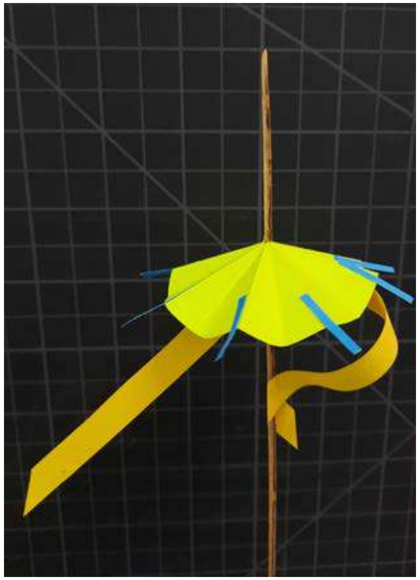

धड़ के ऊपर परिधान इस प्रकार रखिए, जिससे वह पैरों को ढक लें। इसके बाद इसे सजाइए।

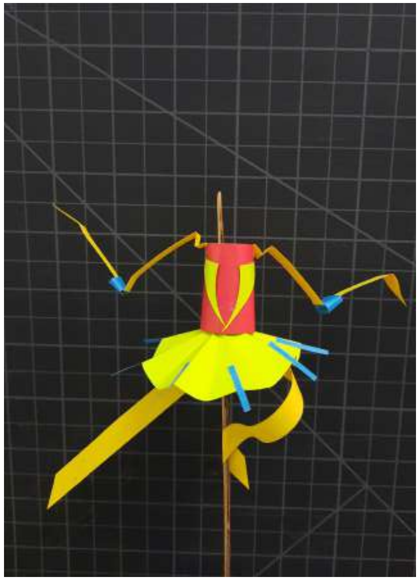

धड़ पर हाथ चिपकाइए। कंधों, कोहनियों एवं कलाइयों पर मोड़ बनाइए।

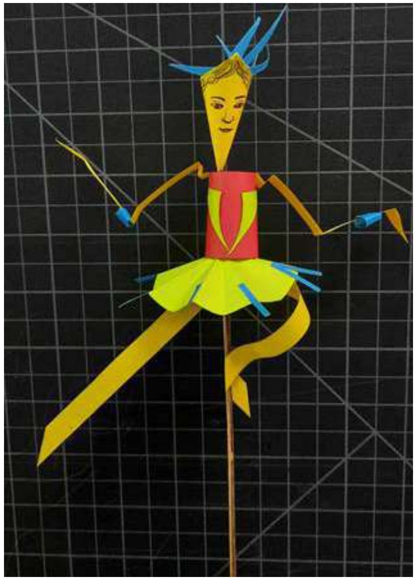

गुड़िया के मुख को जोड़िए और उसे सजाइए।

अब आप गुड़िया से नृत्य कराइए और उसके साथ खेलिए।

आकलन— अध्याय 4— व्यक्तियों द्वारा की जाने वाली गतिविधियाँ				
पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	C-1.1	मूल आकृतियों का उपयोग करके विभिन्न मुद्राओं और क्रियाओं में मानव शरीर को चित्रित करते हैं।		
2	C-2.1	कागज से सरल त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाते हैं। (शंकु, बेलनाकार आदि)		
3	C-3.2	कागज की गुड़िया बनाने हेतु निर्देशों का क्रम से पालन करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

योगात्मक आकलन

	आकलन हेतु गतिविधि (उदाहरण)	आकलन हेतु मापदंड
व्यक्तिगत	अपनी कल्पना से एक चित्र बनाइए, जो किसी भीतरी या बाहरी दृश्य को दर्शाता हो। इस चित्र में निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** का संयोजन अवश्य होना चाहिए— • किसी भी कार्य में लगे व्यक्ति या पशु • वस्तुएँ • पेड़-पौधे	• विभिन्न प्रकार की रेखाओं, आकृतियों, रंगों, रूपों, पैटर्न एवं बनावटों का उपयोग करते हैं। • उपयुक्त सामग्री तथा उपकरणों का चयन एवं उपयोग करते हैं।
समूह	अपनी कक्षा के एक भाग को सजाने एवं प्रदर्शित करने के लिए चुनिए। • विषय सोचिए • सजावट और प्रस्तुति के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग कीजिए।	• सहयोगात्मक रूप से काम करते हैं और साथियों के साथ विचारों को भी साझा करते हैं।

रंगमंच

प्रिय शिक्षको,

बच्चों को नाटक और कहानियाँ बहुत पसंद आती हैं। इस उम्र में उनकी कल्पनाशक्ति तथा रचनात्मकता अद्‌भुत होती है। यह पाठ्यपुस्तक इसी बात को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। इसका उद्‌देश्य यह है कि पूरी प्रक्रिया आनंददायक रहे एवं बच्चों को कुछ याद रखने या रटने का तनाव न हो।

हम खेलों एवं गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को रंगमंच की नई-नई तकनीकों तथा कौशलों से परिचित कराते हैं। शिक्षक के रूप में हमारा कार्य एक सहायक वातावरण प्रदान करना है, जहाँ बच्चे स्वयं खोजबीन कर सकें और उन पर किसी विशेष बात के लिए बल न दिया जाए। आइए, सहभागिता एवं स्वतंत्र कल्पना को प्रोत्साहित करें। सबसे महत्वपूर्ण बात— हम सभी मिलकर आनंद लें!

कुछ महत्वपूर्ण बिंदु ध्यान रखने योग्य—

विदूषक पारंपरिक भारतीय रंगमंच का एक विशेष पात्र है। संस्कृत नाटकों में इस पात्र का उपयोग दृश्यों को जोड़ने के लिए प्रायः हास्य और चंचलता के माध्यम से किया जाता था। यह पात्र परिस्थिति के अनुसार कोई भी रूप धारण कर सकता था तथा उस पर बोल सकता था। यहाँ इसे बच्चों का मित्र माना गया है, जो उन्हें रंगमंच की अवधारणाओं एवं विचारों से परिचित कराता है तथा एक गतिविधि से दूसरी गतिविधि की ओर ले जाते हुए उन्हें आवश्यक जानकारी देता है। बच्चों के लिए महत्वपूर्ण बातें एवं सीख विदूषक के माध्यम से कही जाती हैं।

1. रंगमंच की कक्षाओं के लिए एक हवादार एवं पर्याप्त बड़ा कमरा उपलब्ध कराया जाए, जिससे विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से चलने-फिरने की सुविधा मिले। यह कमरा साफ-सुथरा हो और उसमें कोई भी बाधा या नुकीले किनारे वाली वस्तुएँ न हों, जिससे चोट लगने का भय हो।
2. कक्षा का आरंभ प्रार्थना एवं पिछली कक्षा में जो कुछ सीखा उसकी पुनरावृत्ति से कीजिए। आप तीसरी कक्षा की पाठ्यपुस्तक में दी गई प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं।

कक्षा व्यवस्था		
5 मिनट में प्रार्थना एवं पुनर्कथन	30 मिनट में कक्षा में आयोजित गतिविधियाँ	5 मिनट का सर्कल टाइम

3. शिक्षक को विद्यार्थियों से गतिविधियाँ करवाने से पहले स्वयं करके दिखानी चाहिए।
4. शिक्षक गतिविधियों के लिए केवल उदाहरण दे सकते हैं। यह आवश्यक है कि विद्यार्थी स्वयं सोचें एवं अपनी कल्पनाओं या परिस्थितियों के अनुसार विचार प्रस्तुत करें। गतिविधियों में सहायता हेतु शिक्षक के लिए अनेक उदाहरण क्यूआर कोड में दिए गए हैं।
5. कक्षा की आवश्यकता के अनुसार शिक्षक किसी भी गतिविधि को जितनी बार चाहें दोहरा सकते हैं।
6. विद्यार्थियों को नाटक देखने के लिए प्रोत्साहित कीजिए। अभिभावकों को यह सुझाव दिया जा सकता है कि वे विद्यार्थियों को जीवंत रंगमंच प्रस्तुतियाँ दिखाने ले जाएँ।
7. विद्यार्थियों के नाटक प्रस्तुत करने वाले समूहों को विद्यालय में आमंत्रित करना या नाटक देखने के लिए शैक्षणिक भ्रमण आयोजित करना और कलाकारों से संवाद कराना विद्यार्थियों को प्रेरित करने में सहायक होगा।

रंगमंच आकलन

रंगमंच बच्चों के लिए हमेशा एक सकारात्मक और आनंददायक अनुभव रहा है। अत: यह आवश्यक है कि जैसे वे कक्षाओं का आनंद लेते हैं, उसी प्रकार आकलन भी आनंदपूर्ण होना चाहिए, न कि आकलन उन्हें परीक्षा से जुड़ा तनाव या चिंता लगने लगे। सभी आकलन गतिविधियों पर आधारित होते हैं। आकलन करते समय निम्नलिखित बिंदुओं का ध्यान रखें—

1. प्राप्त योग्यता एवं कौशल पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।
2. यहाँ कोई उत्तर सही या गलत नहीं होता।
3. अंतिम निष्कर्ष या प्रस्तुति ही एकमात्र मानदंड नहीं है। इसके साथ-साथ उस प्रस्तुति के पीछे का प्रयास, विचार और प्रक्रिया भी महत्वपूर्ण है, जैसे—
   – ज्ञान का उपयोग
   – प्रयास और सहभागिता
   – रचनात्मकता और प्रस्तुति
   – सामूहिक कार्य और सहयोग
4. आत्म-चिंतन को प्रोत्साहित कीजिए और इसे शिक्षकों के लिए एक प्रतिक्रिया के रूप में लीजिए। (रूब्रिक में दिए गए अंतिम स्तंभ के अनुसार)
5. विशेष रूप से संकोची या झिझक अनुभव करने वाले बच्चों के लिए प्रेरक और सहायक वातावरण बनाइए।
6. पुस्तक के आरंभ में दिए गए समय नियोजन और आकलन अनुभाग को ध्यान से पढ़िए, जिससे बेहतर रूप से स्पष्टता मिले।

रचनात्मक आकलन	योगात्मक आकलन
यह एक सतत प्रक्रिया है जो कक्षा की पूरी अवधि के दौरान चलती रहती है। अलग से परीक्षा के लिए दिन निर्धारित नहीं होता। इसमें सम्मिलित हैं—	यह आकलन वर्ष के अंत में एक निर्धारित दिन पर किया जाता है। यह पूरी तरह गतिविधि आधारित होता है। प्रश्न-पत्र और लिखित परीक्षा से बचा जाना चाहिए।
1. **सर्कल टाइम**— विद्यार्थी अपनी बातें स्वतंत्र रूप से साझा करते हैं। शिक्षक प्रत्येक विद्यार्थी की बातों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं और उन पर टिप्पणी लिखते हैं।	1. गतिविधियों के उदाहरण पुस्तक के अंत में दिए गए हैं।
2. **अध्याय के अंत में दिया गया रूब्रिक**— आकलन के लिए इस रूब्रिक का उपयोग किया जाए।	2. आकलन में रूब्रिक के आधार पर अंक दिए जाएँ।
3. **शिक्षक का अवलोकन**— कक्षा में बच्चों की गतिविधियों, सहभागिता और व्यवहार को आधार मानकर शिक्षक अवलोकन करें।	3. समग्र प्राप्तांक में बच्चे के आत्म-चिंतन को भी सम्मिलित किया जाए।

स्वागतम् मेरे प्यारे बच्चो!

गत वर्ष आप सभी को रंगमंच की यात्रा पर ले जाना बहुत आनंददायक था। मैं लौटने की प्रतीक्षा नहीं कर सकता! आप में से जो लोग पिछले वर्ष वहाँ नहीं थे, उनके लिए मैं अपना परिचय दे देता हूँ। मेरा नाम है— **विदूषक**!

मुझे रंगमंच और नाटक बहुत पसंद हैं और मैं अनेक वर्षों से यह काम कर रहा हूँ। आपको रंगमंच की खोज-यात्रा पर मैं अपने अनुभव से आपके साथ कई कहानियाँ साझा करूँगा। आज मैं आपको एक रहस्य बताना चाहता हूँ। अनेक वर्षों से मैंने रंगमंच में जो कुछ भी किया है, उसमें से मेरा सबसे पसंदीदा कार्य बच्चों के साथ काम करना है। यह बहुत रोचक है। यही कारण है कि मैं आपके पास वापस आने की प्रतीक्षा कर रहा था!

इससे पहले कि हम इस वर्ष की रोचक गतिविधियाँ आरंभ करें, मैं जानना चाहता हूँ कि आपने पिछले वर्ष सीखी गई अवधारणाओं के आधार पर क्या किया? मैं आपको अवधारणाएँ याद दिलाने में सहायता करूँगा और आप मुझे बताएँगे कि छुट्टियों के दौरान आपने विद्यालय में या घर पर क्या किया?

कहानियाँ सुनाना और उनका अभिनय करना

मैंने क्या किया ....

....

....

हाव-भाव और मुद्राओं को अर्थपूर्ण बनाना (शारीरिक भाषा)

मैंने किया ....

....

प्रतिदिन की वस्तुओं को नए अर्थ (रचनात्मकता और सुधारात्मक) के साथ

मैंने किया ....

....

बहुत बढ़िया! इतने सारे नए विचारों के साथ, हम इस वर्ष की यात्रा आरंभ करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

शिक्षक-संकेत

स्वाभाविक रूप से कुछ विद्यार्थी शर्मीले हो सकते हैं या कुछ गतिविधियों में संकोच कर सकते हैं। उन्हें प्रोत्साहित कीजिए और अपनी सुविधानुसार धीरे-धीरे प्रयास करने दीजिए। कुछ विद्यार्थी अतिरिक्त समय भी ले सकते हैं, यहाँ शिक्षक द्वारा निरंतर सकारात्मक सहयोग दिया जाना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अध्याय 5

अन्वेषण!

हम रंगमंच में हर समय 'अन्वेषण' करते रहते हैं। 'अन्वेषण' का अर्थ है— 'पता लगाना'। हम हमेशा किसी कहानी की प्रस्तुति के विषय में अधिक जानने का प्रयास करते हैं या यह जानना चाहते हैं कि दर्शकों को हमारी प्रस्तुति कैसी लगी। हम यह भी जानना चाहते हैं कि कैसे हम स्वयं में सुधार कर सकते हैं या अपनी प्रस्तुति को उत्तम बनाने के लिए क्या कर सकते हैं। तो चलिए, प्रारंभ करते हैं!

दृश्य 1 वैयक्तिक एकाग्रता का निर्माण करना

0438CH05

रंगमंच समूह-कार्य है। इसमें आप सदैव एक-दूसरे के सहयोग से एक समूह में मिलकर कार्य करते हैं। यदि कोई समस्या आती है तो हर कोई उसे हल करने की दिशा में कार्य करता है। अगर सफलता मिलती है तो हर कोई उस आनंद को साझा करता है।

परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि कोई वैयक्तिक प्रयास होता ही नहीं है। समूह के प्रत्येक सदस्य के लिए यह महत्वपूर्ण होता है कि वह समान योगदान दे तथा समान रूप से परिश्रम करे। यद्यपि आप एक समूह में कार्य कर रहे हैं किंतु यह महत्वपूर्ण है कि आप एकाग्र हों और जो आपको करना चाहिए, उस पर ध्यान केंद्रित करें। दूसरों के कार्यों से अपना ध्यान भटकने न दें।

साथ ही, ध्यान रखें कि यदि आप स्पष्ट नहीं हैं कि आपको क्या करना चाहिए तो आप दूसरों की कठिनाई आने पर सहायता नहीं कर सकते हैं। अतः **एकाग्र** रहें।

गतिविधि 5.1 "राम कहता है..."

यह एक मनोरंजक रंगमंचीय खेल है, जिसे समूह में खेला जाता है। यह आपके व्यक्तिगत कौशल का परीक्षण करेगा। इस खेल का नियमित रूप से अभ्यास करने से आप सतर्क और एकाग्र हो जाएँगे।

निर्देश तथा प्रारंभिक अभ्यास

आपको केवल उन्हीं निर्देशों का पालन करना है जहाँ शिक्षक कहें— **"राम कहता है.."**

उदाहरण के लिए,
जब आप सुनें कि **"राम कहता है, गोले में घूमो"** तो आप गोले में घूमना आरंभ कर दें।

जब आप सुनें कि **"राम कहता है, हाथ ऊपर करो"** तो अपने हाथ ऊपर उठाएँ।

जब आप सुनें कि **"राम कहता है, ऊपर देखो"** तो अपना सिर ऊपर की ओर उठाएँ।

ध्यान रखें कि आप जिस भी निर्देश का पालन करें, उसका आरंभ **"राम कहता है"** से होना चाहिए।

यदि आप **"राम कहता है"** के बिना, केवल निर्देश सुनते हैं तो उस निर्देश का पालन न करें और पहले वाली क्रिया करते रहें।

उदाहरण के लिए,
जब आप सुनें कि **"राम कहता है, गोले में घूमो"** तो आप भी गोले में घूमना आरंभ कर दें।

जब आप सुनें कि **"राम कहता है, हाथ ऊपर करो"** तो अपने हाथ ऊपर उठाएँ।

जब आप केवल **"ऊपर देखो"** सुनें तो अपना सिर ऊपर की ओर न उठाएँ।

अपने हाथ तब तक ऊपर उठाए रखें जब तक आप यह न सुन लें कि **"राम कहता है..."**

शिक्षक सभी विद्यार्थियों को सतर्क रहने के लिए मिला-जुला कर निर्देश देंगे। आपको लगातार **"राम कहता है..."** के साथ निर्देश मिलेंगे और अचानक एक निर्देश बिना **"राम कहता है..."** के साथ दिया जाएगा! आपको इसे पहचानने और निर्देश का पालन करने में बहुत सतर्क रहना होगा।

प्रारंभिक स्तर

दी गई गतिविधि के तहत विभिन्न प्रकार के निर्देश दिए जाते हैं, जैसे— "चलना", "कूदना", "हँसने वाला चेहरा बनाना", "गुस्से वाला चेहरा बनाना", "हाथी की तरह चलना", "कुत्ते की तरह सूँघना" आदि और कुछ भी जो शिक्षक रचनात्मक रूप से सोच सकते हैं।

विकसित स्तर

आगे चलकर अधिक जटिल गतिविधियाँ, जैसे— चार/पाँच/छह के समूह में काम करके आयत, त्रिभुज और वृत्त जैसी आकृतियाँ बनाना अथवा हिंदी, अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं के विभिन्न अक्षर बनाना इत्यादि कराई जा सकती हैं।

इसी प्रकार पर्यावरण की कुछ सामान्य परिस्थितियाँ, जैसे— पक्षियों का झुंड दानों पर चोंच मार रहा हो या पंचतंत्र की कहानियाँ, जैसे जंगल में घूमता कछुआ आदि गतिविधियों में निहित मनोरंजन को और बढ़ा सकते हैं।

शिक्षक-संकेत

यदि विद्यार्थी खेल को भली-भाँति सीख रहे हैं तो निर्देश देने का उत्तरदायित्व भी अलग-अलग विद्यार्थियों को एक-एक करके दिया जा सकता है। समूह में समन्वय स्थापित करने के उनके कौशल और जटिल निर्देश देने की उनकी दक्षता पर टिप्पणी लिखें।

- उन बातों को साझा कीजिए, जो गतिविधियों को करते समय आपको सबसे आनंददायक और सबसे जटिल लगीं।
- जब यह जटिल लगीं, तब आपने इसका प्रबंधन कैसे किया?
- इस खेल को और भी रोचक बनाने के लिए हम नया क्या जोड़ सकते हैं?

राम कहता है, "विदूषक, एक मनोरंजक कहानी सुनाओ!"

कई वर्ष पहले एक रंगमंच कार्यशाला में "राम कहता है" मुख्य आकर्षण था। बच्चे अच्छी तरह से तैयार थे और बाहर न निकाले जाने के लिए प्रतिबद्ध थे। शिक्षिका सुनीता निर्देश दे रही थीं। उन्होंने सरल निर्देशों से आरंभ किया। सबसे पहले उन्होंने कहा, "राम कहता है— अपनी नाक छुओ", "राम कहता है— ऊपर-नीचे कूदो।" अब आगे उन्होंने कुछ मनोरंजक करने का निर्णय लिया।

शिक्षिका ने मुस्कुराते हुए आदेश दिया, "राम कहता है, अपना सिर थपथपाओ और पेट भी रगड़ो।" इससे अव्यवस्था होने लगी। बच्चे भ्रमित कठपुतलियों की तरह हड़बड़ाहट में थपथपाने और रगड़ने का प्रयास कर रहे थे।

फिर उन्होंने ऊँची आवाज में कहा, "अब ताली बजाओ!" शीघ्रता से कम-से-कम आधे समूह ने ताली बजाई और फिर उन्हें अपनी गलती का अनुभव हुआ। वास्तव में उन्होंने यह नहीं कहा था, "राम कहता है कि थपथपाना और रगड़ना बंद करो।" वे झेंप गए, लेकिन जिसने सभी को हँसाया, वह था राजू, जो लय बनाए रखने पर इतना केंद्रित था कि शेष सभी के रुकने के पश्चात भी पूरे एक मिनट तक थपथपाता और रगड़ता रहा।

अत: जब उसने देखा कि अन्य विद्यार्थी उसे घूर रहे हैं तो उसने भी हाथ ऊपर उठा दिए। शिक्षिका ने कहा, "वह सही था क्योंकि राम ने रुकने के लिए नहीं कहा था।"

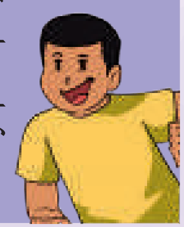

गतिविधि 5.2

जंगल की सैर और पशुओं की गतिविधियाँ

क्या आप सभी पशुओं और पक्षियों से प्रेम करते हैं? क्या आपने कभी सोचा है कि अपने प्रिय पशु या पक्षी की तरह जीवन जीना कैसा होगा? जंगल में घूमना, अपने भोजन की खोज करना और शाखाओं के नीचे या गुफा में सोना, कैसा होगा? यह रोचक गतिविधि आपको यह सब करने और उससे भी कुछ अधिक करने का अवसर देती है। इसमें आपको जंगल में दूसरे पशुओं से बातचीत करने का भी अवसर मिलता है!

निर्देश तथा प्रारंभिक अभ्यास

अपने प्रिय पशु या पक्षी के बारे में सोचिए और कमरे में अनियमित ढंग से चलिए। जैसे ही शिक्षक ताली बजाएँ, आप जिस पशु या पक्षी के विषय में सोच रहे हैं, उसी की स्थिति में मूर्तिवत (फ्रीज) हो जाएँ। वैकल्पिक रूप से, आप सभी एक-दूसरे के बीच पर्याप्त दूरी बनाकर खड़े हो जाएँ। शिक्षक एक चिट उठाकर एक पशु का नाम लेते हैं और आप सभी उस पशु की तरह चलते हैं। रोचक लगा?

प्रारंभिक स्तर (व्यक्तिगत गतिविधि)

मान लीजिए कि आप एक पशु हैं लेकिन कक्षा में इसकी घोषणा न करें। उस पशु की शारीरिक गतिविधियों का अनुकरण कीजिए। आपके चलने की गति, खाने का ढंग, सोने का ढंग और अन्य व्यवहार उस पशु के समान होने चाहिए। आपके मित्रों को अनुमान लगाना होगा कि आप कौन-से पशु हैं। उदाहरण के लिए, स्लॉथ सुस्त होता है और कुत्ता अपेक्षाकृत तीव्र होता है।

पंचतंत्र अभ्यास

आप (उसी पशु के रूप में) भोजन की खोज में शेर की गुफा के पास चल रहे हैं। सावधानी से चलें, जिससे शेर जाग न जाए। अचानक एक तीव्र ध्वनि सुनाई देती है और शेर जाग जाता है। भागो!

विकसित स्तर (समूह गतिविधि)

अब आप समूह के साथ जंगल में हैं। आपके साथ आपकी प्रजाति के कुछ और तथा कई अन्य पशु भी हैं। अब आप झुंड में हैं तो आप कैसा व्यवहार करेंगे? आप दूसरे पशुओं के साथ कैसा व्यवहार करेंगे? कुछ आपके मित्र हैं जबकि कुछ नहीं। संकट में होने पर आप अपना बचाव कैसे करेंगे?

पंचतंत्र अभ्यास

कल्पना कीजिए कि आप एक हिरण हैं और आप शेर के क्रोध से बचने की योजना पर चर्चा कर रहे हैं। आप अपने परिवार के शिशु-हिरण को बचाना चाहते हैं। अन्य पशुओं के साथ एक सरल दृश्य का अभिनय कीजिए।

शिक्षक-संकेत

इन अभ्यासों का उपयोग पशुओं के माध्यम से सुनाई जाने वाली प्रसिद्ध कहानियों से लघु कथाएँ या दृश्य सामने लाने के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए— हितोपदेश और राजा सिंह!

- आपको किस पशु का हाव-भाव पसंद आया और क्यों?
- आपको किस पशु का प्रदर्शन पसंद नहीं आया और क्यों?
- कौन-सा पशु आपके साथ अच्छा व्यवहार करता था और सम्मान दिखाता था?
- क्या आपको लगता है कि चलने के लिए कई अंगों का होना अच्छा है या दो पैरों का होना अच्छा है?

आकलन— अध्याय 5— अन्वेषण!

दक्षताएँ

C- 1.1— नाट्य गतिविधियों में विभिन्न वस्तुओं, लोगों, स्थितियों और अनुभवों को चित्रित करने के लिए उत्साह व्यक्त करते हैं।

C- 1.2— नाट्यकला में अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं पर सहयोगात्मक रूप से काम करते हुए चर्चा करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
1	C-1.1	समूह गतिविधि में अपने कार्य पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम हैं।		
	C-1.2	दृश्य में सुधार करते हैं और रचनात्मक रूप से जोड़ते हैं।		
	C-1.2	गतिविधियों को बिना किसी रुकावट के करते हैं।		
	C-1.1, 1.2	सतर्क रहते हैं एवं सूक्ष्मताओं पर ध्यान देते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 6

कल्पना

कल्पना एक बहुत शक्तिशाली उपकरण है। यदि आप व्यापक रूप से कल्पना करने में सक्षम हैं तो यह एक महाशक्ति होने जैसा है। इसकी सहायता से आपको नए विचार आते हैं, आप नई कहानियाँ कह सकते हैं और समस्याओं का समाधान भी कर सकते हैं! क्या आप जानना चाहते हैं कि कैसे? आगे अर्जुन से जुड़ी एक रोचक कहानी दी गई है।

लगभग 500 वर्ष पूर्व चित्रपुर में महाभारत युद्ध पर आधारित एक भव्य नाटक खेला जा रहा था। इसे देखने के लिए गाँव के लोग आए थे। नाटक आरंभ हुआ... जब सबसे रोमांचक भाग आया, जिसमें अर्जुन को मंच पर आना था तो भूमिका निभा रहा अभिनेता मंच के पीछे लड़खड़ा गया। एक नुकीले कोने में फँसकर उसके चमकदार परिधान फट गए। वह रंग-बिरंगा परिधान खराब हो गया। हर कोई तनावग्रस्त और चिंतित था कि परिधान के बिना, अर्जुन कैसे आगे अभिनय कर सकता था?

0438CH06

तभी मंच के पीछे सहायता करने वाले अर्जुन (हाँ, संयोगवश) नाम के एक छोटे लड़के को एक विचार सूझा। उसने कहा, “हम चारों ओर से प्रकृति से घिरे हुए हैं!” उसने अपनी आँखें बंद कीं और कहा, “मुझे लगता है कि हम पत्तों और छाल से एक नया परिधान बना सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे जंगलों में ऋषि-मुनि पहना करते थे। मैं अपने मन में इसे स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ।”

इससे पहले कि कोई आपत्ति जताता, वह दौड़कर बड़ी-बड़ी पत्तियाँ, छाल की पट्टियाँ और बेलें इकट्ठी करने लगा। उसने पत्तियों को आपस में बाँधा और बेलों से कपड़े की बेल्ट और बाजूबंद बनाए। उसने युद्ध के रंग के लिए हल्दी पाउडर और राख लगाई और नया परिधान तैयार हो गया!

अभिनेता अपने बदले हुए परिधान में मंच पर आया। लोगों ने आश्चर्य भाव से तालियाँ बजाईं। उन्हें लगा कि प्रकृति के माध्यम से अर्जुन की शक्ति को दिखाना एक अच्छा विचार था। नाटक बहुत अच्छा चला और फटे हुए परिधान को भुला दिया गया। युवा अर्जुन अपनी तीव्र कल्पनाशक्ति और समस्या समाधान के फलस्वरूप नायक बन गया।

दृश्य 2 समूह में व्यक्तिगत कौशल

आपने देखा कि अर्जुन कैसे हीरो बन गया। यहाँ दो बातें ऐसी हैं जो हम सीख सकते हैं; प्रथम— अच्छी कल्पनाशक्ति सहायक होती है और द्वितीय— एक समूह में विशिष्ट कौशल होना बहुत अंतर ला सकता है। यद्यपि समूह में सभी मिलकर एक सामान्य लक्ष्य की ओर बढ़ रहे होते हैं लेकिन यह ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है कि प्रत्येक सदस्य के पास क्या-क्या कौशल हैं? उन्हें विकसित करने में सहायता कीजिए। समूह में हर कोई एक जैसा काम नहीं कर सकता। हर किसी को उस कौशल के आधार पर योगदान देना होगा, जिसमें वे अच्छे हैं।

गतिविधि 6.1 पंचतंत्र अभ्यास

स्वयं को पाँच-पाँच सदस्यों के समूह में बाँटिए। अपने समूह में प्रत्येक सदस्य को एक-एक पशु का चरित्र दे दीजिए। सभी सदस्य स्वयं से संबंधित पशु के गुणों की एक सूची बनाएँ।

अब एक समूह के रूप में कल्पना कीजिए कि आप शेर के क्रोध से बचने के लिए जंगल में एक योजना बना रहे हैं। खरगोश ने जो किया था, उससे अलग सोचिए। चर्चा कीजिए कि प्रत्येक पशु में ऐसा कौन-सा कौशल है जिसका उपयोग शेर से बचने के लिए किया जा सकता है।

आपके समूह का नाम

....

जंगल में शेर से बचने का नया समाधान

....

प्रत्येक समूह के कलाकार का योगदान

....

....

....

....

....

....

....

....

गतिविधि 6.2 वस्तु आधारित अभ्यास— समूह

आइए, एक रंगमंचीय खेल खेलते हुए समझते हैं कि एक समूह में काम करते हुए भी आप व्यक्तिगत रूप से काम कर सकते हैं। याद कीजिए कि आपने पिछले वर्ष भी 'वस्तु आशु अभ्यास' किया था, याद है? आपने आस-पास की वस्तुओं का अलग-अलग रूपों में उपयोग किया था, जैसे— अपनी पेंसिल बॉक्स को खजाने का डिब्बा या लैपटॉप समझकर उपयोग करना! यह खेल आप एक बार और खेल सकते हैं जिससे पिछली बार क्या किया था, वह याद आ जाए। इससे उन बच्चों को भी सहायता मिलेगी, जो पिछली बार इस खेल में भाग नहीं ले सके थे।

रंगमंचीय खेल— पुनः स्मरण (कक्षा 3)

शिक्षक कोई एक वस्तु चुनते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी उस वस्तु का उपयोग समान उद्देश्य के लिए किंतु मूल उपयोग से अलग रूप में सोचता है। विद्यार्थी बारी-बारी से उस वस्तु को उठाते हैं और उसे किसी दूसरी वस्तु की तरह उपयोग करते हुए अभिनय करते हैं। इसमें दोहराव की अनुमति नहीं होती है।

अब हम इसे समूह के रूप में करेंगे। सबसे पहले, शिक्षक कक्षा में कोई एक वस्तु चुनेंगे। मान लीजिए, शिक्षक ने एक पानी की बोतल चुनी। इसका उपयोग अनेक रूपों में किया जा सकता है, जैसे कि—

बोलने के लिए एक माइक

पुरस्कार के लिए एक ट्रॉफी

एक फोन या ऐसा ही कुछ और

शिक्षक आप में से किसी एक को अनायास एक वस्तु दे देते हैं। विद्यार्थी के अभिनय के आधार पर शिक्षक एक अन्य विद्यार्थी को दृश्य में जोड़ देते हैं। अब दोनों विद्यार्थियों को उस पानी की बोतल पर आधारित काल्पनिक वस्तु पर चर्चा करनी है।

जब चर्चा कुछ आगे बढ़ जाती है तो शिक्षक एक और विद्यार्थी को दृश्य में सम्मिलित करते हैं। अब तीनों को पानी की बोतल को केंद्र में रखकर अपनी कल्पना के आधार पर एक दृश्य बनाना है।

शिक्षक-संकेत

शिक्षक विद्यार्थियों को सिर्फ दृश्य में जोड़ते हैं। विद्यार्थी कौन-सी भूमिका निभाएगा और क्या बोलेगा, वह स्वयं तय करता है। शिक्षक विद्यार्थियों को कोई निश्चित भूमिका नहीं देते। विद्यार्थी दृश्य में परिस्थिति के अनुसार स्वयं निर्णय लेते हैं।

याद रखें!

आवश्यक प्रमुख कौशल— कल्पनाशीलता और अवलोकन। आपको अपने कार्यों का प्रदर्शन ऐसे करना है कि सभी को आसानी से समझ में आ जाए। यदि आप अपने कार्य को समझाने में असमर्थ होते हैं तो पूरे दृश्य का कोई अर्थ निकलकर नहीं आएगा।

शिक्षक-संकेत

सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थियों को दोनों भूमिकाएँ निभाने का अवसर मिले। पहला, जो प्रदत्त वस्तु की कल्पना करता है और दूसरा जो उस दृश्य में कुछ और जोड़ता है। दोनों भूमिकाओं में अलग-अलग प्रकार के कौशल की आवश्यकता होती है, जिन्हें विद्यार्थियों में विकसित करना आवश्यक है।

- किस वस्तु के लिए आप विभिन्न प्रयोग की कल्पना कर सकते हैं?
- कौन-सा दृश्य सबसे अधिक रोचक था, जब वह तैयार किया गया?
- घर पर मिलने वाली पाँच वस्तुओं के लिए तीन-तीन नए उपयोगों की सूची बनाइए।
- कौन-सा दृश्य बनाना सबसे कठिन था? क्यों?

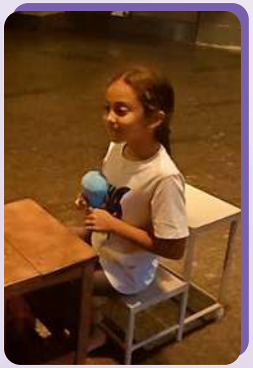

आपको समझ आ गया होगा कि कैसे कल्पनाशीलता एक महाशक्ति है जो हमेशा आपकी सहायता करेगी। आइए, समझने का प्रयास करते हैं कि रंगमंच में यह कैसे सहायता करती है। यह दो प्रकार से कार्य करती है—

1. *किसी कहानी या विचार के बारे में रचनात्मक रूप से सोचना और उसे विकसित करना।*
2. *यह कल्पना करना कि मंच पर या दर्शकों के सामने वह कैसा दिखेगा।*

पिछली गतिविधि, किसी वस्तु के आस-पास कहानी गढ़ना, बॉक्स में उल्लिखित कल्पना का पहला प्रकार है। याद है न, अर्जुन ने उस दिन अपनी कल्पना से एक नया परिधान बनाकर नाटक को बचाया था! यह कल्पना का दूसरा प्रकार है, जिसे **प्रत्यक्षीकरण** कहते हैं।

प्रत्यक्षीकरण का अर्थ है— अपने मन में ऐसी तस्वीरें, छवियाँ या दृश्य बनाना, जिन्हें आपने पहले कभी नहीं देखा हो।

उदाहरण के लिए, सोचिए कि आप एक सुपरहीरो हैं। यह प्रत्यक्षीकरण नहीं है। लेकिन जब स्वयं को आकाश में उड़ते हुए, समुद्र पार करते हुए और दुश्मनों को हराते हुए देखते हैं तो यह प्रत्यक्षीकरण है। अगर आप यह देख पाते हैं कि आपने क्या पहना है, जब आप आकाश में उड़ रहे हैं तब आपके आस-पास क्या है, आप दूसरों से कैसे बात करते हैं तब आपकी प्रत्यक्षीकरण की दक्षता बहुत अच्छी है!

आइए, अब एक रोचक गतिविधि करते हैं जो आपकी प्रत्यक्षीकरण की दक्षता का निर्माण करेगी।

गतिविधि 6.3 समूह दृश्य निर्माण

पिछली गतिविधि में आप सभी ने एक वस्तु के आधार पर दृश्य बनाया। इस गतिविधि में अंतर यह है कि अब पहले योजना बनानी है, चर्चा करनी है और तब यह तय करना है कि आप क्या अभिनय करेंगे। आपको शीघ्र एक कहानी बनानी होगी। यह आपको **प्रत्यक्षीकरण** करने का अवसर देगा। कहानी तय करने के बाद आपको दृश्य के विवरण की कल्पना करनी होगी। नीचे कुछ बिंदु दिए गए हैं जो प्रत्यक्षीकरण करने में आपकी सहायता करेंगे।

किसी दृश्य के प्रत्यक्षीकरण में आपकी सहायता करने वाले बिंदु

- जब दृश्य आरंभ होता है तो मंच पर क्या होता है (जैसे— एक मेज और कुर्सी या एक बैग लिए खड़ा अभिनेता)?
- अभिनेता (विद्यार्थी) कब और कहाँ से मंच पर प्रवेश करेंगे?
- वे एक-दूसरे से कहाँ और कैसे बात करेंगे?
- यह दृश्य कैसे समाप्त होगा और अभिनेता कहाँ से बाहर निकलेंगे?

यदि आपका समूह इन बिंदुओं पर चर्चा कर सकता है और इन्हें प्रत्यक्षीकृत कर सकता है तो आप अभिनय के लिए तैयार हैं।

प्रारंभिक स्तर

शिक्षक द्वारा प्रत्येक समूह को दिया गया विषय एक वस्तु होगी। कहानी उसी वस्तु के आधार पर बनाई और प्रस्तुत की जाएगी।

विकसित स्तर

एक वस्तु के अतिरिक्त एक व्यापक विषय दिया जाएगा। इससे कहानी निर्माण में रचनात्मकता और कल्पना को अधिक स्थान मिलता है। उदाहरण के लिए— डर, गुस्सा, प्रकृति, विद्यालय और यात्रा।

शिक्षक-संकेत

कक्षा को चार या पाँच विद्यार्थियों के समूहों में बाँटा जाएगा। विद्यार्थियों को दी गई वस्तु या विषय के आधार पर एक कहानी बनानी होगी। प्रत्येक समूह को योजना बनाने और चर्चा करने के लिए 5 मिनट का समय दिया जाएगा। जब एक समूह प्रदर्शन कर रहा होगा तब अन्य विद्यार्थियों को उसे देखना और उस पर टिप्पणी देना आवश्यक होगा। प्रदर्शन के बाद शिक्षक को सभी समूहों से संक्षिप्त प्रतिक्रिया लेनी होगी, उसके उपरांत अगले समूह की प्रस्तुति होगी।

पंचतंत्र अभ्यास

पंचतंत्र की किसी कहानी का एक भाग किसी समूह द्वारा चुना जा सकता है जिसे वे अलग ढंग (मूल कथा से अलग) से प्रस्तुत कर सकते हैं। दृश्य में पशुओं का चुनाव और उनकी भूमिकाएँ समूह की रचनात्मकता और कल्पना के अनुसार बदली जा सकती हैं।

प्रतिक्रिया चर्चा के लिए टिप्पणियाँ लिखने हेतु बिंदु	नहीं समझ पाए	और अच्छा कर सकते हैं	अति उत्तम
कहानी का किसी दी गई वस्तु या विषय पर केंद्रित होना			
अभिनेताओं के प्रवेश और निकास में आत्मविश्वास			
प्रस्तुत की जाने वाली कहानी के बारे में स्पष्टता			
रंगमंच की सामग्री का रचनात्मक उपयोग			
सभी समूह सदस्यों की भागीदारी			

- क्या कहानी का प्रभाव तब अलग होता है जब वह किसी वस्तु या विषय पर केंद्रित होती है?
- कहानियों का आरंभ और अंत क्या समान स्वरूप पर हुआ है?
- क्या कहानियों में विषय और वस्तु दोनों सम्मिलित हो सकते हैं? अपने खाली समय में इसे करने का प्रयास कीजिए।

आकलन— अध्याय 6— कल्पना

दक्षताएँ

C-2.1— कक्षा में विभिन्न चरित्रों, भूमिकाओं, स्थितियों, स्थानों और आधारभूत रंगमंचीय सामग्री को मिलाकर, दैनिक घटनाओं पर आधारित नाटक बनाना और उसका प्रदर्शन करना।

C-2.2— नाटक के विषयों और तत्वों तथा कक्षा में सृजित संबंधित कलात्मक अभिव्यक्तियों की तुलना और विषमता अभिव्यक्त करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
2	C-2.1	समूह में अपने कौशल को सामने लाने में सक्षम होते हैं।		
	C-2.1, 2.2	अन्य लोगों के द्वारा अभिनय के दौरान विवरणों का अवलोकन करते हैं तथा उसमें अपनी भूमिका की कल्पना करते हैं।		
	C-2.1, 2.2	जो पूछा गया है उससे अधिक कार्य करने को उत्सुक रहते हैं।		
	C-2.1	भूमिका और स्थान को वस्तु के संदर्भ में समझते हैं।		
	C-2.2	दृश्य तैयार करने के लिए एकल विचार की बजाय सर्वसम्मति से कार्य करते हैं।		
	C-2.2	दिए गए मानदंडों के अनुसार दूसरों के प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

कोई अन्य अवलोकन ....

अध्याय 7

आइए सृजन करें

क्या आपने कभी किसी वृद्ध व्यक्ति की तरह छड़ी लेकर चलने का प्रयास किया है? या संभवत: आपने कभी अपनी माँ की तरह हैंडबैग पकड़कर खड़े होने या बैठने का प्रयास किया होगा। आपने किसी पशु के चलने, कूदने या सूँघने के तरीके का अनुकरण भी किया होगा। क्या किसी और की तरह व्यवहार करना मनोरंजक नहीं है? क्या आप जानते हैं कि यह रंगमंच की बहुत महत्वपूर्ण तकनीक है! इसे **अनुकरण** कहा जाता है।

रंगमंच में अनुकरण करना एक आधारभूत तकनीक है, जिसमें अभिनेता दूसरों की क्रिया, आवाजों या चेहरे के भावों को देखकर उनका अनुकरण करते हैं, जिससे विश्वसनीय चरित्रों का निर्माण किया जा सके। इसके लिए वास्तविक जीवन के लोगों, पशुओं या यहाँ तक कि वस्तुओं तक का गहन अध्ययन करने एवं उनके गुणों को मंच पर जीवंत करने की आवश्यकता होती है। आइए, हम एक सरल खेल खेलें, जिससे हम समझ सकें कि अनुकरण करना कैसा लगता है?

गतिविधि 7.1 दर्पण अभ्यास

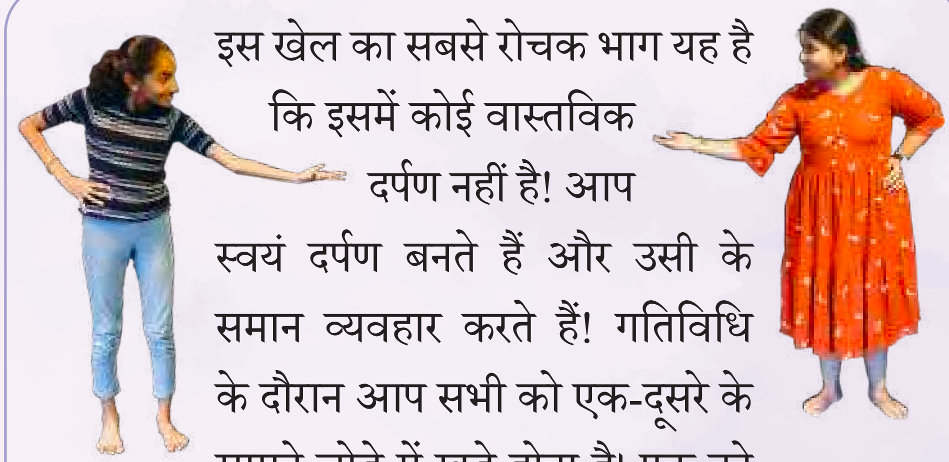

इस खेल का सबसे रोचक भाग यह है कि इसमें कोई वास्तविक दर्पण नहीं है! आप स्वयं दर्पण बनते हैं और उसी के समान व्यवहार करते हैं! गतिविधि के दौरान आप सभी को एक-दूसरे के सामने जोड़े में खड़े होना है। एक को दर्पण बनने के लिए व दूसरे को मनुष्य बनने के लिए चुना जाएगा। मनुष्य जो भी कार्य करेगा, दर्पण उसका अनुकरण करेगा। कुछ समय बाद भूमिकाएँ बदल जाएँगी।

प्रारंभिक स्तर

निर्देशानुसार स्थिर खड़े हो जाएँ। मनुष्य अपने हाथ-पैर हिला सकता है, बैठने और खड़े होने जैसी क्रियाएँ कर सकता है जबकि दर्पण लगातार मनुष्य की नकल करेगा। कुछ समय बाद भूमिकाएँ बदलें।

शिक्षक-संकेत

बच्चों द्वारा अनुकरण करना स्वाभाविक है। रंगमंच अवलोकन और प्रतिबिंबन के माध्यम से रचनात्मकता को अभिव्यक्त करने की एक संरचित विधि प्रदान करता है। ये कौशल हमें समानुभूति और आत्मविश्वास विकसित करने में सहायता करते हैं।

याद रखें!

आप एक-दूसरे को स्पर्श नहीं कर सकते। सभी क्रियाएँ एक-दूसरे से एक हाथ की दूरी पर करनी होंगी।

यदि आपने ध्यान दिया हो तो संभवतः जब मनुष्य ने अपना दाहिना हाथ उठाया होगा तब आप में से कुछ लोगों ने (दर्पण की भूमिका निभाते हुए) अपना दाहिना हाथ उठाने की भूल की होगी। यद्यपि आप उसका अनुकरण सही कर रहे हैं, लेकिन दर्पण प्राय: इसके विपरीत दर्शाता है। वास्तविकता में जो आपका बायाँ है, वही दर्पण का दायाँ है। इस अवधारणा को **समरूपता** कहा जाता है। समरूपता तब होती है जब बीच में खींची गई रेखा के सापेक्ष दोनों पक्ष समान दिखते हैं।

विकसित स्तर

निर्देशानुसार स्थिर खड़े हो जाएँ। अब मनुष्य विभिन्न प्रकार के चेहरे के भाव एवं गतिविधियाँ कर सकते हैं। यदि संभव हो तो सरल रंगमंचीय सामग्री को भी जोड़ा जा सकता है। उदाहरण के लिए, दाँत साफ करना, विद्यालयी बस्ते को तैयार करना आदि।

- दर्पण बनने का आपका अनुभव कैसा रहा?
- क्या इस गतिविधि को करते समय अपनी हँसी को नियंत्रित करना आसान था?
- कौन-सी भूमिका अधिक रोचक थी— दर्पण की भूमिका निभाना या मनुष्य की?

पंचतंत्र अभ्यास

याद रखें कि खरगोश शेर को कुएँ के पास ले जाता है और शेर को यह विश्वास दिलाता है कि जो प्रतिबिंब वह देख रहा है, वह दूसरे शेर का है। अब अपने दर्पण अभ्यास को जारी रखते हुए, आप में से एक असली शेर होगा और दूसरा उसका प्रतिबिंब होगा। आप शेर के बगल में खरगोश को भी जोड़ सकते हैं। चूँकि पूरी बातचीत प्रतिबिंब के माध्यम से होती है इसलिए दर्पण अभिनय को अपना प्रतिबिंब बनाकर दृश्य को निभाएँ!

दर्पण खेल के सभी रूपों को खेलने के बाद आपको सही ढंग से अनुकरण करने के लिए अच्छे **अवलोकन** के महत्व का अनुभव हो गया होगा। रंगमंच में अनुकरण का अर्थ मात्र नकल करना नहीं है। यह अवलोकन को रचनात्मक स्पर्श के साथ व्यक्तिगत प्रदर्शन में बदलने के विषय में है।

गतिविधि 7.2 भूमिका निर्वाह— नई चुनौतियाँ

रंगमंच में भूमिका निर्वाह एक विशेष चरित्र को अपनाने, स्थिति को समझने, संभावनाओं की कल्पना करने और एक चरित्र विशेष के रूप में अभिनय करने की प्रक्रिया है। इसका उपयोग आमतौर पर कहानियाँ सुनाने के लिए किया जाता है। साथ ही 'करके सीखने' या 'समस्या-समाधान' में भी इसका उपयोग किया जाता है।

रंगमंच गतिविधि— स्मरण (कक्षा 3)

गत वर्ष आपको पुलिस और चोर या राजा और मंत्री जैसे सरल चरित्र दिए गए थे, जिनके लिए आपको बातचीत करनी थी। आपको इसके लिए योजना बनाने और तैयारी करने के लिए कुछ समय दिया गया था। आपने तेनालीराम जैसी कहानियों के साथ भी इस गतिविधि को करने का प्रयास किया था।

चुनौती 1— संवादात्मक

अब हम उसी भूमिका को निभाने के साथ प्रारंभ करेंगे, जिससे आप परिचित हैं। आप में से कोई दो विद्यार्थी स्वेच्छा से भूमिकाएँ निभाते हैं। शिक्षक द्वारा चरित्र दिए जाते हैं, उदाहरण के लिए, एक चिकित्सक और एक रोगी। दोनों चरित्र इस बारे में बातचीत आरंभ करते हैं कि रोगी चिकित्सक के पास क्यों जा रहा है। जब वे लगभग 4–5 पंक्तियाँ बोल चुके होते हैं तब शिक्षक उन्हें 'रुकने' के लिए कहते हैं।

अब यह दर्शकों (कक्षा के अन्य विद्यार्थियों) पर निर्भर करता है कि वे तय करें कि आगे क्या होगा। दोनों अभिनेताओं को वही करना है जो उन्हें बताया जाए। दर्शक चुन सकते हैं—

- *एक नई रंगमंच सामग्री जोड़ें*
- *एक नया चरित्र जोड़ें*
- *एक नई समस्या जोड़कर कहानी की दिशा बदलें*

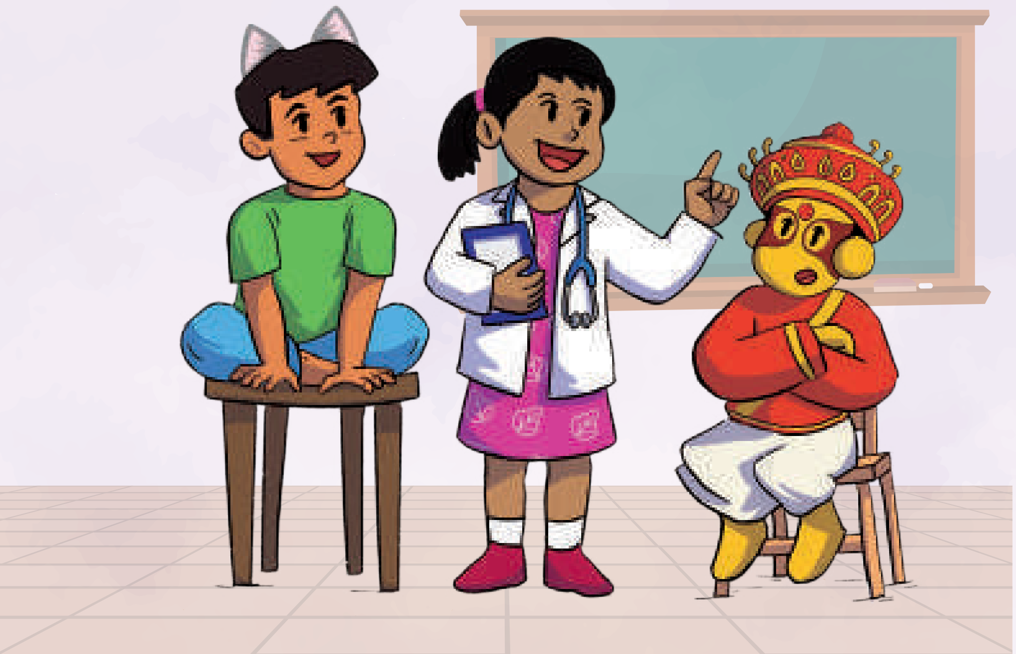

मान लीजिए, दर्शक कहते हैं कि रोगी ने चिकित्सक के कमरे में अचानक एक बिल्ली को देखा। अब चाहे पहले कोई भी बातचीत हो रही हो, उन्हें कमरे में बिल्ली को देखकर प्रतिक्रिया देनी होगी। उनके पास तैयारी के लिए समय नहीं है, उन्हें त्वरित होना होगा। कुछ आगे बढ़ने के बाद, शिक्षक फिर से 'रुकने' के लिए कहते हैं।

अब विद्यार्थी कुछ नया प्रस्तुत करते हैं। (ध्यान दें कि उनके पास तैयारी के लिए समय नहीं है। उन्हें सतर्क और तैयार रहना है)। मान लीजिए कि विद्यार्थी कहते हैं—

"इस रोगी के नाम से ही एक और रोगी आता है। जाँच करने पर उन्हें पता चलता है कि पहला रोगी वास्तव में एक पुलिसवाला था!" अब दृश्य में एक नया अभिनेता जुड़ जाता है। पुलिसवाला क्यों आया है और उसके आने से क्या हुआ है, यह अभिनेता को तुरंत व्यक्त करना होता है।

यह तब तक चलता रहेगा जब तक कि शिक्षक अभिनेताओं और स्थिति को बदलने का निर्णय नहीं ले लेते।

यदि कक्षा में सभी ने यह चुनौती पूरी कर ली है तो अगली चुनौती के लिए तैयार हो जाइए!

चुनौती 2— बदलना

भूमिका निर्वाह हमेशा की तरह आरंभ होता है, जिसमें दो विद्यार्थी शिक्षक द्वारा सुझाए गए चरित्र निभाते हैं। चलिए, चिकित्सक और रोगी का ही उदाहरण लेते हैं।

क्रमशः दोनों के बीच बातचीत आगे बढ़ती है। जब शिक्षक को लगता है कि वे अपने चरित्र में डूबे हुए हैं तो एक महत्वपूर्ण बिंदु पर शिक्षक बदलने को कहते हैं। अब चिकित्सक की भूमिका निभाने वाला बच्चा रोगी बन जाता है और रोगी की भूमिका निभाने वाला बच्चा चिकित्सक बन जाता है। बातचीत निरंतर चलती रहती है। उन्हें यह सोचने के लिए कि क्या बोलना है, कोई समय अंतराल नहीं दिया जाता। यह त्वरित होना चाहिए।

विकसित स्तर

चुनौती के अगले स्तर में तीन या चार चरित्रों को रखना है। जब शिक्षक बदलने के लिए कहते हैं, जैसा कि दिए गए उदाहरण में है, चिकित्सक रोगी 1 बन जाता है, रोगी 1 रोगी 2 बन जाता है और रोगी 2 चिकित्सक बन जाता है। जब दूसरा 'बदलना' होता है तो वे तीसरे चरित्र में बदल जाते हैं।

इस तरह प्रत्येक बच्चे को तीनों चरित्र निभाने का अवसर मिलता है। चार अभिनेताओं के साथ दृश्य की कठिनाई का स्तर और भी बढ़ाया जा सकता है।

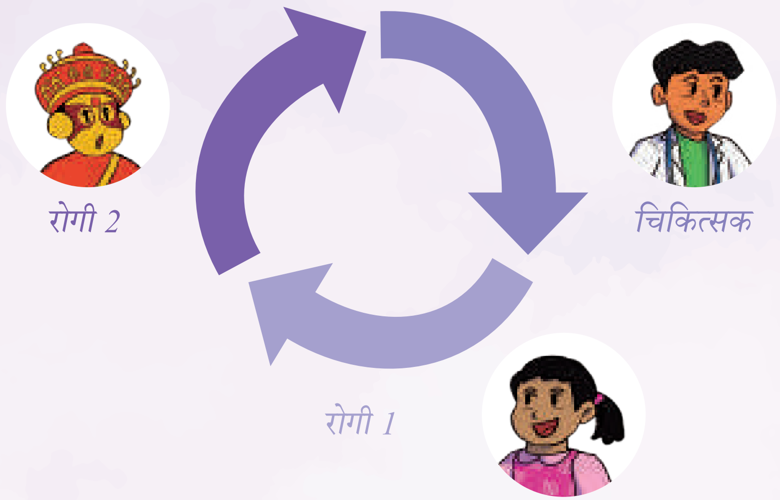

शिक्षक-संकेत

जो चरित्र दिए जाते हैं, वे परिचित और अनोखे दोनों हो सकते हैं। कुछ चरित्र उनके दैनिक जीवन से हो सकते हैं (जैसे कि पहले दिए गए चिकित्सक के उदाहरण में)। अन्य पूरी तरह से काल्पनिक चरित्र हो सकते हैं, जैसे बाहरी अंतरिक्ष से आया कोई एलियन या उत्तरी ध्रुव से उड़कर आया कोई बात करने वाला पक्षी। इससे बच्चों को अपने अनुभव से सीखने और तीव्र कल्पनाशक्ति विकसित करने का अवसर मिलता है, जिससे रचनात्मकता विकसित करने में भी सहायता मिलती है।

- कौन-सी चुनौती अधिक रोचक थी और क्यों?
- यदि आपको कोई नई चुनौती जोड़नी हो तो आप क्या जोड़ेंगे?
- क्या आप चुनौतियों के साथ या चुनौतियों के बिना भूमिका निभाना पसंद करेंगे? क्यों?

पंचतंत्र अभ्यास

पंचतंत्र की कहानी के माध्यम से दोनों चुनौतियों का सामना किया जा सकता है—

चुनौती 1— संवादात्मक— कहानी का कोई भी भाग चुनें और उसमें दो चरित्र जोड़ें।

उदाहरण— एक हिरण और एक बंदर शेर की समस्या का समाधान ढूँढ़ने का प्रयास कर रहे हैं।

दर्शक कलाकारों को आगे बढ़ने के लिए कोई चरित्र या कोई अन्य वस्तु जोड़ने जैसे बदलाव का सुझाव देते हैं।

उदाहरण— यदि वह शेर की जगह मगरमच्छ होता तो क्या होता?

चुनौती 2— बदलना— इसी उदाहरण में जब शिक्षक 'बदलने' के लिए कहते हैं तो हिरण, बंदर बन जाता है और बंदर, हिरण के रूप में बोलता है। समाधान निकालने के लिए खरगोश को दृश्य में जोड़ा जा सकता है।

आकलन— अध्याय 7— आइए सृजन करें

दक्षताएँ

C-3.1— रंगमंच कला में उपयोग की जाने वाली सामग्रियों, उपकरणों और तकनीकों के साथ काम करते समय चुनाव करना।

C-3.2— व्यक्तिगत और सहयोगात्मक रूप से नाटक तैयार करते समय योजना, क्रियान्वयन और प्रस्तुति के चरणों का अभ्यास करना।

पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
3	C-3.1	क्रियाओं और हाव-भाव में संभावनाओं की खोज करते हैं।		
	C-3.1	अनुकरण/दर्पण प्रतिबिंबन करते समय सूक्ष्मताओं (छोटी-छोटी बातों) पर ध्यान देते हैं।		
	C-3.1	दर्पण प्रतिबिंबन के दौरान रंगमंच सामग्री, चेहरे के हाव-भाव और सूक्ष्म क्रियाओं का उपयोग करते हैं।		
	C-3.1, 3.2	बिना किसी हिचकिचाहट के नई चुनौतियों को स्वीकार करते हैं।		
	C-3.2	दृश्य में दर्शक के रूप में सम्मिलित होते हैं और नवाचारी सुझाव देते हैं।		
	C-3.2	दृश्य को यथार्थवादी बनाने के लिए त्वरित रूप से रंगमंच सामग्री, ध्वनि आदि का उपयोग करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

कोई अन्य अवलोकन ....

अध्याय 8

आस-पास देखें

अपने आस-पास की वस्तुओं से आप सदैव बहुत से विचार और प्रेरणाएँ पा सकते हैं। आप सबसे पहले अपने आस-पास के लोगों के साथ आरंभ कर सकते हैं। विभिन्न परिस्थितियों और चरित्रों की विविधता से आप कई रोचक कहानियाँ बना सकते हैं।

इसके बाद आप पशुओं को देख सकते हैं। उनका व्यवहार एवं गतिविधियाँ, कहानियों एवं प्रस्तुतियों में समाहित करने हेतु बहुत रोचक होती हैं, जैसा कि आपने अध्याय 5 में पहले ही ऐसा प्रयास कर चुके हैं। क्या कोई ऐसा पशु है जिससे आप गहरा जुड़ाव अनुभव करते हैं? उस पशु की कौन-सी विशेषताएँ आपको पसंद हैं?

यदि आपको उस पर कोई कहानी बनानी हो तो आप क्या कहानी बनाना चाहेंगे?

आइए, अब हम इंसानों और पशुओं से आगे देखें। हमारे पास क्या है? सुंदर प्रकृति! पेड़, नदियाँ, पहाड़, बहती हवाएँ... क्या ये सब आपको प्रसन्नता और शांति अनुभव नहीं कराते?

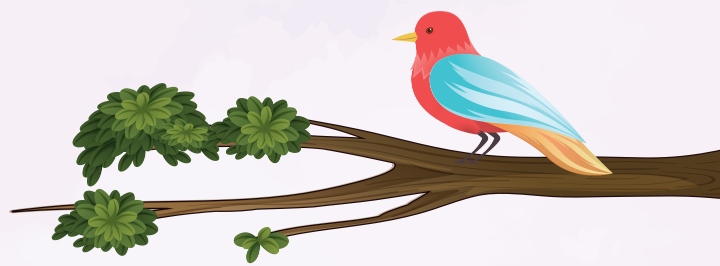

0438CH08

क्या आप जानते हैं?

प्राचीनकाल में आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व जब सभागार (ऑडिटोरियम) नहीं थे, तब नाटक खुले मैदानों में पेड़ों और पहाड़ों के बीच खेले जाते थे। क्या आप पेड़ों के बीच बैठकर नाटक देखना पसंद करेंगे या आप आज के वातानुकूलित सभागारों को अधिक पसंद करते हैं?

हम सभी को नदी में खेलना या हरी घास पर चलना बहुत अच्छा लगता है। आइए, अब एक रोचक गतिविधि करें, जिसमें हम ये सुंदर वस्तुएँ यहीं कक्षा में रचें। यही है रंगमंच का जादू!

निर्देश

आपको 4 या 5 विद्यार्थियों के समूहों में विभाजित किया जाएगा। प्रत्येक समूह को शिक्षक द्वारा दिए गए विषय पर आधारित एक कहानी बनानी होगी। ये विषय प्रकृति से संबंधित होंगे।

ये प्रकृति से जुड़ी स्थितियाँ हो सकती हैं, जैसे— आँधी-तूफान, मरुस्थल, सूखा, नदी आदि। आप अपनी कहानी में पक्षी, मछलियाँ, कीट या अन्य पशु आदि सम्मिलित कर सकते हैं।

समूह के सदस्य दिए गए विषय के आधार पर एक सरल कहानी बनाते हैं और उस दृश्य का अभिनय करते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि दिया गया विषय 'आँधी-तूफान' है तो कहानी यह हो सकती है कि कई दिनों से मूसलाधार बारिश हो रही थी। एक छोटा-सा पिल्ला बारिश में फँस गया था। तीन छोटे लड़के या लड़कियाँ बारिश में साहसपूर्वक उस पिल्ले को बचाते हैं और अपने घर ले आते हैं।

याद रखें!

समूह को तेज़ बारिश और हवा के चलने की आवाज स्वयं तैयार करनी होगी। आप मेज, कुर्सी या शरीर की ताल (जो आपने संगीत की कक्षा में सीखी हो) का उपयोग कर सकते हैं। अपनी वाणी को बदलने का प्रयास कीजिए और पिल्ले की तरह बोलिए। इसे ही '**वाणी का उतार-चढ़ाव**' (वॉइस मॉडुलेशन) कहते हैं।

क्या यह दृश्य पंचतंत्र की कहानी के लिए उपयुक्त स्थिति जैसा नहीं लगता? एक कहानी बनाने का प्रयास कीजिए। इस पुस्तक के आरंभ में जो कहानी दी गई है, उसे पढ़ने के बाद आप निश्चित रूप से यह काम कर सकते हैं। महान पंडित विष्णु शर्मा आपको प्रसन्नतापूर्वक रहने का आशीर्वाद देंगे।

अब कक्षा के विद्यार्थी आपस में यह साझा कर सकते हैं कि प्रत्येक समूह ने अपना प्रदर्शन कैसे किया। जिन बिंदुओं पर विचार किया जा सकता है, वे निम्नलिखित हैं—

क्या दी गई स्थिति कहानी में अच्छी तरह सम्मिलित की गई थी?
(क्या दी गई थीम कहानी का केंद्रीय विचार थी या केवल कहानी का एक छोटा-सा भाग?)

क्या प्रत्येक चरित्र कहानी के लिए आवश्यक था?
(क्या प्रत्येक चरित्र ने कहानी में कुछ जोड़ा या कुछ चरित्र बिना किसी योगदान के ही सम्मिलित थे?)

समूह ने प्रकृति से संबंधित विषय को कैसे प्रस्तुत किया?
(क्या ध्वनि प्रभावों और वस्तुओं का रचनात्मक उपयोग करके विषय का प्रभाव दिखाया गया?)

क्या पूरी प्रस्तुति सुस्पष्ट थी?
(क्या चरित्रों के आने-जाने और कहानी के क्रम में कोई भ्रम था?)

- क्या हम अपनी कहानियों और क्रियाओं के माध्यम से प्रकृति की महिमा को पुन: रच सकते हैं?
- क्या इसका उपयोग प्रकृति के प्रति जागरूकता प्रदर्शित करने में किया जा सकता है?
- क्या आपको लगता है कि अगर प्रकृति बोल सकती तो अच्छा होता? आप उससे क्या-क्या पूछते?

आइए, अपने देश को देखें

हमने इस अध्याय का आरंभ यह कहकर किया था कि मनुष्य, पशु और प्रकृति ये सभी कला सृजन की महान प्रेरणाएँ हैं। यदि यह सत्य है तो ऐसे अनेक कला रूप होंगे, जो प्रकृति या पशुओं पर आधारित होंगे। आइए, जानते हैं—

हुली वेशा/पिली वेशा

यह एक नाटकीय प्रदर्शन है जो बाघ और उसकी चाल-ढाल पर आधारित होता है। कलाकार का शरीर पीले और काले रंग से बाघ की धारियों जैसा रंगा होता है और चेहरा बाघ के मुखौटे से ढका होता है। पूरे प्रदर्शन में ढोल की तीव्र थाप और लयबद्ध कदमों का साथ होता है। यह प्रस्तुति एकल और समूह दोनों रूपों में की जाती है।

इसे देवी दुर्गा के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है क्योंकि वे सदैव बाघ पर सवारी करती हुई दिखाई देती हैं। कलाकार इस नृत्य में बाघ की ऊर्जा, उग्रता और शक्ति को प्रकट करते हैं। यह देखने में सचमुच अद्भुत लगता है! यह नृत्य मुख्यतः कर्नाटक और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में प्रसिद्ध है।

जस गीत

छत्तीसगढ़ में चैत्र व क्वांर नवरात्र तथा विभिन्न धार्मिक अवसरों पर जस गीत का गायन किया जाता है, जिसमें मां की महिमा का बखान होता है। जस गीतों में कथा रूप में झांकी भी प्रस्तुत की जाती है, जिसमें विभिन्न मुखौटों का प्रयोग लोक कलाकारों द्वारा किया जाता है।

पशु नृत्य/पशु मुख

इसे 'पशु मुखौटा नृत्य' भी कहा जाता है। यह साधारणत: विशेष अवसरों पर प्रस्तुत किया जाता है। इसमें दो कलाकार पशुओं जैसा दिखने के लिए रंग-बिरंगे नाटकीय वस्त्र पहनकर नृत्य करते हैं। यह वास्तविक पशु से कहीं बड़ा और सजावटी रूप में होता है और इसके साथ तीव्र और उत्साहपूर्ण संगीत धुनें बजती हैं। इस नृत्य में विभिन्न पशुओं का रूप दिखाया जाता है। यह नृत्य स्थानीय वन देवी के प्रति श्रद्धा स्वरूप भी प्रस्तुत किया जाता है।

यह कला रूप ओडिशा राज्य में बहुत लोकप्रिय है।

रंगमंच संबंधी रोचक तथ्य— ओलंपिक में कला!

वर्ष 1912 से 1948 तक कलाकारों ने भी ओलंपिक में भाग लिया था। इसमें वास्तुकला, साहित्य, संगीत, चित्रकला और मूर्तिकला की प्रतियोगिताएँ सम्मिलित थीं। आधुनिक ओलंपिक के संस्थापक बैरन पियरे दे कुर्बतें का मानना था कि खेल से प्रेरित सभी कला रूपों को इसमें भाग लेने का अवसर मिलना चाहिए। ये प्रतियोगिताएँ वैध पदक स्पर्धाएँ थीं और इनमें कुल 150 से अधिक पदक दिए गए।

इस विषय में आप क्या सोचते हैं? क्या आपको लगता है कि हमें ओलंपिक में कला प्रतियोगिताएँ पुन: सम्मिलित करनी चाहिए?

आकलन— अध्याय 8— आस-पास देखें

दक्षताएँ

C-4.1— नाटक और गति के तत्वों को प्रकृति में पहचानना और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करना।

C-4.2— स्थानीय कला रूपों और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करना।

पाठ्यचर्या लक्ष्य	दक्षताएँ	सीखने के प्रतिफल	शिक्षक	स्वयं
4	C-4.1	प्रकृति में देखे गए तत्वों का सूक्ष्मता से अनुकरण करते हैं।		
	C-4.1	किसी अज्ञात स्थिति में कल्पना के माध्यम से अपनी भूमिका को जोड़ते हैं।		
	C-4.1	विषयवस्तु और तकनीक के आधार पर दूसरों के अभिनय पर प्रतिक्रिया देते हैं।		
	C-4.2	लोककला रूप के मूल विचार को पशुओं की अवधारणा के रूप में समझते हैं।		
	C-4.2	लोककथा में निहित कहानी से जुड़ते हैं और प्रश्न पूछते हैं।		
	C-4.2	पशुओं से जुड़े अन्य लोककला रूपों के उदाहरण साझा करते हैं या अपना स्वयं का कला रूप तैयार करने का प्रयास करते हैं।		
		कक्षा में पूर्ण सहभागिता करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

रंगमंच योगात्मक आकलन

आकलन हेतु गतिविधि (उदाहरण)		आकलन के मानदंड
व्यक्तिगत	• बच्चे से अपनी पसंद का एक पशु चुनने को कहा जाता है। • पशु के आस-पास (से संबंधित) एक कहानी बनाएँ और सुनाएँ। • कहानी में पशु की भूमिका निभाएँ (कुछ पंक्तियाँ भावनाओं और अभिनय के साथ कहें)।	• आत्मविश्वास, रचनात्मकता • स्वाभाविकता • अवधारणा की समझ • संप्रेषण (मौखिक और अभिनय)
समूह	• एक वस्तु और एक स्थिति दी जाती है (हर समूह के लिए अलग-अलग वस्तुएँ और स्थितियाँ)। • समूह उस वस्तु को केंद्र में रखकर एक दृश्य प्रस्तुत करते हैं।	• अतिरिक्त रंगमंच सामग्री या ध्वनियों का रचनात्मक उपयोग • प्रवेश-निकास, दर्शकों का सामना करने की स्थिति • कथा संप्रेषण

... इस तरह, हमने एक और वर्ष नए खेल खेलने, नई सामर्थ्य का विकास करने एवं नई अवधारणाओं को सीखने में पूरा किया। वाह! यह वर्ष मेरी कल्पना से अधिक आनंददायक और मनोरंजक रहा। इसका कारण है— आप!

मुझे लगता है कि आपने हर गतिविधि को आनंददायक बनाया। मुझे कुछ शब्दों में बताइए कि आप इस वर्ष की रंगमंच गतिविधियों के विषय में क्या सोचते हैं—

....

....

....

इन गतिविधियों को जारी रखें और छुट्टियों के दौरान इन खेलों को खेलना स्मरण में रखें। इससे आपको कक्षा 5 में अगले चरण पर जाने में सहायता मिलेगी। मूल बात यह है कि आप आनंदपूर्वक सीखें। **हम अगले वर्ष फिर मिलेंगे, लघु नक्षत्र, नमस्ते!**

संगीत

प्रिय शिक्षको,

संगीत शिक्षा की इस यात्रा पर चलते हुए, हमारे पास अपने विद्यार्थियों को संगीत और कला से प्रेम करने, स्वयं को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने और सीखने में सहायता प्रदान करने का अवसर है। प्रत्येक बच्चा स्वाभाविक रूप से रचनात्मक होता है और शिक्षकों के रूप में हमारी यह भूमिका है कि हम कक्षा को प्रत्येक बच्चे के लिए एक सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराएँ, जहाँ वे बिना किसी भय या निर्णय के सीख सकें और खोज कर सकें। यह पुस्तक आपके लिए एक मार्गदर्शक हो सकती है। यहाँ कुछ दिशानिर्देश दिए गए हैं जो आपको एक उत्तम कक्षा अनुभव के लिए तैयार होने में सहायता कर सकते हैं।

- कक्षा का आरंभ मुस्कान, उत्साह भरे अभिवादन एवं प्राथमिक अभ्यास से करें, जिससे बच्चों को सीखने में आसानी हो।
- गाते समय बच्चों को सुर मिलाने में सहायता करने के लिए सदैव तंबूरा (वाद्ययंत्र, इलेक्ट्रॉनिक या ऐप) या हारमोनियम या कीबोर्ड का उपयोग करें।
- जहाँ भी संभव हो गतिविधियों की अवधि में विद्यार्थियों के घूमने-फिरने के लिए पर्याप्त स्थान सुनिश्चित करें।
- विद्यार्थियों के प्रयासों को यथासंभव प्रोत्साहित करें। इसके अतिरिक्त सभी बच्चों को गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- जहाँ भी संभव हो उन्हें विभिन्न शैलियों के जीवंत संगीत सुनने के लिए प्रोत्साहित करें।
- विद्यालय में किसी प्रदर्शन या जीवंत संगीत प्रदर्शन के लिए एक शैक्षणिक यात्रा आयोजित करने का प्रयास करें।
- विद्यार्थियों को संगीत और कला का अनुभव कराने में सहायता करने के लिए अपने शहर या कस्बे में उपलब्ध अन्य दूसरे संसाधनों पर प्रकाश डालें।
- यदि कक्षा में प्रतिभाशाली या प्रतिभावान विद्यार्थी हैं तो कुछ कक्षा और विद्यालय कार्यक्रमों के समय उनकी क्षमताओं को प्रदर्शित करने की नई विधि खोजें।
- इस खंड के गीतों का ऑडियो संस्करण अध्याय के क्यूआर कोड या इंटरनेट से प्राप्त किया जा सकता है।

प्रत्येक अध्याय के अंत में रचनात्मक आकलन के लिए दिशानिर्देश दिए गए हैं, जिन्हें आराम से और व्यवस्थित ढंग से संचालित किया जाना चाहिए, जो मुख्य रूप से कक्षा में अवलोकन के माध्यम से होना चाहिए। योगात्मक आकलन के लिए सुझाव अनुभाग के अंत में दिए गए हैं और इस चरण के लिए दक्षताएँ नीचे दी गई हैं। आकलन का उद्देश्य मुख्य रूप से यह देखना है कि क्या बच्चे बताई गई दक्षताओं तक पहुँचने में सक्षम हैं या अधिक सहायता की आवश्यकता है। बच्चों को आगे विकसित होने में सहायता करने के लिए सकारात्मक प्रतिक्रिया दें।

प्रारंभिक स्तर के लिए दक्षताएँ

C-1.1— अपने परिचित संगीत का अभ्यास करने और प्रदर्शन करने के लिए उत्साह व्यक्त करना है।

C-1.2— संगीत में सहयोगात्मक रूप से कार्य करते समय अपने विचारों और प्रतिक्रियाओं पर चर्चा करना।

C-2.1— विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं (गायन, वादन, एकल, युगल, टुकड़ी/समूह व्यवस्था) में गीतों और लय का अभ्यास तथा प्रदर्शन करना।

C-2.2— कक्षा में प्रस्तुत विभिन्न संगीत शैलियों में संगीत तत्वों (लय, ताल, सुर, भाव) बोल और अभिव्यक्तियों की तुलना और विरोधाभास करना।

C-3.1— संगीत में प्रयुक्त गायन एवं वाद्ययंत्र की ध्वनियों का विभिन्न तरह से उपयोग करना।

C-3.2— प्रदर्शन के लिए संगीत के विभिन्न आयामों का चयन करते समय विचारों का योगदान देना एवं अभ्यास में लगातार भाग लेना।

C-4.1— प्रकृति में संगीत के तत्वों को पहचानना और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करना।

C-4.2— स्थानीय कला रूपों और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा प्रदर्शित करना।

जो गतिविधियाँ तारे के चिह्न ★ से चिह्नित हैं, उन्हें किसी भी शिक्षक द्वारा, यहाँ तक कि सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी सुगम बनाया जा सकता है।

अध्याय 9

गाओ और बजाओ

नमस्कार, युवा कलाकारो! जैसा कि हम नई कक्षा में प्रवेश कर रहे हैं इसलिए संगीतमय क्षण आ गया है। इस वर्ष आप ध्वनियों, गीतों, वाद्ययंत्रों और भी बहुत कुछ के बारे में नई-नई बातें सीखने जा रहे हैं। तो क्या आप तैयार हैं?

- किसी भी गायन गतिविधि को आरंभ करने से पहले अपनी आवाज का अभ्यास करना अति आवश्यक है, जिससे हम स्वतंत्रतापूर्वक और आसानी से गा सकें।
- आपकी आवाज को उत्तम बनाने के लिए यहाँ कुछ सरल अभ्यास दिए गए हैं। इनमें से कुछ आवाजें हास्यजनक हो सकती हैं लेकिन इनमें प्रतिदिन सुधार करने का प्रयास करें।

0438CH09

गतिविधि 9.1 गायन अभ्यास

1. गुनगुनाना

अपने होंठों को एक साथ लाएँ और एक स्वर में 'म्म्म्म' ध्वनि निकालें। स्वर को स्थिर और लंबा रखने का प्रयास करें। आपको अपने होंठों पर भिनभिनाहट जैसी अनुभूति होगी।

अब पुन: 'म्म्म्म' ध्वनि करें लेकिन एक ही साँस में निम्न से उच्च स्वर तक जाएँ और फिर उच्च से निम्न तक जाएँ। ऐसा कुछ समय तक करें। गुनगुनाने का अभ्यास स्वर तंत्रियों को धीरे से जगाने में सहायता करता है जिससे वे गाने के लिए तैयार हो सकें।

मनोरंजक गतिविधि— सीटी बजाना

क्या आप सीटी बजा सकते हैं? अपने होंठों को बंद करके और हवा फूँककर सीटी बजाने का प्रयास करें।

- *एक बार जब आप सीटी जैसी ध्वनि निकालने में सक्षम हो जाएँ तो एक लंबी और मधुर ध्वनि निकालें। इससे हवा के प्रवाह को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है, जो गायन के लिए महत्वपूर्ण है।*
- *आप धीमी से ऊँची ध्वनि और ऊँची से धीमी ध्वनि में भी सीटी बजा सकते हैं। इस गतिविधि का आनंद लें।*

2. होंठों द्वारा विभिन्न स्वर निकालना

अपने होंठों को एक साथ दबाएँ और फिर उसमें हवा फूँकें, जिससे मोटर बाइक जैसी ध्वनि निकले। हवा के प्रवाह और ध्वनि को यथासंभव स्थिर रखें। आप गुनगुनाने वाले व्यायाम (हमिंग एक्सरसाइज) की तरह ध्वनि को ऊपर और नीचे तक भी ला सकते हैं। इसका आनंद लें।

होंठ हिलाना एक महत्वपूर्ण स्वर अभ्यास है और मधुर ध्वनि विकसित करने का एक अच्छा तरीका है।

3. सरगम

अब आप सरल 'सरली वरिसई' या 'शुद्ध स्वर सप्तक' को याद कर सकते हैं, जो आपने पिछले वर्ष सीखा था। नीचे शुद्ध स्वर सप्तक दिया गया है—

सा रे ग म प ध नि सां

सां नि ध प म ग रे सा

और इसे इस प्रकार लिखा गया है—

सा रे ग म प ध नि सां

यह बार-बार गाइए।

यदि हम प्रत्येक स्वर को दो बार गाएँ तो वह 'जन्ति वरिसई' बन जाता है, जिसे हमने पिछले वर्ष सीखा था।

सा सा रे रे ग ग म म प प ध ध नि नि सां सां

सां सां नि नि ध ध प प म म ग ग रे रे सा सा

आप ऑनलाइन और अधिक 'जन्ति वरिसई' ढूँढ़ सकते हैं और उन्हें गाना भी सीख सकते हैं।

आप चाहें तो हर स्वर को तीन बार भी गा सकते हैं। इन अभ्यासों को 'सरगम' भी कहा जाता है।

क्या आप सरगम की बनावट को देखते हुए रिक्त स्थान भरने का प्रयास कर सकते हैं?

एक बार जब आप रिक्त स्थान भर लें तो इस सरगम का अभ्यास करें—

1. **सारेग सारेग, रेगम रेगम, गमप गमप,
   मपध मपध, पधनि पधनि, धनिसां धनिसां
   सांनिध सांनिध, नि_प निधप, धपम ध_म, पमग
   प_ग, म_रे _गरे, _ _सा गरेसा**
2. **सारेगम रेगमप गमपध _ _ _ _ _ _ _ _
   सांनिधप निधपम धपमग _ _ _ _ _ _ _ _**

गतिविधि 9.2 नाद (ऊँचा-नीचा) का मिलान करें

जब हम गाते हैं तो किसी वाद्ययंत्र, जैसे— तंबूरा, हारमोनियम से स्वर सुर को मिलाना सहायक होता है। अगर आपके पास कोई वाद्ययंत्र नहीं है तो आप फोन या टेबलेट पर तंबूरा या तानपूरा ऐप डाउनलोड कर सकते हैं।

जब तानपूरा बज रहा हो तो वही स्वर गाने का प्रयास करें और उसे बिल्कुल उन्हीं स्वरों में मिलाएँ। 'आआहा' या स्वर में मिलाकर गाना प्रारंभ करें।

सा रे ग म प ध नि सां

स्वरों के समूह में मध्य 'सा' से तार 'सां' तक के स्वर समूहों को 'सप्तक' के नाम से जाना जाता है।

गतिविधि 9.3 अपनी सीमा ढूंढ़ें

तानपूरा, हारमोनियम, कीबोर्ड या इसी तरह के किसी अन्य वाद्ययंत्र का उपयोग करके यह देखने का प्रयास करें कि आप कितने सुर गा सकते हैं। सबसे निम्न स्वर से आरंभ करें और जहाँ तक संभव हो, सबसे उच्च स्वर तक आराम से जाएँ।

निम्न स्वर लिखें ....

तार सप्तक के स्वर लिखें ....

किसी भी व्यक्ति का गायन या वादन विभिन्न सप्तकों में सीमित है। अंग्रेज़ी में इसे रेन्ज कहा जाता है।

शिक्षक-संकेत

बच्चों को स्वर, श्रुति नाम या पश्चिमी स्वरों का उपयोग करके उनके गाए/बजाए जाने वाले निम्नतम या उच्चतम स्वरों को पहचानने में सहायता प्रदान करें।

गतिविधि 9.4 पशुओं और पक्षियों की ध्वनियाँ

क्या आप कुछ ऐसे पशुओं और पक्षियों की सूची बना सकते हैं जो ऊँची ध्वनि निकालते हैं?

....

....

....

....

....

क्या आप कुछ ऐसे पशुओं और पक्षियों की सूची बना सकते हैं जो धीमी ध्वनि निकालते हैं?

....

....

....

....

....

क्या आप जानते हैं?

ऊपर दिए गए सूचीबद्ध स्वर अभ्यासों से आप समय के साथ अपनी स्वर-सीमा बढ़ा सकते हैं। पंडित जसराज, डॉ. एम. बालमुरलीकृष्ण, परवीन सुल्ताना और खुमान लाल साव जैसे कलाकार अपनी व्यापक गायन शैली के लिए जाने जाते हैं।

डॉ. एम. बालमुरलीकृष्ण

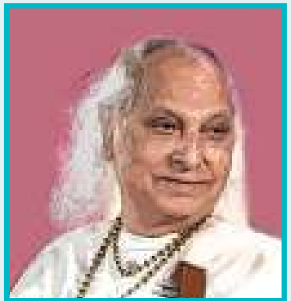

पंडित जसराज

परवीन सुल्ताना

खुमान लाल साव

गीत— आदोना बन्नी
पारंपरिक लोकगीत

हमारे यहाँ बहुत से गीत चंचल और आनंदायक होते हैं। आइए, हम कन्नड़ में एक ऐसा गीत सीखें, जो श्रोताओं को आने, नृत्य करने और आनंद लेने के लिए आमंत्रित करता है।

गीत का लिंक— http://tinyurl.com/Aadona-Banni

आदोना बन्नी कन्ना मुच्चाले
थूगोना बन्नी उय्यले
जीवनावोंदु नाटक शाले
नावेल्ला कुनियुवा नार्थना शाले
उय्याले, चम्पाले
आदोना बन्नी...

सुत्थलु चेल्लिडे रंगु रंगोले
सुत्थलु चेल्लिडे रंगु रंगोले
बालुकुथा बरुवालु वनमाले
भाराडिंडा बंदू पचेया शाले
तोगादि करेदावु तेंगिना साले
उय्याले, चम्पाले
आदोना बन्नी...

हक्कीगालिनचारा कारियोले
हक्कीगालिनचारा कारियोले
कुनियुथा बरुवालु नववले
इम्पु इम्पीना गम्पु कोगिले
कम्पानु हाराडुवा हुगाला माले
उय्याले, चम्पाले
आदोना बन्नी...

उय्याले चम्पाले
चम्पाले, उय्याले

यह गीत समूह में गाए जाने पर और अधिक आनंददायक लगता है।

आकलन— अध्याय 9— गाओ और बजाओ			
दक्षताएँ	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-1.1	सुर और लय में बिना रुके गाना गाने में सक्षम होते हैं।		
C-1.2	लाइव संगीत या 'कराओके' के साथ एक समूह में गाना गा सकते हैं।		
C-1.1	स्वर प्रशिक्षण, सरगम और श्वाँस का अभ्यास कर सकते हैं।		
C-1.1	कक्षा में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 10

संगीत बनाना

- भारतीय शास्त्रीय संगीत एक बहुत प्राचीन परंपरा है, जिसका प्रारंभ वेदों से माना जाता है।
- बाद में यह दो मुख्य शैलियों में विकसित हुआ— कर्नाटक या दक्षिण भारतीय संगीत और हिंदुस्तानी या उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत।
- भारतीय शास्त्रीय संगीत को प्राय: मौखिक परंपरा द्वारा ही आगे बढ़ाया जाता है, जहाँ विद्यार्थी (शिष्य) अपने गुरु के साथ कई वर्ष व्यतीत करते हैं और एक बहुत विशेष संबंध विकसित करते हैं।

0438CH10

राग क्या है?

भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग एक मधुर शैली होती है जो स्वरों के एक समूह पर आधारित होती है। ऊपर जाने वाले स्वरों के क्रम को 'आरोहण' या 'आरोह' (आरोही सप्तक) कहा जाता है और नीचे आने वाले स्वरों के क्रम को 'अवरोहण' या 'अवरोह' (अवरोही सप्तक) कहा जाता है।

ताल क्या है?

ताल एक लय चक्र है जिसका उपयोग भारतीय शास्त्रीय संगीत में समय मापने के लिए किया जाता है। सामान्य तौर पर यह संगीत के पूरे भाग में लय का एक स्थिर रूप प्रदान करता है।

कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत दोनों की अपनी राग और ताल प्रणालियाँ हैं। जब आप कोई भारतीय शास्त्रीय रचना सीखते हैं तो आपको राग और ताल का ज्ञान आवश्यक होता है। किसी भी रचना का गायन आरंभ करने से पहले राग के आरोहण या आरोह और अवरोहण या अवरोह को गाएँ और ताल की गिनती करते रहें।

कर्नाटक संगीत

गीत— वंदे मीनाक्षी

रचनाकार— मुत्तुस्वामि दीक्षितर

मुत्तुस्वामि दीक्षितर (1775–1835) तमिलनाडु के तंजावुर क्षेत्र के एक संगीतकार थे और कर्नाटक संगीत के त्रिमूर्ति में से एक थे। वर्तमान में उनके द्वारा रची 500 कृतियाँ संस्कृत में पाई जाती हैं।

राग— शंकरा भरणं

आरोहण— सा रे$_2$ ग$_3$ म$_1$ प ध$_2$ नि$_3$ सां

अवरोहण— सां नि$_3$ ध$_2$ प म$_1$ ग$_3$ रे$_2$ सा

ताल— एक

क्या आप जानते हैं?

लोकप्रिय बंगाली कविता 'इंदी बिंदी शिंदी' की धुन 'वंदे मीनाक्षी' से मिलती-जुलती है। इस कविता को ऑनलाइन ढूँढ़े और समानता को सुनें।

सा, ग, सा, ग, सा, ग, म ग रे सा ||
वं दे मी ना क्षी त्वां स र सि ज ||

ऩि, रे, ऩि, रे, ऩि, रे, ग रे सा ऩि||
वक् त्रे प र्णे दु र्गे न त सु र||

सा, ग, सा, ग, सा रे ग म प,,, ||
वृं दे श क्ते गु रु गु ह पा ||

म ग रे सा ग रे सा ऩि सा ,,, ,,,||
लि नी ज ल रु ह च र णे ||

सां, नि, ध प, म, ग, म, प, ध नि ||
सुं द र पा ण्डय नं दे मा ये ||

सां, नि ध प, म, प ,,, ,,,,||
सू रि ज ना धा रे ||

सां, नि ध प, प म ग, म म प, ध, ||
सुं द र रा ज स हो द री गौ री ||

म ग रे सा ग रे सा ऩि सा ,,, ,,,,||
शु भ क री स त त म हम ||

ताल को जानें!

इस गाने में एक ताल में 4 मात्राओं का चक्र है।

गीत का लिंक— http://tinyurl.com/Vande-Meenakshi

गीत— श्री गण नाथ

रचनाकार—
पुरंदर दास

पुरंदर दास (1470–1564) कर्नाटक के रचनाकार, संगीतकार और हरिदास दार्शनिक थे। उन्हें कर्नाटक संगीत का जनक माना जाता है।

राग— मलहारी

आरोहण— सा रे$_1$ म$_1$ प ध$_1$ सां

अवरोहण— सां ध प म$_1$ ग$_3$ रे$_1$सा

ताल— रूपक

अपना ताल जानें!

कर्नाटक संगीत के रूपक ताल में छह मात्राओं का ताल चक्र होता है।

म प | ध सां सां रें || रें सां | ध प म प ||

श्री | ग ण ना थ || सिं धु | रा वर्ण ||

रे म | प ध म प || ध प | म ग रे स ||

क रु | ण सा ग र || क रि | व द न ||

सा, | रे म ग रे || सा रे | ग रे सा, ||

लं | बो द र || ल कु | मि क र ||

रे म | प ध म प || ध प | म ग रे सा ||

अं | बा सु त || अ म | र वि नु त ||

सा, | रे म ग रे || सा रे | ग रे सा, ||

लं | बो द र || ल कु | मि क र ||

म प | ध सां सां रें | रें सां | ध प म प ||

सि द्ध | चा र ण | ग ण | से वि त ||

रे म | प ध म प | ध प | म ग रे सा ||

सि द्धि | वि ना य क | ते | न मो न मो ||

सा | रे म ग रे || सा रे | ग रे सा, ||

लं, | बो द र || ल कु | मि क र ||

म प | ध सां सां रें || रें सां | ध प म प ||

स क | ल वि द्या || आ दि | पू जि त ||

रे म | प ध म प || ध प | म ग रे सा ||

स | र्वो त्त म || ते | न मो न मो ||

सा, | रे म ग रे || सा रे | ग रे सा, ||

लं | बो द र || ल कु | मि क र ||

लय की भाषा

कोनाक्कोल क्या है?

आपको पिछले वर्ष की बात का स्मरण होगा कि हम लय को बोलने के लिए कुछ विशेष वर्णों का उपयोग कर सकते हैं। कर्नाटक संगीत में ताल वाद्य की इस भाषा को 'कोनाक्कोल' कहा जाता है। इसी तरह हिंदुस्तानी संगीत में ताल वाद्य की भाषा को 'बोल' कहा जाता है।

नीचे आपके लिए कोनाक्कोल के तीन वाक्यांश प्रस्तुत हैं—

1. ता की ता
2. ता का धी मी
3. ता का धी मी ता का झु नु

जब आप वाक्यांशों को दोहराते हैं (जैसे— ता, की, ता, ता, की, ता, ता, की, ता) तो आपके पास एक कोनाक्कोल पैटर्न होता है। कौन-सा कोनाक्कोल पैटर्न पूर्व पृष्ठ पर दिए गानों से मेल खाता है?

क्या आप कक्षा में कुछ विद्यार्थियों के साथ कोनाक्कोल, अन्य विद्यार्थियों के साथ गीत और शेष के साथ ताल बजाते हुए प्रदर्शन कर सकते हैं? तंबूरा या ऐप का उपयोग करना न भूलें।

□हदुस्तानी संगीत

बंदिश

हिंदुस्तानी संगीत में किसी विशेष राग और ताल पर आधारित रचना को 'बंदिश' कहा जाता है।

राग भूपाली

आइए, राग भूपाली में एक बंदिश सीखें, जिसके आरोह और अवरोह में पाँच स्वर होते हैं।

सबसे पहले राग भूपाली का सप्तक गाएँ।

आरोह— सा रे ग प ध सां
अवरोह— सां ध प ग रे सा

यह बंदिश तीनताल में निबद्ध है, जो 16 मात्राओं की है। आइए, तीनताल सीखें।

तीनताल

मात्रा —16
विभाग — 4

ताली— 1, 5, 13 मात्रा
खाली— 9वीं मात्रा

ताल चिह्न	X				2				0				3			
मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा

बंदिश— नमन कर चतुर

नमन कर चतुर श्री गुरु चरण
तन-मन निर्मल कर भव-तरणा
जोई जोई ध्यावत शुभफल पावत
जनम-मरण दुख सब निस्तरणा

तीनताल

रचना— पंडित विष्णु नारायण भातखंडे

मात्रा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
बोल	धा	धिं	धिं	धा	धा	धिं	धिं	धा	धा	तिं	तिं	ता	ता	धिं	धिं	धा
स्वर									सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	रे
शब्द									न	म	न	क	र	च	तु	र
स्वर	सा	ध़	सा	रे	ग	रे	ग	—	ग	ग	प	ध	सां	ध	सां	सां
शब्द	श्री	ऽ	गु	रु	च	र	ण	ऽ	त	न	म	न	नि	र	म	ल
स्वर	सां	प	ध	प	ग	रे	सा	—								
शब्द	क	र	भ	व	त	र	णा	ऽ								
									ग	ग	ग	ग	प	—	सां	ध
									जो	ई	जो	ई	ध्या	ऽ	व	त
स्वर	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	सां	सां	गं	रें	सां	सां	प	ध
शब्द	शु	भ	फ	ल	पा	ऽ	व	त	ज	न	म	म	र	ण	दु	ख
स्वर	सां	सां	ध	प	ग	रे	सा	—								
शब्द	स	ब	नि	ऽ	स्त	र	णा	ऽ								

आकलन— अध्याय 10— संगीत बनाना			
दक्षताएँ	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-2.2	राग, ताल जैसे संगीत तत्वों को समझते हैं।		
C-1.1	सरल कोनाक्कोल पैटर्न सीखते और सुनते हैं।		
C-2.2	किसी राग के आरोहण और अवरोहण (आरोह और अवरोह) को गाने में सक्षम हैं।		
C-1.1	गाना सुनते समय ताल/टैप की लय बनाए रखने में सक्षम हैं।		
C-3.1	नए गाने और संगीत के नए रूप सीखने के लिए उत्सुक हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 11

गीत और कहानियाँ

आपने संगीत की विभिन्न शैलियों, जैसे— हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, बाउल गान, हिप-हॉप, बॉलीवुड आदि में से कुछ के विषय में सुना होगा।

अलग-अलग तरह के संगीत की ध्वनि अलग-अलग होती है। उनकी शैली, पैटर्न, उत्पत्ति, वाद्ययंत्र और उद्देश्य की अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं।

संगीत शैली एक श्रेणी है, जो साझा विशेषताओं, ध्वनियों या पैटर्न के आधार पर संगीत को समूहीकृत करती है।

क्या आप संगीत की कुछ शैलियों के नाम बता सकते हैं, जिन्हें आपने सुना हो? इसमें क्या विशेष बात है?

हम संगीत को आमतौर पर चार श्रेणियों में वर्गीकृत करते हैं—

1. लोक संगीत
2. शास्त्रीय संगीत— हिंदुस्तानी और कर्नाटक
3. अन्य पारंपरिक शैलियाँ— भक्ति संगीत, रबिंद्र संगीत, उपशास्त्रीय आदि
4. लोकप्रिय या रचनात्मक संगीत— फिल्मी गाने, पॉप गाने आदि

0438CH11

गतिविधि 11.1 शैली की पहचान करें

निम्नलिखित संगीतों को ऑनलाइन सुनें और पहचानें कि वे किस शैली से संबंधित हैं—

1. हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा राग भूपाली
2. ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे
3. कनिका बंद्योपाध्याय द्वारा रबिंद्र संगीत
4. मांगणियार संगीतज्ञों द्वारा केसरिया बालम

संगीत क्यों?

क्या आपने कभी हमारे जीवन में संगीत की भूमिका के विषय में सोचा है?

संगीत कहानियाँ सुनाता है, भावों को अनुभव कराता है और परंपराओं का उत्सव मनाता है।

हमारे यहाँ कई संस्कृतियों और भाषाओं में त्योहारों व विशेष दिवसों के लिए विशेष गीत होते हैं। कभी-कभी एक ही अवसर को अलग-अलग लोगों के समूहों द्वारा अलग-अलग तरीके से मनाया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं?

फसल उत्सव पूरे भारत में मनाया जाता है लेकिन इसके कई अलग-अलग नाम हैं। आपके क्षेत्र में इसे क्या कहा जाता है?

हरिप्रसाद चौरसिया द्वारा राग भूपाली

ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे

कनिका बंद्योपाध्याय द्वारा रबिंद्र संगीत

मांगणियार संगीतज्ञों द्वारा केसरिया बालम

गतिविधि 11.2 फसल गीत

नीचे छत्तीसगढ़ के फसल उत्सव के विषय में एक गीत दिया गया है—

देशभर के कुछ फसल उत्सवों के नाम बताइए—

....

....

....

छत्तीसगढ़ी— फसल गीत
पारंपरिक लोक गीत

लुवे ल जाबो धान संगी, लुवे ल जाबो धान,
चल भाई रे हम खेत म अपन, लुवे ल जाबो धान।
उठ झटकुन बेरा झनकर, होगे ग बिहान,
चल भाई रे हम खेत म अपन, लुवे ल जाबो धान।।

देख तो धाने ल हमर, कइसे लहरावत हे,
सोने के लुगरा पहिरे , धरती मुसकावत हे।
अन परमेसरी ये हमन ल....
देथे ग जीवन दान।
चल भाई रे हम खेत म अपन, लुवे ल जाबो धान ।।
उठ झटकुन बेरा झनकर, होगे ग बिहान,
चल भाई रे हम खेत म अपन, लुवे ल जाबो धान।।

देश के किसी दूसरे भाग से कोई ऐसा गीत ढूँढ़ें, जो फसल के मौसम का उत्सव मनाता हो। उसे सुनें, उसके बोल लिखें और उसे गाना सीखें। क्या यह गाने एक जैसे लगते हैं या अलग? अगर हाँ, तो कैसे?

संगीत शैलियाँ

आइए, दो प्रकार के गीत सीखें— एक लोरी और दूसरा देशभक्ति गीत।

गतिविधि 11.3

लोरी— *अवो निंदिया रानी*

भाषा— छत्तीसगढ़ी

पारंपरिक लोक गीत

अवो निंदिया रानी, अवो निंदिया रानी।
सपना के डोली म आके, नैन गली म समाके।
नोनी ल सुनादे मीठ बानी।
अवो निंदिया रानी, अवो निंदिया रानी।।

रिग-बिग फुलत राहय, सपना के फुलवा ।
मया पिरित के नोनी, झुलत रहे झुलवा।।
मीठ बोली म भुलाके, कोरा म अपन सुलाके।।
सुनादे गीत कहानी ।

★ गतिविधि 11.4 देशभक्ति गीत

गीत हमारे देश के प्रति प्रेम को व्यक्त करने एवं लोगों को एकजुट करने का एक उत्तम तरीका है। हमारे यहाँ कई अद्भुत देशभक्ति गीत हैं जिन्हें आप एक समूह में गा सकते हैं।

नीचे कुछ लोकप्रिय देशभक्ति गीत दिए गए हैं। यह गीत ऑनलाइन ढूँढ़ें और उन्हें एक समूह में गाना सीखें।

1. नन्हा मुन्ना राही हूँ

संगीतकार— नौशाद

गीतकार— शकील बदायूनी

नन्हा मुन्ना राही हूँ, देश का सिपाही हूँ, बोलो मेरे संग
जय हिंद, जय हिंद जय हिंद, जय हिंद, जय हिंद

2. आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ

संगीतकार— हेमंत कुमार

गीतकार— कवि प्रदीप

आओ बच्चो, तुम्हें दिखाएँ, झाँकी हिंदुस्तान की
इस मिट्टी से तिलक करो, यह धरती है बलिदान की
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!

अपनी भाषा में एक देशभक्ति गीत ढूँढ़िए।

इसे सीखें और अपनी कक्षा के साथ साझा करें।

गतिविधि 11.5 एकता का गीत

संगीत एक अद्भुत शक्ति का स्रोत है, जिसने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम के समय गीतों ने जनसाधारण को सामान्य रूप से संघर्ष करते हुए उन्हें एक साथ लाने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में कार्य किया।

आप जानते हैं?

श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

'वंदे मातरम्' श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखा गया था, जिन्होंने इस कविता में भारत माता की महिमा का वर्णन किया है। 'वंदे मातरम्' आमतौर पर राग-देश में गाया जाता है, इसके कई अन्य संस्करण रह चुके हैं और यह इतिहास में सबसे व्यापक रूप से रिकॉर्ड किए गए गीतों में से एक है।

'वंदे मातरम्' सबसे प्रसिद्ध गीतों में से एक है, जो स्वतंत्रता सेनानियों और देश के लोगों के बीच देशभक्ति की भावना को जागृत करता है। आज भी यह एक ऐसा गीत है जो हमें एकजुट करता है और हमारा उत्थान करता है। 'जन-गण-मन' राष्ट्रीय गान है, 'वंदे मातरम्' को राष्ट्रीय गीत के रूप में जाना जाता है।

इस गीत को एक समूह में गाना सीखें।

वंदे मातरम्
लिखित— श्री बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

वंदे मातरम्, वंदे मातरम्
सुजलाम् सुफलाम् मलयज शीतलाम्,
शस्यश्यामलाम् मातरम्
वंदे मातरम्
शुभ्र ज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्,
फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्,
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्,
सुखदाम् वरदाम् मातरम्
वंदे मातरम्

आकलन— अध्याय 11— गीत और कहानियाँ			
दक्षताएँ	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-3.2	संगीत शैलियों की अवधारणा को समझते हैं।		
C-4.2	विभिन्न प्रकार के गीतों के बीच अंतर स्पष्ट करने में सक्षम हैं।		
	इतिहास और परंपरा में संगीत की भूमिका को समझते हैं।		
C-4.2	विभिन्न प्रकार के लोकसंगीतों को ढूँढ़ने के लिए उत्सुक हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 12

सोचें, अनुभव करें, सृजन करें

क्रैश! बूम! ढिशूम!
हिस्स्स!

क्या आप ध्वनि प्रभाव के बिना किसी डरावनी फिल्म या सुपरहीरो फिल्म के दृश्य की कल्पना कर सकते हैं? बिना ध्वनि के यह प्रभावी नहीं लगेगा। है न?

संगीत और ध्वनि प्रभाव किसी कहानी के भाव और नाटकीयता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकते हैं। वे किसी दृश्य का वातावरण तैयार कर सकते हैं और संवादों व धमाकेदार एक्शन में तीव्रता जोड़ सकते हैं। इससे तनाव पैदा हो सकता है और आपको ऐसा अनुभव होगा कि आप खिसक कर अपनी सीट के किनारे पर आ गए हैं! वे आपको आराम का अनुभव भी करा सकते हैं और खुशी का भी। यही संगीत की भावनात्मक शक्ति है।

ऑनलाइन जाकर अपनी मनपसंद फिल्म में से एक दृश्य ढूँढ़ें। ‘म्यूट’ बटन दबाकर उस दृश्य को बिना ध्वनि के देखें। अब वही दृश्य ध्वनि के साथ देखें। इन दोनों विकल्पों में आप कैसा अनुभव करते हैं? अपने विचार एवं भावनाएँ कक्षा में साझा कीजिए।

0438CH12

★ गतिविधि 12.1 कर्ण वन

क्या आपको इस पुस्तक के आरंभ में पंचतंत्र की कहानी पढ़ने में आनंद आया? इसमें कई रोचक पात्र हैं। यह न केवल मनोरंजक है अपितु इसमें एक सुंदर संदेश भी है।

अब क्या आप संगीत और ध्वनि के माध्यम से कहानी का सार बताने के विषय में सोच सकते हैं?

कहानी एक जंगल की है। क्या हम अपने शरीर और आस-पास की वस्तुओं का उपयोग करके जंगल की ध्वनियों का अनुकरण कर सकते हैं? कौन-से पशु और पक्षी तीव्र ध्वनि निकालते हैं? कौन-से पशु और पक्षी धीमी ध्वनि निकालते हैं?

अब आइए, एक और कहानी पढ़ें।

गतिविधि 12.2 चार मित्र

एक बार की बात है। एक जंगल में चार मित्र रहते थे— हिरण, कौआ, कछुआ और चूहा। वे बहुत अच्छे मित्र थे और अपना अधिकांश समय एक साथ बिताते थे। एक दिन उन्होंने एक शिकारी को अपनी ओर आते देखा। वे सभी भयभीत हो गए और अपनी जान बचाने के लिए भागने लगे। कौआ पास के पेड़ की सबसे ऊँची शाखा पर उड़कर बैठ गया, चूहा पास के एक बिल में छिप गया, जबकि हिरण स्फूर्ति से भागकर झाड़ियों में छिप गया। हालाँकि कछुआ न तो छिप सका और न ही भाग सका और आखिरकार शिकारी ने उसे पकड़ लिया। शिकारी ने उसे अपनी बोरी में डाल लिया और चला गया।

तीनों मित्रों ने कछुए को बचाने की योजना बनाई। कौआ शिकारी को ढूँढ़ने के लिए ऊँची उड़ान भरने लगा और हिरण भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। जैसे ही उन्हें शिकारी मिला, हिरण दूसरे रास्ते से जाकर उससे आगे निकल गया और कुछ दूरी पर

मृत होने का नाटक करते हुए चुपचाप लेटा रहा। शिकारी ने हिरण को देखा और अपनी बोरी फेंककर उसकी ओर भागने लगा। इसी बीच चूहा वहाँ आ गया और कछुए को छुड़ाने के लिए बोरी को दाँतों से काट दिया।

दूसरी ओर, शिकारी के समीप आते ही हिरण घने जंगल में भाग गया। शिकारी यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया और वापस उसी स्थान पर पहुँचा, जहाँ उसने अपनी बोरी फेंकी थी। उसे आश्चर्य हुआ कि बोरी खाली थी और कछुआ वहाँ नहीं था। वह खाली हाथ घर लौटा और चारों मित्रों ने भाग निकलने की खुशी मनाई।

सबसे पहले कहानी को एकरस में बल देकर पढ़ें— सभी शब्द और वाक्य बिना किसी भाव के एक ही सुर और ध्वनि में हों। यह कैसी लगती है?

अब कहानी को पुन: पढ़ें लेकिन इसे पढ़ने की विधि में परिवर्तन करें। कुछ भागों को धीमी ध्वनि में पढ़ें, आप कुछ शब्द फुसफुसाकर भी पढ़ सकते हैं और कुछ भाग बल देकर भी पढ़ सकते हैं। कहानी के कुछ भाग धीमी ध्वनि में हो सकते हैं और कुछ ऊँची ध्वनि में। आप कुछ वाक्यों की गति बढ़ा या कम कर सकते हैं और कुछ विराम भी जोड़ सकते हैं।

इस तरह से पढ़ने पर आपको यह कैसा लगा? आपके पढ़ने के किस संस्करण ने श्रोता के लिए कहानी को अधिक रोचक बना दिया?

बोलते या गाते समय ध्वनियों में उतार-चढ़ाव का सही उपयोग करना स्मरण रखें। इससे आपके श्रोता आपकी ओर अधिक ध्यान दे पाएँगे।

शिक्षक-संकेत

विद्यार्थियों को उचित संगीत या ध्वनि प्रभावों के साथ कहानी को अभिनीत करने के लिए प्रोत्साहित करें और उनकी सहायता करें।

सक्रिय श्रवण

संगीतकारों को जो कुछ वे सुनते हैं, उसे समझने के लिए सुनने की गहन समझ की आवश्यकता होती है। उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि वे सुर और लय में गा रहे हैं या बजा रहे हैं और समूह के अन्य संगीतकारों पर प्रतिक्रिया कर रहे हैं। अंतत: कई खेलों की तरह संगीत को सफल होने के लिए समूह कार्य एवं सहयोग की आवश्यकता होती है।

उन विभिन्न समयों और स्थानों पर चर्चा करें, जहाँ आपको संगीत सुनने को मिलता है। इन स्थितियों में संगीत किस उद्देश्य की पूर्ति करता है?

हम सभी किसी-न-किसी रूप में संगीत सुनते हैं। यह पृष्ठभूमि में बज रहा हो सकता है या आप इसे टेलीविजन या चलचित्र देखते समय सुन सकते हैं।

★ गतिविधि 12.3 एक प्रदर्शन सुनना

शिक्षक-संकेत

सक्रिय श्रवण के माध्यम से विद्यार्थी बहुत कुछ सीखते हैं। प्रयास करें कि किसी स्थानीय संगीतकार को कक्षा में आने के लिए आमंत्रण दीजिए या यदि संभव हो तो विद्यार्थियों को लाइव संगीत प्रदर्शन देखने के लिए किसी कार्यक्रम स्थल पर ले जाएँ। यदि यह संभव नहीं है तो कक्षा में किसी भी शैली के संगीत समारोह का वीडियो चलाएँ। विद्यार्थियों को लय या ताल की गिनती करते हुए, उचित रूप से ताली बजाते हुए एवं संगीत पर ध्यान केंद्रित करते हुए सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।

क्या आपने कभी लाइव संगीत प्रदर्शन देखा है? किसी संगीत समारोह में भाग लीजिए और दी गई गतिविधियाँ पूरी कीजिए।

संगीत समारोह का एक चित्र बनाइए, जिसमें कलाकार, उनके वाद्ययंत्र एवं मंच की व्यवस्था दर्शाई गई हो।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

किस शैली का संगीत प्रस्तुत किया जा रहा था?

....

मंच पर कितने संगीतकार थे?

....

किन वाद्ययंत्रों का उपयोग किया गया?

....

दर्शकों में कितने लोग उपस्थित थे?

....

वह कौन-सा अवसर था, जिसके लिए यह प्रदर्शन आयोजित किया गया था?

....

गाने किस भाषा में प्रस्तुत किए गए?

....

आपको संगीत समारोह में क्या पसंद आया?

....

संगीत समारोह पर दर्शकों की क्या प्रतिक्रिया थी?

....

संगीत को समझना

जब गाने में शब्द और बोल होते हैं तो हम सरलता से समझ सकते हैं कि वे क्या संदेश देना चाह रहे हैं। लेकिन जब गाना केवल वाद्ययंत्रों के साथ बजाया जाता है तो यह समझना कठिन हो जाता है कि वह क्या संदेश देना चाह रहा है।

गतिविधि 12.4

संगीत की व्याख्या

संगीतकार— डॉ. एल. सुब्रमण्यम

वाद्य संगीत का कोई अंश सुनें या अध्याय के आरंभ में दिए क्यूआर कोड में संगीत सुनें।

- अपनी आँखें बंद करें और संगीत द्वारा दर्शाए गए किसी चित्र या दृश्य की कल्पना करने का प्रयास करें।
- क्या आप संगीत के भाव या वातावरण का वर्णन कर सकते हैं? अब संगीत को फिर से सुनें एवं संगीत से मेल खाती एक कहानी की कल्पना करें। इसे लिखें और अपनी कक्षा के साथ साझा करें। अपने मित्रों से भी अपनी कहानी साझा करने के लिए कहें। क्या आप सभी की कहानी एक जैसी थी?
- आप संगीत को क्या शीर्षक देंगे?

....

....

....

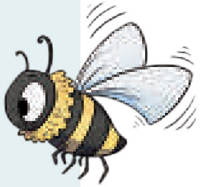

सीखना

संगीत कभी-कभी अमूर्त हो सकता है, जिसका अर्थ है कि अलग-अलग लोग इसे अलग-अलग विधि से समझ सकते हैं।

गतिविधि 12.5 स्वयं को रिकॉर्ड करना एवं सुनना

कई अलग-अलग भाषाओं में प्रकृति से प्रेरित गीत हैं। ये हमारे प्राकृतिक पर्यावरण के महत्व के बारे में स्मरण कराते हैं।

नीचे एक कुमाऊँनी लोकगीत दिया गया है, जो ऊँचे पहाड़ों पर खिलने वाले एक दुर्लभ फूल के विषय में है। यह प्रकृति की सुंदरता तथा उससे मिलने वाले आनंद का वर्णन करता है।

शिक्षक-संकेत

विद्यार्थियों को प्रकृति और पर्यावरण पर आधारित अपनी पसंद का गाना तैयार करने के लिए एक सप्ताह का समय दें। चुने हुए दिन, बच्चों को गाने और स्वयं को रिकॉर्ड करने के लिए कक्षा में एक मोबाइल फोन या रिकॉर्डिंग डिवाइस लाएँ।

गीत का लिंक— *https:tinyurl.com/Kumauni*

कुमाऊँनी गीत

पारंपरिक लोकगीत

बुरु सी, फूली रे
बुरु सी, फूली रे
आहा बुरु सी, आहा बुरु सी, फूली रे
ऊँचा पहाड़ा मा
आहा कत स्वान, आहा कत स्वान लागी रे
ऊँचा हिमाला मा
आहा बुरु सी, आहा बुरु सी फूली रे
ऊँचा पहाड़ा मा
आहा कत स्वान, आहा कत स्वान लागी रे
ऊँचा हिमाला मा
गुरु सी को फूला सुआ के दाना फुलेला
गुरु सी को फूला सुआ ऊँच निच दाना
आहा के दाना, आहा के दाना फूली रे
बुरु सी को फूला
आहा बुरु सी, आहा बुरु सी फूली रे
ऊँचा पहाड़ा मा
आहा कत स्वान, आहा कत स्वान लागी रे
ऊँचा हिमाला मा
आहा बुरु सी, आहा बुरु सी फूली रे
ऊँचा पहाड़ा मा
आहा कत स्वान, आहा कत स्वान लागी रे
ऊँचा हिमाला मा

विद्यालय और घर दोनों जगह इसका कई बार अभ्यास करें।

गतिविधि 12.6 प्रकृति का एक गीत

नीचे प्रकृति से संबंधित छत्तीसगढ़ का एक पारंपरिक लोकगीत प्रस्तुत है।

ए धरती, ए माटी
पारंपरिक लोक गीत

सबके जिनगी ल सिरजइया, ए धरती, ए माटी।
एखर अन्न, फर, फूल, पानी ले, तन ह बनिस लोहाटी।

नदिया नरवा के कलकल म, गीत गोविंद सुने ल मिलथे।
सुवा, पंड़की, मछरी, मेचका, भंवरा संग बोले ल मिलथे।
मस्त- मगन होके कोकड़ा मन, उड़त हवय संझाती।
एखर अन्न, फर, फूल, पानी ले, तन ह बनिस लोहाटी।

हरियर पींयर धान झूमय बंबूर के फुलवा महमावय।
धनहा डोली नवा- नवा गहना पहिरे सुध्धर सम्हर जावय।
धरती गर म सोन पुतरिया लगे धान के बाली।
एखर अन्न ,फर,फूल पानी ले तन ह बनिस लोहाटी।

अर्थ— यह धरती और मिट्टी हमारी जिंदगी का सृजन करती है। इसके अन्न, फल, फूल और पानी से हमारा शरीर लोहे जैसा मजबूत बनता है। इसके नदी नाले के कल- कल ध्वनि में गीत गोविंद सुनने को मिलता है। तोता, मैना, मछली, मेंढक और भ्रमर के संग बात करने को मिलता है। शाम को आनंदित होकर बगुले मस्ती में उड़ रहे हैं। हरे और पीले रंग की धान फसले झूम रही है। बबुल के फूल सुगंध बिखेर रहे हैं। धान के खेत नये - नये गहने पहनकर सुंदर संवर रहे हैं। पीले पके धान की बालियॉं धरती माता के गले में सोने की पुतरी जैसी लग रही हैं।

अब हम गीत रिकॉर्ड करने के लिए तैयार हैं। आप एक गीत स्वयं अथवा एक समूह में चुन सकते हैं। एक बार जब आप गीत रिकॉर्ड कर लेते हैं तो रिकॉर्डिंग को चलाएँ और सुनें।

- यह सुनने में कैसा लगा?
- क्या आप इस गीत को बीच में रुके बिना गाने में सक्षम थे?
- क्या आपको अपनी प्रस्तुति पसंद आई?
- अगली बार आप इस गीत को और भी उत्तम कैसे बना सकते हैं?

आप अपने मित्रों को भी प्रतिक्रिया दे सकते हैं कि वे कैसा गाते हैं। उनके अच्छे प्रदर्शन के लिए उनकी प्रशंसा करना स्मरण रखें और सौम्यता से सुझाव दें कि वे क्या उत्तम कर सकते हैं।

आकलन— अध्याय 12— सोचें, अनुभव करें, सृजन करें			
दक्षताएँ	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-4.1	संगीत और ध्वनि के माध्यम से एक कहानी का सार व्यक्त करने में सक्षम हैं।		
C-2.2	कहानी पढ़ते समय ध्वनि में होने वाले परिवर्तन को समझने में सक्षम हैं।		
C-2.1	ध्यान और एकाग्रता के साथ संगीत सुनने में सक्रिय हैं।		
C-2.2	संगीत के किसी अंश को शब्दों में वर्णन करने में सक्षम हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 13

ध्वनियाँ और वाद्ययंत्र

कक्षा 3 में हमने ताल से लय बनाने के लिए ताली, चुटकी तथा पैरों की थपथपाहट का उपयोग करना सीखा था। अब आइए जानें कि हम अपने शरीर का उपयोग करके और कौन-सी ध्वनियाँ और ताल के स्वरूप बना सकते हैं। फिर हम संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनियों का अन्वेषण करेंगे।

हम अपने शरीर की भाषा और हाव-भाव का उपयोग करके अपने भावों को कैसे व्यक्त करते हैं?

ताली

चुटकी

पैरों की थपथपाहट

इस गतिविधि को सीखें और देखें कि क्या आप कुछ और क्रिया जोड़ सकते हैं।

0438CH13

गतिविधि 13.1 जब भी खुश हो

जब भी खुश हों, आप बजाओ ताली (2)
जब भी खुश हों, अब बनेगी हर बात
जब भी खुश हों, आप बजाओ ताली
जब भी खुश हों, आप कर लो नृत्य (2)
जब भी खुश हों, अब बनेगी हर बात
नाचो नाचो नाचो

जब भी खुश हों, आप बोलो हुर्रे... (2)
जब भी खुश हों, अब तो बनेगी हर बात
जब भी खुश हों, आप बोलो हुर्रे...

अब खुश हों, आप बजाओ ताली हुर्रे...
अब खुश हों, आप कर लो नृत्य हुर्रे...
जब भी खुश हों, अब तो बनेगी हर बात
जब भी खुश हों, आप बोलो हुर्रे...

नोट— क्या आप इस गीत के शब्दों को अपनी भाषा में लिख सकते हैं? अपने मित्रों के साथ मिलकर इसे लिखें और फिर साथ मिलकर गाएँ।

गतिविधि 13.2 बिना चोगे के सुपरहीरो

संगीतकार— थायर सदाम प्रोजेक्ट
(बिंदु सुब्रमण्यम, अंबी सुब्रमण्यम, महेश राघवन, अक्षय ए)

कॉमिक पुस्तकों और वीडियो गेम में,
सुपरहीरो अक्सर उड़ जाते हैं।
वास्तविकता में, किसे चोगे की आवश्यकता है?
आइए, हम सब मिलकर इस दिन को बचाएँ।

प, ध प ध, सा ध सा, रे सा रे, ग रे
प, ध प ध, सा ध सा, रे सा रे, ग रे
ता का धी मी ताम ता का धी मी ताम ता का धी मी ताम

प्लास्टिक का उपयोग न करें, कुछ बच्चों को सिखाएँ,
अपने अच्छे कामों पर आश्चर्य करें
भोजन व्यर्थ न करें, खाद भी बनाएँ,
और भी बहुत कुछ है जो आप कर सकते हैं

प, ध प ध, सा ध सा, रे सा रे, ग रे
प, ध प ध, सा ध सा, रे सा रे, ग रे
ता का धी मी ताम ता का धी मी ताम ता का धी मी ताम

गीत का लिंक— https:tinyurl.com/Superheroes-without-Capes

वाद्ययंत्रों का वर्गीकरण

सभी ध्वनियाँ कंपन के कारण उत्पन्न होती हैं। जब कोई वस्तु कंपन करती है तो वह ध्वनि तरंगें बनाती है, जो हवा या पानी के माध्यम से हमारे कानों तक पहुँचती हैं।

संगीत वाद्ययंत्रों को इस आधार पर श्रेणियों में विभाजित किया जाता है कि कौन-सा भाग कंपन करके ध्वनि उत्पन्न करता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे हमें वाद्ययंत्र को बेहतर ढंग से समझने और इसे कैसे बजाया जाता है, यह समझने में सहायता मिलती है।

संगीत वाद्ययंत्रों की मूल रूप से चार श्रेणियाँ हैं, अर्थात—

श्रेणी	कंपन करने वाला भाग	संस्कृत नाम	उदाहरण
तार	*तार*	*तत वाद्य*	*वीणा*
सुषिर	*एक नली के अंदर हवा*	*सुषिर वाद्य*	*बाँसुरी*
ताल	*चमड़े की खींची हुई झिल्ली*	*अवनद्ध वाद्य*	*तबला*
ठोस	*वस्तु*	*घन वाद्य*	*मंजीरा*

क्या आप जानते हैं?

संगीत वाद्ययंत्रों के वर्गीकरण की यह प्रणाली भारत में आरंभ हुई थी। चार श्रेणियों का उल्लेख सर्वप्रथम भरत मुनि द्वारा रचित नाट्यशास्त्र में किया गया, जो लगभग 2500 वर्ष पूर्व लिखा गया था। दुनियाभर के सभी संगीत वाद्ययंत्र सामान्यत: इनमें से ही किसी एक श्रेणी में आते हैं।

गतिविधि 13.3 वह ध्वनि क्या है?

संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनि अलग-अलग होती है क्योंकि ये अलग-अलग सामग्री से बने होते हैं और इन्हें विभिन्न तरीकों से बजाया जाता है। क्या आप ध्वनि सुनकर वाद्ययंत्र की पहचान कर सकते हैं?

शिक्षक-संकेत

विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनियों को बजाएँ और विद्यार्थियों की सामान्य भारतीय संगीत वाद्ययंत्रों की ध्वनियों की पहचान करने में सहायता करें।

★ गतिविधि 13.4

वाद्ययंत्र का वर्गीकरण करें

अब आप वाद्ययंत्रों की विभिन्न श्रेणियों के बारे में जानते हैं तो आप चित्र देखकर सरलता से पहचान कर सकते हैं कि कौन-सा वाद्ययंत्र किस श्रेणी का है। वाद्ययंत्र और श्रेणी का मिलान कीजिए—

तार

सुषिर

ताल

ठोस

गतिविधि 13.5 संगीत वाद्ययंत्रों की खोज

क्या आप ज्ञात विभिन्न संगीत वाद्ययंत्रों के नाम बता सकते हैं?

- कक्षा में कोई संगीत वाद्ययंत्र लाएँ।
- उसके आकार, माप और रंग का निरीक्षण करें।
- क्या वाद्ययंत्र में नक्काशी या रंग जैसे सजावटी तत्व हैं? क्या वाद्ययंत्र पर कोई लेबल है जो उसके मूल स्थान या निर्माता के नाम को दर्शाता है?
- वाद्ययंत्र को धीरे से स्पर्श करें और अनुभव करें। अपने शब्दों में उसके भागों का वर्णन करें।
- बजाए जा रहे वाद्ययंत्र की ऑडियो या वीडियो रिकॉर्डिंग ढूँढ़ें और उसकी ध्वनि को ध्यान से सुनें।

वाद्ययंत्र का चित्र बनाइए

★ गतिविधि 13.6 अपना वाद्ययंत्र बनाएँ

आवश्यक सामग्री

दो आइसक्रीम की डंडियाँ (पॉप्सिकल स्टिक)

दो रबर बैंड

कागज की एक लंबी पट्टी

एक टूथपिक

प्रक्रिया

- एक आइसक्रीम की डंडी के आकार में कागज की एक पट्टी को ट्रेस करें और काटें।
- इसे एक आइसक्रीम की डंडी के ऊपर रखें।
- दूसरी आइसक्रीम की डंडी रखें और एक ओर रबर बैंड का उपयोग करके इसे बाँध लें।

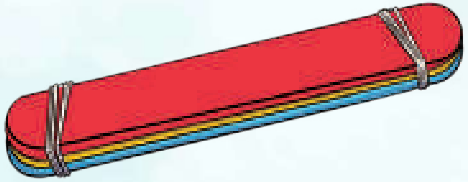

- एक बार जब यह हो जाए तो टूथपिक को आधा तोड़ लें और एक आधे को सुरक्षित सिरे के पास डंडियों के बीच में दबा दें।
- टूथपिक के दूसरे सिरे को डंडियों के खुले सिरे पर पकड़ें। फिर इसे दूसरे रबर बैंड से सुरक्षित करें।

अगर आपने दो डंडियों के बीच थोड़ी-सी जगह बना ली है तो आपका हारमोनिका तैयार है! डंडियों को अपने मुख के पास रखें और हवा को बाहर निकालें या तब तक हवा अंदर खींचें जब तक आपको आवाज न सुनाई दे।

आकलन— अध्याय 13— ध्वनियाँ और वाद्ययंत्र			
दक्षताएँ	**सीखने के प्रतिफल**	**शिक्षक**	**स्वयं**
C-3.1	उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग करके एक सरल संगीत वाद्ययंत्र बनाने में सक्षम हैं।		
C-3.1	गीत को सजाने के लिए रचनात्मक रूप से शरीर की ताल का उपयोग करते हैं।		
C-4.2	वाद्ययंत्र वर्गीकरण के सिद्धांत को समझते हैं।		
C-3.1	उपलब्ध वस्तुओं के साथ गाना गाने में सक्षम हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

योगात्मक आकलन

	योगात्मक आकलन के उदाहरण	योगात्मक आकलन के लिए मानदंड
व्यक्तिगत	• विद्यार्थी को किसी दिए गए विषय पर एक गीत चुनने और प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है। • विद्यार्थी को संगीत का एक भाग सुनने और शब्दों या कला के माध्यम से इसकी व्याख्या करने के लिए कहा जाता है। • विद्यार्थी को आरोहण व अवरोहण के साथ और ताल को ध्यान में रखते हुए एक सरल शास्त्रीय रचना प्रस्तुत करने के लिए कहा जाता है।	• उचित रूप से चुनने और सुर व लय में गाने की दक्षता • सहजता • सक्रिय श्रवण, रचनात्मकता और अभिव्यक्ति • सही ताल के साथ राग के सही स्वर गाने की दक्षता
समूह	• शरीर की गति, ताल और उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग करके ध्वनि परिदृश्य की कल्पना और निर्माण करेंगे।	• रचनात्मक विचार, समन्वय, सामूहिक कार्य और उत्साह

नृत्य

शिक्षकों के लिए दिशा-निर्देश

1. कृपया बच्चों के लिए एक बड़ा और हवादार क्षेत्र उपलब्ध कराएँ।
2. अधिगम निम्नलिखित बिंदुओं पर केंद्रित है—
    - क्षेत्रीय प्रथाओं के अनुसार नृत्य के पाठों को सीखना।
    - देश के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित नृत्यों के बारे में जानना।
    - भावनाओं को व्यक्त करना सीखना और भावों को व्यक्त करने में सहज होना।
    - गतिविधियों और भावों को व्यक्त करने के लिए शरीर के विभिन्न अंगों के उपयोग को समझना।
    - अंग संचालन के अभ्यास में सहभागिता के महत्व को समझना।
    - नृत्य के विभिन्न तत्वों को रचनात्मकता से समझना।
3. कृपया अपने आकलन के लिए नीचे दिए गए पाठ्यचर्या लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों पर ध्यान दें।
4. बच्चों द्वारा किए गए प्रयास, नई अवधारणाओं को सीखने के प्रति उनके दृष्टिकोण, भावों और अभिव्यक्तियों के साथ सहानुभूति दिखाने, साझा करने और सहयोग करने की इच्छा पर ध्यान दें।

पाठ्यचर्या के लक्ष्य और दक्षताएँ नीचे सूचीबद्ध हैं, जिन्हें पाठ्यपुस्तक के माध्यम से पूरा किया गया है। प्रत्येक अध्याय के लिए आकलन एवं सीखने के प्रतिफल, दिशानिर्देशों के साथ तालिकाओं में सूचीबद्ध हैं।

CG-1— कला के माध्यम से मानवीय अनुभव का अन्वेषण, चित्रण और उसका आनंद लेने का आत्मविश्वास विकसित कराना है।

C-1.1— नृत्य और अंग संचालन की विभिन्न संरचना को बनाने और प्रदर्शन के लिए उत्साहित करना, जिनसे वे परिचित हैं।

C-1.2— नृत्य और अंग संचालन में परस्पर काम करते हुए विचारों और प्रतिक्रियाओं को साझा करना है।

CG-2— कला में अपनी कल्पना और रचनात्मकता का स्वतंत्र रूप से उपयोग करना है।

C-2.1— दैनिक क्रियाकलापों और व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर नृत्य और अंग संचालनों के अनुक्रम को बताना और उनका अभ्यास कराना है।

C-2.2— कक्षा में सिखाई गई विभिन्न नृत्य शैलियों में ताल, लय, मुद्राओं, विषयों और अभिव्यक्तियों की तुलना और व्यतिरेक से परिचित कराना है।

CG-3— नृत्य कला में मूलभूत प्रक्रियाओं, सामग्रियों और तकनीकों का पता लगाना है।

C-3.1— नृत्य में प्रयुक्त अंग संचालनों, ताल, लय, उपकरणों, वेशभूषा और व्यवस्थाओं के साथ काम करते समय उनकी पसंद का चुनाव करना है।

C-3.2— परस्पर अभ्यास के दौरान विभिन्न प्रकार के नृत्य और अंग संचालनों के अनुक्रमों का चयन कर प्रक्रिया में भाग दिलवाना है।

CG-4— अपने आस-पास की सुंदरता का पता लगाना और विभिन्न स्थानीय कला रूपों तथा सांस्कृतिक प्रथाओं में रुचि विकसित करना है।

C-4.1— प्रकृति में नृत्य और गति के तत्वों को पहचानना और उनके कलात्मक गुणों का वर्णन करना।

C-4.2— स्थानीय कला रूपों और संस्कृति के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न कराना।

जो गतिविधियाँ तारे के चिह्न ★ से चिह्नित हैं, उन्हें किसी भी शिक्षक द्वारा, यहाँ तक कि सीमित संसाधनों वाले विद्यालयों में भी सुगम बनाया जा सकता है।

अध्याय 14

मेरा शरीर और नृत्य

नृत्य के संसार में आपका एक बार पुनः स्वागत!

आशा करता हूँ कि पिछली कक्षा में आपने अपने मित्रों और शिक्षकों के साथ नृत्य का भरपूर आनंद उठाया होगा। साथ ही नृत्य के संग अंग संचालनों, हस्त मुद्राओं, लोक तथा पारंपरिक शैलियों के बारे में भी सीखा होगा।

इस वर्ष आप सभी कला रूपों से जुड़ी पंचतंत्र की एक कहानी से आरंभ करेंगे। आप भी इसके साथ नृत्य करेंगे। आप पशुओं की भाँति चहलकदमी कर और चिड़ियों की भाँति उड़ने लगेंगे। लेकिन आइए, पहले नृत्य आरंभ करें।

0438CH14

★ गतिविधि 14.1 आइए किसी त्योहार के गीत पर नृत्य करें

हमारे देश में विभिन्न त्योहार मनाने की परंपरा रही है। आपका मनपसंद त्योहार कौन-सा है? आप इसे कैसे मनाते हैं? क्या आप इस समय गायन और नृत्य करते हैं?

क्या आप जानते हैं कि नवरात्रि एक ऐसा त्योहार है, जो संपूर्ण भारतवर्ष में मनाया जाता है। सबसे रोचक बात यह है कि कई राज्यों में नृत्य को नवरात्रि समारोह का महत्वपूर्ण भाग माना जाता है। देश के विभिन्न भागों में देखे जाने वाले विविध नृत्यों की झलकियाँ यहाँ उदाहरण सहित दी गई हैं। क्या आपके पास किसी त्योहार के लिए कोई विशेष नृत्य है?

अपने मनपसंद त्योहार के गीत की लय पर नृत्य करें।

कोलाता—कर्नाटक

गरबा—नवरात्रि, गुजरात

धुनुची—दुर्गा पूजा, पश्चिम बंगाल

शिक्षक-संकेत

अपने क्षेत्र के किसी लोकप्रिय त्योहार गीत को चुनें तथा विद्यार्थियों से नृत्य और उनकी रचनात्मक गतियों को अनुभव करने के लिए कहें।

रहस डंडा नृत्य (दीवाली) - छत्तीसगढ़

नंदलाल कन्हैया, चरावे गैया जमुना जी के तीर,
गोप-गुवाल संग खेले-कूदे, हरे गोपी मन के चीर।।
रास रचावे रे डोंगरी के पाखा म,
बोले मया के बोली बंसी के भाखा म।
सुन-सुन जियरा होवय अधीर, जमुना जी के तीर।
खेलत पुक जमुना में गिरगे, पुक निकाले बर दाहरा म कूदगे।
थर-थर काँपे सबके सरीर, जमुना जी के तीर।
ठऊँहें नाच नचावे सखी ल, रास्ता रेंगत चोरावे दही ल।
सखी दऊँड़े कछोरा भीर, जमुना जी के तीर।

रहस डंडा नृत्य (दीवाली)

गतिविधि 14.2

दैनिक जीवन का संचालन

अब दैनिक गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करें। इन्हें स्वयं करके देखें।

उदाहरण के लिए—

श्रीनिवास की माँ अपने कार्यालय जाने के लिए कैसे तैयार होती हैं? वे अपने कानों में झुमके पहनती हैं और भोजन का डिब्बा भी तैयार करती हैं।

सोनाली के चाचा रात का भोजन कैसे बनाते हैं?

क्या आपने कभी देखा और समझा है कि जब आप इस प्रकार की गतिविधियों को करते हैं तो शरीर के विभिन्न अंग किस प्रकार से गतिमान हो जाते हैं? किसी भी परिस्थिति को चुनें या दिए गए उदाहरणों में से एक का चयन करें और उसमें हाथों के संचालन, हाथों की विभिन्न मुद्राओं और अन्य अंग संचालनों को समाहित कर उसका अभिनय करें। इन गतिविधियों को करते समय उपर्युक्त संचालनों से उत्पन्न मात्राओं (बीट्स) को गिनने का प्रयास करें। अब आप पाएँगे कि आपका शरीर संगीत पर नृत्य कर रहा है।

लय एवं मात्राएँ

क्या आपको कक्षा 3 में सिखाई गई दो या चार मात्राओं की पैरों की थापें याद हैं?

बोल हैं— **तक धिमी तक झुनू / ना धिन धिन ना / ता थई थई तत।** आप क्रमशः **ता ता ता ता / त दिन त दिन / धि मी धि मी** इन बोलों का भी उपयोग कर सकते हैं।

लय की सही गणना सुनिश्चित करने के लिए बोल या गिनती (1 - 2 - 3 - 4) का उपयोग कीजिए।

क्या आप अब **त कि ट / धा धि न** तीन मात्राओं को ढूँढ़ सकते हैं?

आप बोलों का उच्चारण करते समय ताली, चुटकी और पैरों से ताल देते हुए घूमने का प्रयास कीजिए।

ताल, अंग संचालन तथा हस्त मुद्राओं के साथ विभिन्न परिस्थितियों के बारे में सोचें और ताल की मात्राओं के साथ आनंद लीजिए।

पौधा लगाते समय नृत्य करें

अब बाहर ऐसी और गतिविधियों की खोज कीजिए। उदाहरण के लिए, आप मिट्टी में पौधा कैसे लगाएँगे? नीचे दिए गए चित्रों का अनुसरण करें और अपनी गतिविधियों में ताल और लय को जोड़ें।

यह गतिविधि *हमारा अद्भुत संसार* पाठ्यपुस्तक के अध्याय 4 से संबंधित हो सकती है।

1. ता ता ता ता (4 मात्राएँ)—
ऐसे नाचें जैसे कि आप मिट्‌टी की खुदाई कर रहे हों।

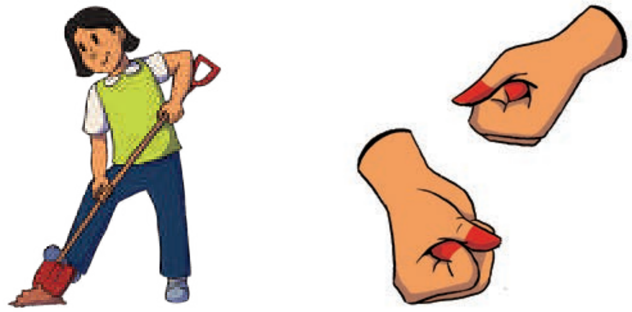

2. धिं धिं धिं धिं (4 मात्राएँ)—
बीज या फूल का पौधा उगाने का अभिनय करें।

3. ता ता ता ता (4 मात्राएँ)—
मिट्‌टी से ढकें।

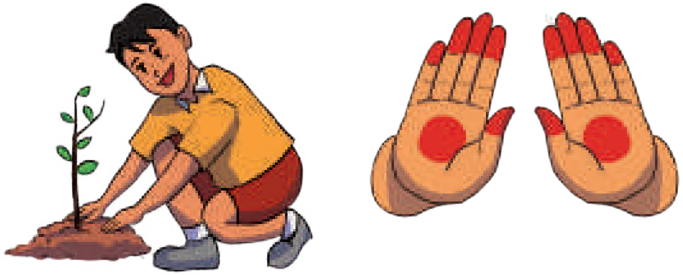

4. धिं धिं धिं धिं (4 मात्राएँ)—
पानी देने वाले डिब्बे से पानी डालें।

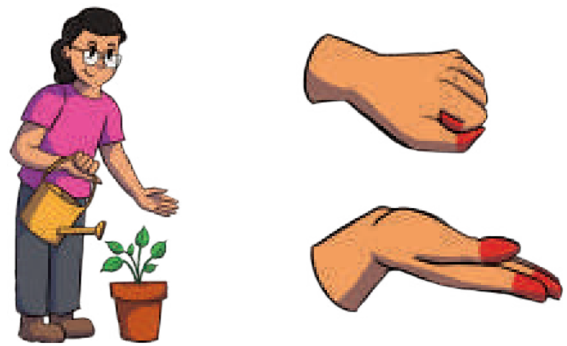

★ गतिविधि 14.3 सिर, गर्दन एवं आखों का संचालन

क्या आपको कक्षा 3 में सिखाए गए शरीर के छोटे-छोटे अंग संचालनों से संबंधित सीख याद है? अब इस गतिविधि में आप अंग संचालन को सिर और गले पर केंद्रित करेंगे।

स्वयं को सिर, गर्दन एवं आँखों से अभिव्यक्त करें

क्या आप केवल अपने सिर और गले से संवाद कर सकते हैं? क्या आप 'नहीं' कहने के लिए अपना सिर 'इधर-उधर' हिलाते हैं, 'हाँ' कहने के लिए अपना सिर 'ऊपर से नीचे' हिलाते हैं, नीले आकाश को आश्चर्य से देखने के लिए ऊपर की ओर देखते हैं, झील में तैरते प्लास्टिक को देखकर दुखी मन से 'नीचे' देखते हैं या सड़कों पर फेंके गए कूड़े को देखकर क्रोध और घृणा से अपना सिर 'हिलाते-डुलाते' हैं? क्या मनुष्य की भाँति पशु भी अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए सिर और गले का उपयोग करते हैं? सिर और गर्दन की और नई गतिविधियों की कल्पना करें तथा शरीर का रचनात्मक तरीके से उपयोग करना सीखें।

आइए, अपने सिर और गर्दन को खींच कर देखें कि सिर और गर्दन को किस-किस प्रकार से हिलाया जा सकता है।

आप तारों को आश्चर्य से कैसे देखते हैं?

क्या आप निराश होने पर अपना सिर नीचे की ओर झुका लेते हैं?

क्या आप इंद्रधनुष के पथ पर चल सकते हैं, जो आपको आनंदित कर देता है?

क्या आप कभी इस तरह आइसक्रीम के लिए मना करते हैं?

एक चिड़िया अपनी गर्दन को कैसे घुमाती है?

शेर की तरह अपनी गर्दन को सिकोड़ें।

अपना सिर गाय की तरह हिलाइए।

आइए, अब हम अपनी गतिविधियों और भावनाओं का मिलान उन सभी प्राप्त अनुभवों से करने का प्रयत्न करें, जो आपने पूर्व की कक्षाओं में सीखा हैं।

कार्यपत्रिका— निम्नलिखित सिर और गर्दन की गतिविधियों का उपयुक्त भावों से मिलान कीजिए।

सिर और गर्दन की गतिविधियाँ		भाव	
1. एक शेर अपना प्रतिबिंब देख रहा है।		क. आश्चर्य	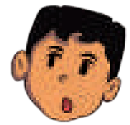
2. साफ आसमान में तारों को देखते हुए।		ख. वीरता	
3. जानवर शेर के सामने नहीं जाना चाहते।		ग. गुस्सा	
4. झील में प्लास्टिक की बोतलों को देखते हुए।		घ. डर	
5. खरगोश शेर के पास जा रहा है।		ङ प्रसन्नता	
6. शेर के कुएँ में छलाँग लगाने के बाद जानवर प्रसन्न होते हैं।		च. उदासी	

★ गतिविधि 14.4 पशुओं के अंग संचालन

आपने अनुभव किया होगा कि विभिन्न पशुओं के अंग संचालन के अलग-अलग प्रकार होते हैं (जैसे— टहलना, चढ़ना, सोना, चेहरे के हाव-भाव आदि)। इसी प्रकार, पंचतंत्र की कहानियों में वर्णित पशुओं के चरित्रों की गतियाँ भी अनोखी हैं। हमारे देश में पशुओं की गतिविधियों एवं अंग संचालन पर आधारित बहुत से नृत्य हैं, जिन्हें 'पशु नृत्य' कहते हैं। उदाहरण के लिए, 'बाघ नृत्य' और 'मयूर नृत्य'।

पुरुलिया छऊ— सिंह नृत्य

पुलिक्कली— बाघ नृत्य

मईलट्टम— मयूर नृत्य

पशुओं को दर्शाने हेतु हस्त मुद्राएँ

पशुओं के अंग संचालन के विषय में बात आरंभ करने से पहले, क्या आप जानते हैं कि हाथों की अनेक मुद्राएँ होती हैं, जो विभिन्न पशुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं? नीचे हस्त संचालन के कुछ उदाहरण दिए गए हैं—

मत्स्य
(मछली)

कुर्म
(कछुआ)

वराह
(सूअर)

गरुड
(गरुड़)

नागबंधक
(साँप)

बेरुंदा
(बाज का सिर)

मयूर
(मोर)

हंसस्य
(तितली)

ताम्रचूड़
(पक्षियों का सिर)

कपित्त
(पक्षी)

सर्पशीर्ष
(साँप/साँप का सिर)

सिंहमुख
(हिरण, गाय)

भ्रमरी
(मधुमक्खी)

व्याघ्र
(बाघ)

विभिन्न पशुओं को दर्शाने के लिए अलग-अलग काल्पनिक रचनात्मक हस्त मुद्राओं को बनाने का प्रयास कीजिए। पशुओं से जुड़ी हस्त मुद्राओं के उदाहरण नीचे दिए गए हैं—

मयूर नृत्य

मयूर हस्त

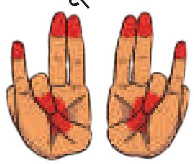

बाघ नृत्य

व्याघ्र हस्त

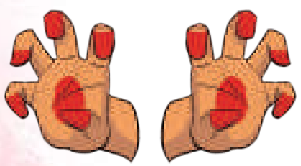

हिरण की गतियाँ

सिंहमुख हस्त

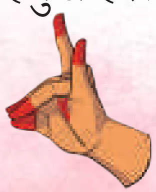

अब आपकी बारी है, आप अपने मनपसंद पशुओं की तरह गति कीजिए।

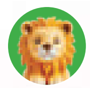

पंचतंत्र की कहानी से शेर और खरगोश जैसे जानवरों की गतियों और हाव-भावों का अभिनय कीजिए। अलग-अलग जानवर कैसे व्यवहार करते हैं, उसका अनुभव करें। चार मात्राओं की लय के साथ-साथ हाथ और गर्दन की विभिन्न गतियों का उपयोग कर उसका अनुकरण करें। आप स्वयं जानवरों की कहानी पर आधारित एक नृत्य की तैयारी करें। प्रत्येक जानवर के लिए विशेष हस्त मुद्राओं का उपयोग कीजिए।

शिक्षक-संकेत

बच्चों को जानवरों की अलग-अलग गतिविधियों व अंग संचालन के बारे में सुझाव दें। अगर संभव हो तो चार मात्राओं की ताल या चार मात्राओं पर आधारित संगीत उपलब्ध कराएँ।

आकलन— अध्याय 14— मेरा शरीर और नृत्य		
दक्षताएँ— CG 1 – C-1.1; CG 2 – C-2.1, C-2.2		
सीखने के प्रतिफल	**शिक्षक**	**स्वयं**
लय का उपयोग करते हुए पूरी उत्सुकता के साथ नृत्य करते हैं।		
कल्पनाशील विधि से अभिनय में हस्त मुद्राओं का उपयोग करते हैं।		
गर्दन और सिर के उपयोगों को समझते हैं।		
क्या भावों को अभिव्यक्त करने में सहज हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 15

कहानियाँ कहता मेरा नृत्य

मैं आशा करता हूँ कि आपने पंचतंत्र की कहानी 'शेर और खरगोश' को पढ़कर आनंद लिया होगा। अब आइए, हम सब इस पर नृत्य करें।

0438CH15

★ गतिविधि 15.1 जानवरों का खेल

आइए, पहले हम जानवरों की गतिविधियों पर आधारित एक खेल खेलें। हम सभी जानवरों के कार्य एवं उनकी गतिविधियों के बारे में सोचें। आपको शीघ्रता से उत्तर देना होगा, सोचने के लिए अतिरिक्त समय नहीं दिया जाएगा।

आप सभी लोग एक गोल घेरा बनाकर खड़े हो जाएँ और अपने शिक्षक के निर्देशों को मानने के लिए तैयार हो जाएँ। लेकिन स्मरण रखें, जब आपको कोई जानवर दिखाया जाए तो पूर्व में सिखाई गई हस्त मुद्राओं का उपयोग करने का प्रयास करें। आप हाथी के बड़े कान और सूँड़ दिखाने के लिए क्रमश: 'सर्पशीर्ष' और 'सिंहमुख' हस्त मुद्राओं का उपयोग कर सकते हैं।

आप स्वयं अपनी हस्त मुद्राओं की रचना कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, शिक्षक कहते हैं— "हाथी"।

आप सभी अलग-अलग भाव-भंगिमा बनाते हुए हाथी बनकर दिखाएँ।

शिक्षक कहते हैं— "बंदर"।

आप बंदरों की क्रिया और अंग संचालन दोनों को दिखाएँ। आप यह सोचें कि बंदर की तरह कूदने, गति करने के लिए किन-किन हस्त मुद्राओं का उपयोग कर सकते हैं। बंदर के हाथ को दिखाने के लिए 'मुकुल हस्त मुद्रा' का उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि 15.2

गुप्त जानवरों का अनुमान लगाइए

चरण 1— अपने आपको छोटे-छोटे समूहों में विभक्त कीजिए।

चरण 2— विभिन्न जंगली जानवरों के बारे में सोचें और अपने चयन को गोपनीय रखिए।

चरण 3— आप में से एक अपने चयनित पशु की तरह नृत्य करता है जबकि दूसरे उसका अनुमान लगाते हैं। इस गतिविधि को तब तक जारी रखिए, जब तक सभी की बारी नहीं आ जाती।

गतिविधि 15.3

पक्षियों की उड़ान

बहुत अच्छा! आपने अच्छे से किया। आइए, अब हम एक और पंचतंत्र की कहानी को इसमें सम्मिलित कर इसे और अधिक रोचक बनाते हैं।

शिकारी और पक्षी

एक कबूतर था, जो अपनी शक्ति और बुद्धिमानी के बल पर अपने झुंड का नेतृत्व करता था। एक बार एक शिकारी ने कबूतरों को फँसाने के लिए चावल के दानों को भूमि पर फैलाया। जैसे ही कबूतरों का झुंड चावल को खाने के लिए नीचे आया, पलक झपकते ही शिकारी ने उन्हें जाल में फँसा लिया। इसके बाद, कबूतर हताश होने लगे। तभी उन्हें अपने नेता की कही बातें याद आईं, यदि वे सभी एक साथ उड़ें तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार जाल को उठाकर दूर उड़ पाएँगे। योजना के अनुसार, वे सभी जाल को लेकर एक साथ आकाश में उड़ चले और शिकारी उन्हें पकड़ नहीं सका। बाद में, सबने एक चूहे की सहायता से अपने आपको जाल से मुक्त कराया।

आपको इस कहानी से क्या सीख मिलती है?

यह कहानी हमें सिखाती है कि एकता में शक्ति होती है। अगर आप एक साथ एक समूह के रूप में कार्य कर सकते हैं तो आप किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं।

शिक्षक-संकेत

बच्चों को हितोपदेश और पुराणों से और अधिक कहानियों को चुनने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। साथ ही इन कहानियों से संबंधित गतिविधियों को करके वे उन गतिविधियों से कुछ सीख सकते हैं।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि आपके पास पंख हों तो आप कैसे उड़ेंगे? सोचिए कि आपके पंख कितने बड़े और चौड़े होंगे? अब उड़ान भरिए, जैसे आपके हाथ पंख हों। अपने कंधों और हाथों का उपयोग पक्षी की भाँति फड़फड़ाने के लिए कीजिए। जैसा कि आपने पूर्व में सीखा है, उड़ती हुई चिड़ियों के जैसा अभिनय करने के लिए सिर और गले की हरकतों को सम्मिलित कीजिए।

शिक्षक-संकेत

बच्चों को और विकल्प सुझाने दें या अन्य गतिविधियाँ प्रस्तावित करने दें। अगली कड़ी में समूह में आवंटित कार्यों को विद्यार्थियों में अदला-बदली भी कर सकते हैं।

अपने आपको तीन समूहों में बाँटिए। प्रत्येक समूह को चिड़ियों से जुड़ी अलग-अलग गतिविधियाँ करनी होंगी। याद रखें कि नृत्य मुद्राओं का उपयोग करते हुए प्रदर्शन करें।

उदाहरण के लिए—

समूह 1— अपने पंखों को इस प्रकार फड़फड़ाएँ जैसे कि आप उड़ रहे हों।

समूह 2— अपने पंखों को इस प्रकार फड़फड़ाएँ, जैसे कि आप भूमि पर पड़े अनाज को अपनी चोंच से चुग रहे हों।

समूह 3— अपने पंखों और गर्दन को इस प्रकार उपयोग में लाएँ, जैसे कि आप चिड़ियों की भाँति आस-पास घूम रहे हों।

गतिविधि 15.4 उड़ान की संरचनाएँ

क्या आपने चिड़ियों को अलग-अलग समूहों की संरचनाओं में उड़ते देखा है?

क्या आप इन स्मृतियों को स्मरण कर अपनी कक्षा में इसका विवरण दे सकते हैं? आप अपनी कक्षा में कितनी अलग-अलग संरचनाओं के बारे में सोच सकते हैं? क्या आप अपने मित्रों की सहायता से इन सभी संरचनाओं को पुनः बना सकते हैं?

- समूह का निर्माण कीजिए।
- एक समूह 'वी' आकार की सामूहिक संरचना बनाएगा और गतिविधियाँ करेगा।
- एक अन्य समूह गोल संरचना बनाकर प्रदर्शन करेगा।

विभिन्न चिड़ियों की उड़ती संरचनाएँ बनाने के लिए एक समूह में काम कीजिए। समूहों के अंदर अपनी प्रत्येक गतिविधि के साथ संयोजन और समन्वय कीजिए। समूह के अंदर समन्वय को उत्तम बनाने के लिए इन विधियों को उपयोग में लाएँ।

अभी आपने जो किया है, यह नृत्य संरचना का प्रथम चरण है। संरचनाएँ बनाना और उसमें भाग लेना, आपको अपने प्रथम चरण की नृत्य योजना बनाने में सहायता करेगा। आप इसके विषय में उच्च कक्षाओं में विस्तार से सीखेंगे।

अब चार मात्राओं की लय के साथ सभी चरणों के समन्वय का अभ्यास कीजिए।

आकलन—अध्याय 15— कहानियाँ कहता मेरा नृत्य		
दक्षताएँ— CG 1 – C-1.2; CG 2 – C-2.1, C-2.2; CG 3 – C-3.2		
सीखने के प्रतिफल	**शिक्षक**	**स्वयं**
कहानी और उसके प्रस्तुतीकरण में रुचि लेते हैं।		
संरचनाओं के साथ समन्वय को समझते हैं।		
मुद्राओं और लय के कल्पनाशील उपयोग को जानते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 16

मेरी नृत्य रचना

विभिन्न प्रकार के अंग संचालन को सीखने के बाद आइए अब पैरों के नए स्टेप सीखें। इससे आपको अब तक अभ्यास की गई गतियों के माध्यम से और अधिक नृत्य संबंधी गतियों को विकसित करने में भी सहयोग मिलेगा।

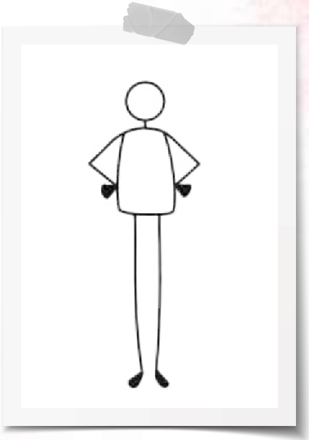

सम— संपूर्ण संतुलन के लिए दोनों पैरों पर बराबर खड़े होना

पंजे को पीछे या सामने क्रॉस करें

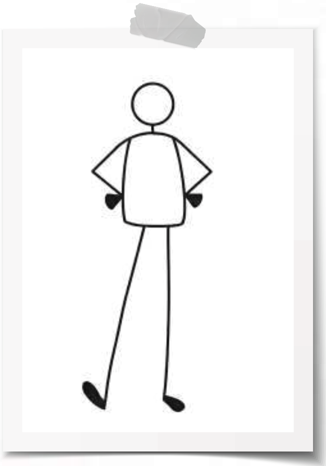

एक पैर की एड़ी आगे की ओर

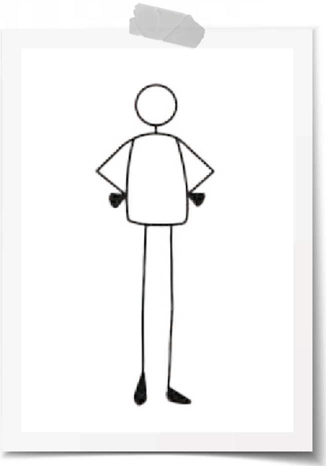

पंजों को सामने रखकर खड़े होना

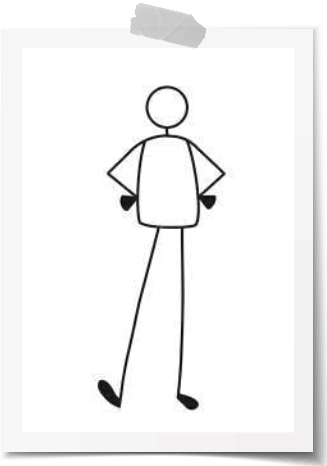

एक एड़ी को उठाकर रखना

0438CH16

★ गतिविधि 16.1

पैरों की लयबद्ध चाल

पिछले पृष्ठ पर दिए गए चित्रों से पैरों की गतियों को दोहराने का प्रयास करें। हमने एक और दो की गिनती के साथ अपने बाएँ और दाएँ पैरों से ताल देने का अभ्यास किया है। अब हम अपने दोनों पैरों से दो-दो कदमों की ताल देंगे। हम इस गतिविधि में दोनों पैरों, एड़ी और पंजों का उपयोग करेंगे। एक बोलने पर दाएँ और दो बोलने पर बाएँ पैर का उपयोग कीजिए।

तालिका 1— संयोजन 1

दाएँ	**दाएँ**	**बाएँ**	**बाएँ**
एक	**एक**	**दो**	**दो**
कदम	कदम	कदम	कदम
एड़ी	कदम	एड़ी	कदम
पंजा	कदम	पंजा	कदम
क्रॉस	कदम	क्रॉस	कदम

चार कदमों को बाद में जोड़ा जा सकता है।

तालिका 2 में पैरों की गति के और अधिक संयोजन दिए गए हैं, जिनका अगली कक्षा में उपयोग किया जा सकता है—

तालिका 2— संयोजन 1

एक (दायाँ कदम)	दो (दायाँ कदम)	तीन (बायाँ पंजा क्रॉस)	चार (दायाँ कदम)
एक (बायाँ कदम)	दो (बायाँ कदम)	तीन (दायाँ पंजा क्रॉस)	चार (बायाँ कदम)
संयोजन 2			
एक (दायाँ कदम)	दो (बायाँ कदम)	तीन (दाईं एड़ी सामने)	चार (दायाँ कदम)
एक (बायाँ कदम)	दो (दायाँ कदम)	तीन (बाईं एड़ी सामने)	चार (बायाँ कदम)

- उपरोक्त दिए गए संयोजनों में विभिन्न गतियों का अभ्यास कीजिए।
- क्या आपको इसमें कोई पैटर्न दिखाई दिया? यहाँ हम दाएँ पैर से जो गति कर रहे हैं, वही बाएँ पैर से दोहरा रहे हैं। आप इसके विपरीत इसे पहले बाएँ पैर और फिर दाएँ पैर से भी कर सकते हैं।

शिक्षक-संकेत

पैरों की गति के विभिन्न संयोजनों का निर्माण और उनका उपयोग किया जा सकता है।

★ गतिविधि 16.2

वृत्ताकार गतियाँ

नृत्य एक आनंदमय शारीरिक एवं मानसिक अनुभूति है। यदि आप में से किसी को गोल-गोल घूमना पसंद है तो आप अपने दूसरे साथी को लेकर तब तक वृत्ताकार घूम सकते हैं जब तक आप हवा की इस धारा में बहते रहें। आप में से कोई भी एक चक्राकार घूमना पसंद कर सकता है तो आप एक-दूसरे का हाथ पकड़कर एक वृत्त की सरंचना बना सकते हैं। इस गति को अनुभव करें और अपनी गति को परखें।

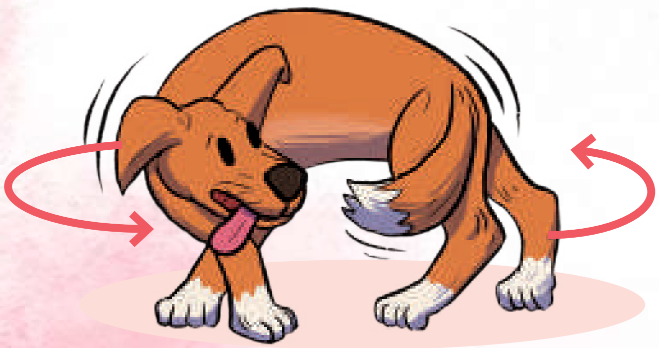

क्या आपने कभी कुत्ते को अपनी ही पूँछ पकड़ने का प्रयास करते हुए घूमते देखा है? क्या आपको ऐसा लगता है कि कुत्ता भी नाचने का प्रयास कर रहा है? क्या आप ऐसे कुछ जानवरों की पहचान कर सकते हैं, जो इस तरह ही संचलन करते हैं? अपने विचारों को अपनी कक्षा में साझा करें।

★ स्तर 1

आइए, अपने पैरों से गोलाकार गति करने का प्रयास करें।

क्या आप अपने पंजों के बल घूम सकते हैं?

क्या आप और आपका मित्र हाथ पकड़कर एक वृत्ताकार परिधि में घूम सकते हैं?

क्या आप अपने पंजे पर घूम सकते हैं?

क्या आप अपना पैर भूमि पर सीधा रखकर घुमा सकते हैं?

★ स्तर 2

अब जब आपने अपने पैरों से गोला बनाना सीख लिया है तो इसे और अधिक रोचक बनाने के लिए अपने हाथों की विभिन्न गतियों को भी इसमें सम्मिलित करें। यहाँ आप एक गोला बनाते हुए अपनी पसंद के अनुसार हाथों की विभिन्न मुद्राओं को ताल की गतियों पर घुमाते हैं, जैसा नीचे दिखाया गया है।

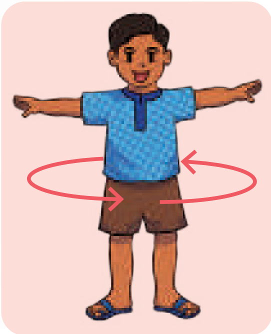

गोलाकार गति

एक ओर से दूसरी ओर झूलना

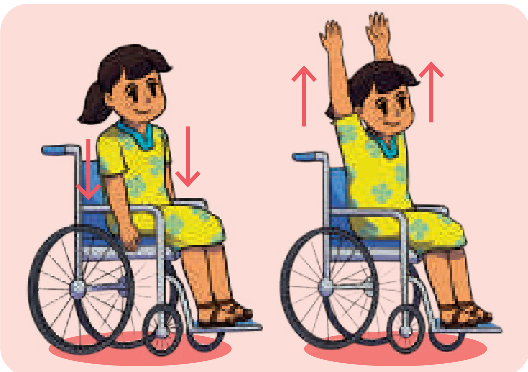

ऊपर-नीचे

आप अकेले या एक समूह में एक गोले में घूम सकते हैं और साथ ही चक्कर लगा सकते हैं। पैरों और हाथों के संचालन को विभिन्न संयोजनों से मिलान करें। जितना संभव हो, उतना अलग-अलग तरह से इसका उपयोग करें।

स्तर 3

आइए, इन गोलाकार गतियों को ताल, मात्रा और लय की संरचना में ढालने का प्रयास करें।

- अपने हाथों और पैरों से गोला बनाते हुए चार मात्रा गिनें।
- ताली बजाकर आरंभ करें और 2, 3 और 4 मात्रा पर गोला बनाएँ।
- जैसा आपने पूर्व में किया था, वैसे ही विभिन्न संरचनाओं में भाग लेते हुए लयबद्ध गोला बनाएँ।

यह नृत्य संरचना का अगला चरण है— संरचना के साथ गति।

गतिविधि 16.3 सामग्रियों के साथ नृत्य

हाथों और पैरों की गतिविधियाँ उपयोग करने के बाद, आइए अब हम इसमें अन्य वस्तुएँ भी जोड़ें, जिससे नृत्य का आनंद बढ़ जाए।

स्वयं निर्मित रंग-बिरंगी सामग्रियों का उपयोग करके नृत्य को नर्तक और दर्शकों के लिए रोचक बनाया जा सकता है। दुनियाभर में वर्षों से नृत्य में डंडियों का उपयोग किया जाता रहा है। आइए, स्वयं डंडियाँ बनाकर नृत्य करें।

आवश्यक सामग्री

- पेंसिल या छोटा पैमाना (रूलर)
- रंगीन कंस्ट्रक्शन पेपर या कार्डस्टॉक
- गोंद
- रंगीन ग्लिटर या स्केच पेन
- गोल्डन लेस/रिबन/रंगीन धागा

चरण 1— कागज की ट्यूब तैयार कीजिए

1. कागज की एक पट्टी को पेंसिल के चारों ओर कसकर लपेटें और एक ट्यूब बनाएँ। यह आपकी डंडियों का आधार होगा।
2. जब आप कागज को लपेटना समाप्त कर लें तो कागज की पट्टी के किनारे पर गोंद या टेप लगाएँ। अगले चरण पर आगे बढ़ने से पहले गोंद को पूरी तरह सूखने दीजिए।

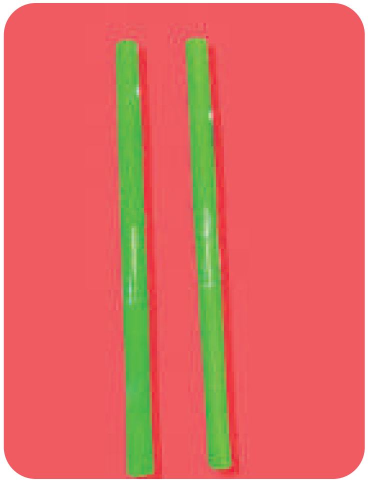

चरण 2— कागज की ट्यूबों को सजाएँ

मार्कर या क्रेयॉन की सहायता से पेपर ट्यूब पर रंग करें या कोई डिजाइन बनाइए। आप धारियाँ, पोल्का डॉट्स या कोई अन्य रोचक पैटर्न भी बना सकते हैं। चमक देने के लिए ट्यूब में ग्लिटर, स्टिकर या सितारों (सेक्विन्स) को जोड़ें। अतिरिक्त सजावट के लिए ट्यूब के चारों ओर रिबन या रंगीन धागा लपेटें। आकर्षक बनाए रखने और डंडियों को अपनी इच्छानुसार सुंदर और रंगीन बनाएँ।

आगे की गतिविधि— जिस प्रकार आपने ये डंडियाँ बनाईं और उनके साथ नृत्य किया, उसी प्रकार आप कागज और कार्डबोर्ड की सहायता से और अधिक रंगीन व आकर्षक वस्तुएँ बना सकते हैं, जैसे— पोम-पोम, रिबन, झंडे और अन्य वस्तुएँ।

गतिविधि 16.4 नृत्य में गति के तत्व

आपके द्वारा की जाने वाली गतिविधियों की अलग-अलग विशेषताएँ होती हैं। एक ही गतिविधि को अलग-अलग विधियों से किया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप उसे किस-किस तरह से उपयोग में लाते हैं।

1. प्रबल गतिविधियाँ अधिक प्रभावी होती हैं।

उदाहरण के लिए, फर्श पर जोर से पैर पटकना, एक बड़े से ड्रम को जोर-जोर से बजाना या ऊँची छलाँग लगाना।

2. सौम्य गतिविधियाँ कोमलता का अनुभव कराती हैं।

उदाहरण के लिए, जब आपके घर के बड़े सो रहे हों तो दबे पाँव चलना, धीरे से फूल उठाना, उसे सूँघना और अपने पैरों को भूमि पर फिसलाना।

क्या आप पशुओं की प्रबल और सौम्य गतिविधियों को पहचान सकते हैं?

पशुओं की गतिविधियाँ उसके चरित्र के अनुसार होती हैं। पशु परिस्थिति के अनुसार अपनी गतिविधियों में परिवर्तन कर सकते हैं। अपने दाईं ओर की तालिका में देखें, विभिन्न परिस्थितियों में उपयुक्त पशुओं की गतिविधियों को चिह्नित कीजिए।

जानवर	प्रबल	शांत
1. एक शेर हिरण का पीछा कर रहा है। 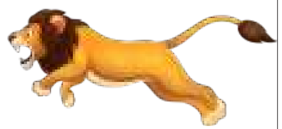		
2. एक हाथी अपने बच्चे की देखभाल कर रहा है। 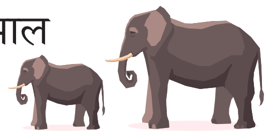		
3. एक हिरण घास चर रहा है। 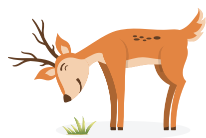		
4. एक चूहा बिल्ली से दूर भाग रहा है।		

आइए, हम प्रकृति में होने वाली संचलनों की गुणवत्ता पर ध्यान दें। हमारे आस-पास कौन-सी संचलनें प्रबल और कौन-सी कोमल हैं?

क्या आपने कभी ध्यान दिया है कि चक्रवात कैसे तीव्रता से आता है, झुकते हुए पेड़ और उड़ती धूल कैसा अनुभव देते हैं। दूसरी ओर, हल्की हवा और झूमते फूल शांति और उल्लास का भाव लाते हैं।

आग तभी तीव्र, प्रचंड और प्रबल हो सकती है, जब उसकी लपटें ऊँची उठती हैं और जोर-जोर से चटकती हैं।

जब आप दीया जलाते हैं तो उसकी लौ शांति प्रदान करती है और हमारे चारों ओर प्रकाश फैला देती है।

बिजली चमकने और बादल गरजने के समय आकाश में प्रबलता हो सकती है, वहीं सूर्योदय या सूर्यास्त के समय धरती के अनेक रंगों से भर जाने के कारण यह दृश्य सुखद लगता है।

गतिविधि 16.5 सामूहिक रचनात्मकता

दो समूह बनाएँ। दी गई पशु और प्रकृति की गतिविधियों में से कोई भी पाँच कोमल और प्रबल गतिविधियों को चुनें। समूह 1 को कोमल गतिविधियाँ करने दें और समूह 2 को प्रबल गतिविधियाँ करने दें। फिर दोनों समूहों को आपस में बदलते हैं और प्रबल एवं सौम्य विशेषताएँ प्रदर्शित करने के लिए अलग-अलग गतिविधियाँ करते हैं।

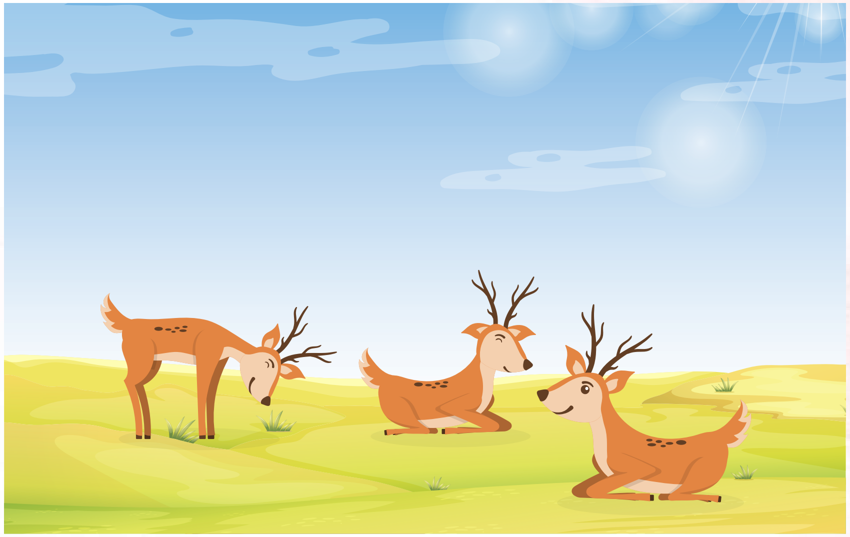

आकलन— अध्याय 16— मेरी नृत्य रचना		
दक्षताएँ— CG 3 – C-3.1, C-3.2		
सीखने के प्रतिफल	**शिक्षक**	**स्वयं**
नृत्य में उपयोग किए जाने वाले पैरों के विभिन्न भागों को समझते हैं।		
नृत्य के चरणों का अनुसरण करने में सक्षम होते हैं।		
नृत्य के चरणों और गतिविधियों की विशेषताओं को सीखने का प्रयास करते हैं।		
प्रयासों और कल्पना के साथ सामग्रियाँ तैयार करते हैं और नृत्य में इनका उपयोग करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 17

नृत्य में भाव और अभिव्यक्ति

हम जो अनुभव करते हैं, उसे व्यक्त करते हैं और इसे ही भावनाओं की अभिव्यक्ति कहते हैं। एक पूरा दिन अपने मित्रों का अवलोकन करें। आप कितने प्रकार की अभिव्यक्तिओं पर ध्यान दे सके? क्या आप उन अभिव्यक्तियों के माध्यम से उनकी भावनाओं को पहचान सके? एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है— "चेहरा आपके मन का दर्पण है।" आपके मन में जो होता है, वह आपके चेहरे पर दिखता है।

यह अध्याय आपको विभिन्न भावों और अभिव्यक्तियों को समझने और नृत्य के माध्यम से उन्हें प्रस्तुत करने में सहायता करेगा।

0438CH17

गतिविधि 17.1 भावनाएँ

हमारे जीवन में कई ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं, जो हमें अलग-अलग भावनाएँ अनुभव कराती हैं। क्या आप कुछ ऐसी भावनाओं के विषय में बता सकते हैं, जो आपने आज अनुभव की हैं?

....

....

....

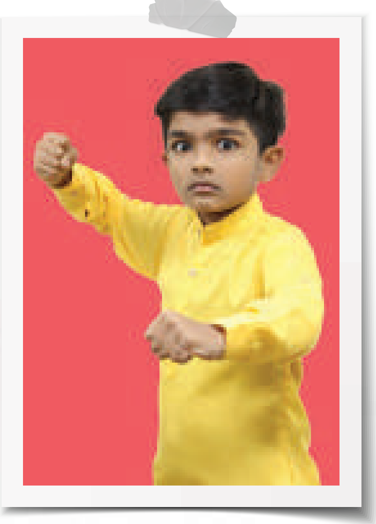

क्रोध

दुख

क्या आपको याद है कि आपके चेहरे और शरीर ने उन भावनाओं को कैसे व्यक्त किया? आइए, उन भावनाओं को इमोजी के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं।

अब इन अभिव्यक्तियों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। क्या आपको कदमों की चाल, हाथों की गति और हस्त मुद्राएँ याद हैं? अब इन्हें मिलाकर इन भावनाओं को वैसे ही प्रदर्शित करें, जैसे आप उन्हें अनुभव करते हैं।

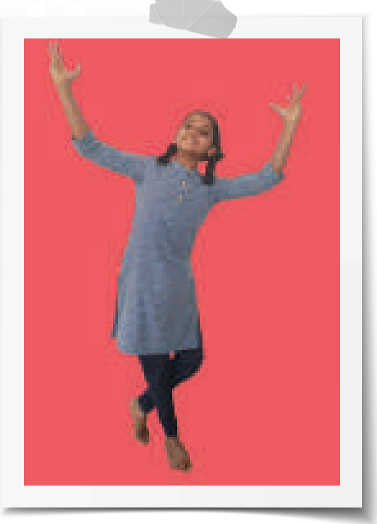

प्रसन्नता

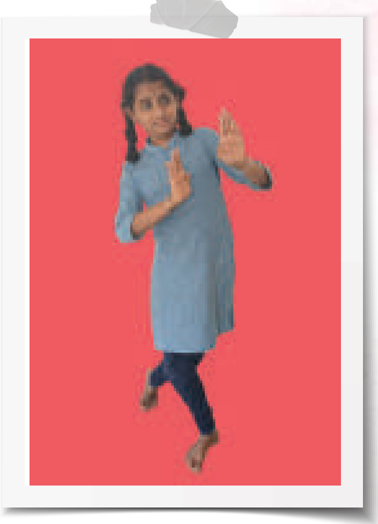

भय

परिस्थितियाँ— भावनाएँ

दी गई परिस्थितियों के लिए आपकी अभिव्यक्ति क्या होगी? दिए गए स्थान पर भाव दर्शाने वाले इमोजी बनाइए—

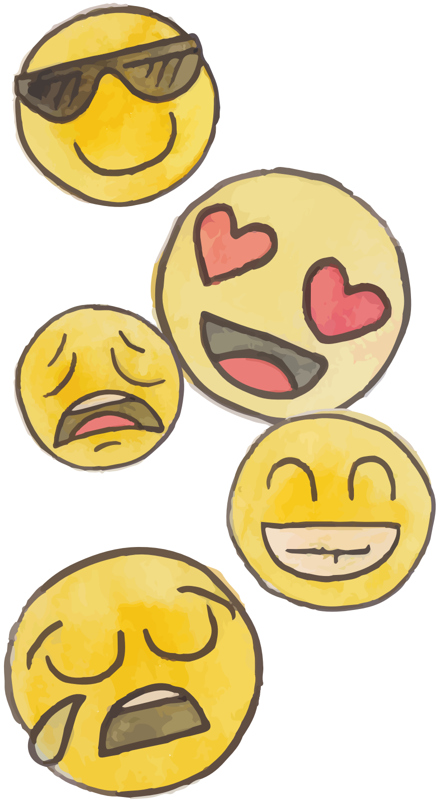

परिस्थितियाँ		भाव
• जब आपके माता-पिता आपको अचानक एक उपहार (सरप्राइज गिफ्ट) देते हैं।		
• जब कोई किसी पशु को मार रहा हो।		
• जब आप इंद्रधनुष देखते हैं।		
• जब आप गिलहरियों को एक-दूसरे के पीछे दौड़ते हुए देखते हैं।		
• जब आप बीमार होते हैं और अपने मित्रों के साथ खेल नहीं पाते।		
• जब चक्रवात आता है।		

★ गतिविधि 17.2 पशुओं की भावनाएँ

पंचतंत्र की कहानी में विभिन्न पशुओं द्वारा अनुभव की गई भावनाओं पर चर्चा कीजिए। अभिव्यक्तियों और हस्त मुद्राओं का उपयोग करके किसी भी पशु के हाव-भाव को दर्शाइए। फिर अपने मित्रों को उस भावना का अनुमान लगाने दीजिए।

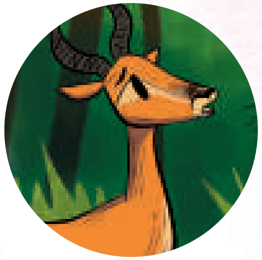

आकलन— अध्याय 17— नृत्य में भाव और अभिव्यक्ति		
दक्षताएँ— CG 2 – C-2.1, C-2.2; CG 4 – C-4.2		
सीखने के प्रतिफल	**शिक्षक**	**स्वयं**
भावनाओं और समानुभूति की समझ विकसित करते हैं।		
भावनाओं का पशुओं और प्रकृति के साथ संबंध स्थापित करते हैं।		
विभिन्न भावनाओं को आत्मविश्वास के साथ व्यक्त करते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

अध्याय 18

नृत्य मेरे आस-पास

हमारे देश के प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अनोखी संस्कृति और परंपरा है। इसके साथ ही उनका अपना विशिष्ट संगीत और नृत्य भी होता है।

राजस्थान का चिरमी नृत्य

सिक्किम का चाम नृत्य

आंध्र प्रदेश का कोम्मू कोया नृत्य

पंजाब का सम्मी नृत्य

0438CH18

गतिविधि 18.1 मेरा नृत्य और प्रकृति

हमारे देश के कई स्थानीय नृत्य प्रकृति से जुड़े हुए हैं।

उदाहरण के लिए, आपने संगीत की कक्षा में एक कन्नड़ गीत सीखा था, 'आदोना बन्नी कन्ना मुच्चाले थूगोना बन्नी उय्यले।' यह गीत पेड़ों, पक्षियों और प्रकृति का वर्णन करता है। आप प्रकृति से जुड़े कुछ अन्य गीत भी चुन सकते हैं, जैसे— रबिंद्र संगीत का 'फूले फूले धोले धोले...' जो फूलों, नदियों और पक्षियों का वर्णन करता है।

अब आप सभी नृत्य चरणों यथा सौम्य और प्रबल गति, हाथ की मुद्राओं तथा चेहरे की भाव-भंगिमाओं को मिलाकर गीत के ताल पर नृत्य करने का प्रयास करें।

शिक्षक-संकेत

संगीत कक्षा से किसी प्रकृति गीत का संदर्भ लें और उसका अर्थ समझाएँ। पिछले पृष्ठ पर दिए गए क्यूआर कोड में उपलब्ध प्रकृति गीतों का संदर्भ लें।

★ गतिविधि 18.2 अपना क्षेत्रीय नृत्य सीखना

अपनी क्षेत्रीय नृत्य शैली, पारंपरिक संगीत और अन्य कला रूपों के विषय में जानकारी प्राप्त करें। उस नृत्य शैली के साथ किस प्रकार के संगीत की संगति होती है? क्या आपको अपने क्षेत्र में स्थानीय नृत्य से संबंधित चित्र या कलाकृति दिखाई देते हैं?

अब अपने क्षेत्र के नृत्यों में किसी एक को चुनें और उसका प्रदर्शन करें।

शिक्षक-संकेत

विद्यार्थियों को किसी पारंपरिक नृत्य शैली के प्रदर्शन को देखने के लिए ले जाना, उनकी उस नृत्य शैली के विभिन्न तत्वों को समझने में सहायता करेगा। इस प्रदर्शन पर कक्षा में चर्चा की जा सकती है जिससे विद्यार्थी नृत्य प्रदर्शन के बारे में अपनी सोच और भावनाओं को साझा कर सकें।

आकलन— अध्याय 18— नृत्य मेरे आस-पास		
दक्षताएँ— CG 4 – C-4.1, C-4.2		
सीखने के प्रतिफल	**शिक्षक**	**स्वयं**
भारत के नृत्य रूपों के बारे में उत्सुकता से सीखते हैं।		
नृत्यों के बारे में सक्रियता से चर्चा करते हैं।		
नृत्य सीखने और प्रस्तुत करने के लिए उत्सुक रहते हैं।		

विद्यार्थियों की क्षमताओं पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

विकास-क्षेत्रों पर शिक्षकों की प्रतिक्रिया ....

....

कोई अन्य अवलोकन ....

....

योगात्मक आकलन

	वैयक्तिक	समूह
1.	पैरों के विभिन्न हिस्सों का उपयोग करके एक-एक चरण का प्रदर्शन करना।	संरचनाओं में पशुओं की चाल को प्रदर्शित करना।
2.	हाथ की मुद्राओं के माध्यम से किसी पशु या प्रकृति से संबंधित अपनी पसंद की एक भावना को प्रदर्शित करना।	एक समूह नृत्य करना।

टिप्पणियाँ